विक्रम संवत् 2082 ▪ ज्येष्ठ/आषाढ़ मास (04) ▪ 01 जून 2025 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

" ऑपरेशन सिंदूर "

भारत के गौरव गाथा की अमिट छाप

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे. पी. नड्डा जी ने मुख्यमंत्रियों एवं उप-मुख्यमंत्रियों की बैठक में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का स्वागत किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने युवा क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी और उनके परिवार से मुलाकात की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने रक्षा अलंकरण समारोह-2025 में भाग लिया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नागरिक अलंकरण समारोह में भाग लिया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी नीति आयोग की 10वीं गवर्निंग काउंसिल की बैठक में।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा ने सरदार वल्लभभाई पटेल जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दाहोद में प्रथम विद्युत इंजन को हरी झंडी दिखाई।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय** - संजय गोविन्द खोचे 04
- मोदी जी संस्कृति के रक्षक

» **कवर स्टोरी** - 05
- ऑपरेशन सिंदूर भारत के गौरव गाथा की अमिट छाप

05

20

- **प्रधानमंत्री मोदी जी का राष्ट्र के नाम संबोधन** 08
  » आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस भारत...
- **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 10
  » जंग न होने देंगे
- **आदमपुर एयरबेस पर पीएम** 11
  » भारत की ओर नजर उठाने का एक ही अंजाम होगा...
- **आपरेशन सिंदूर** 14
  » दुश्मनों ने देख लिया कि जब सिंदूर बारूद बन जाता...
  » भारत अब निर्णायक नेतृत्व वाला देश है- अमित शाह
- **प्रधानमंत्री मोदी जी का राष्ट्र के नाम संबोधन** 19
  » आतंकवाद के विरूद्ध नीति का उद्घोष - डॉ. यादव
- **आलेख : विष्णुदत्त शर्मा** 20
  » दुर्लभ संकल्प-शक्ति के अतुल्य नायक मोदीजी
- **तिरंगा यात्रा** 22
  » 'ऑपरेशन सिंदूर' शौर्य, पराक्रम का प्रतीक - डॉ. मोहन यादव
- **देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयंती** 23
  » अहिल्याबाई के सुशासन को अपना रही भाजपा सरकारें -विष्णुदत्त शर्मा
- **आलेख : शिव प्रकाश जी** 24
  » अहिल्याबाई ने सांस्कृतिक उत्थान किया
- **महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन** 25
  » Women Led Development विकास की धुरी
- **राजबाड़ा में म.प्र.केबिनेट बैठक** 29
  » राजबाड़ा में कैबिनेट, विरासत का सम्मान -विष्णुदत्त शर्मा
- **देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयंती** 30
  » भाजपा अहिल्याबाई के विचारों को जमीन पर उतार रही है...
- **मन की बात** 31
  » संकल्प- आतंकवाद खत्म करना है
- **बलिदान दिवस** 37
  » रानी लक्ष्मीबाई
  » रानी दुर्गावती
  » बिरसा मुंडा वनवासियों के महानायक
- **विचार प्रवाह** 40
  » समाज और विचारधारा

• मुख्य व्रत-त्यौहार

4. महेश नवमी 5. गंगा दशहरा 6. निर्जला एकादशी व्रत 8. प्रदोष व्रत 10. द. वट सावित्री, पूर्णिमा व्रत, पाक्षिक प्रतिक्रमण 11. स्नानदान पूर्णिमा 14. गणेश चतुर्थी व्रत 19. शीतलाष्टमी, बसोरा 21. योगिनी एकादशी व्रत 23. प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत 24. रोहिणी व्रत, पाक्षिक प्रतिक्रमण 25. हलहारिणी अमावस्या, स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 26. चन्द्रदर्शन, गुप्त नवरात्रारंभ 27. भ. जगदीश रथयात्रा 28. विनायकी चतुर्थी व्रत

• मुख्य जयंती-दिवस

1. अंतर्राष्ट्रीय बाल्य सुरक्षा दिवस 5. महर्षि गालव अवतरण दिवस 9. बिरसा मुण्डा शहीदी दिवस 14. विश्व रक्तदान दिवस 16. सिंधु सम्राट म. दाहरसिंह श. दि. 18. रानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस 21. अंतर्राष्ट्रीय योग एवं संगीत दिवस 26. अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस 27. मधुमेह जागृति दिवस

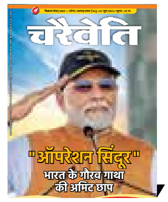

वर्ष-57, अंक : 04, भोपाल, जून 2025

हमारे प्रेरणास्रोत
पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

समृद्धि का आधार धर्म है। इस संबंध में हम पाते हैं कि हमारा आधार धर्म, अभावात्मक नहीं है। हमारे यहां अभाव का नहीं संयम का विचार किया गया है। सादा जीवन का विचार किया गया है, धन पैदा किया तो उसका उपयोग धर्मानुसार करना चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक
एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

मोदी जी संस्कृति के रक्षक

अब आतंक फैलाने वालों को, आतंक को पालने वालों को मालूम हो गया है कि आम जनता की आड़ लेने से भी कोई फायदा होने वाला नहीं है। भारत चुन-चुन कर हिसाब बराबर करना जानता है।

पहलगाम हमले के षडयंत्रकारियों को करनी का फल मिल चुका है। अब फल भी ऐसा मिला है कि फिर हिमाकत करने से पहले कई बार सोचना पड़ेगा, बात यहां खत्म नहीं होती, हमला भारत की संस्कृति पर, फिर भारत का हमले का प्रत्युत्तर, दो अलग-अलग बातें हैं।

हमला, वह भी भारत की संस्कृति पर, भारत की आत्मा पर, किसी मूर्ख, जिहादी का ही विचार हो सकता है, वो भी बिना सोचे-विचारे हमले से लाभ-हानि का बिना तुलनात्मक अध्ययन किये। अब पाप करने वाले को पाप की सजा तो मिलना ही थी, लेकिन इस घटना में एक पक्ष पाकिस्तान की वह जनता भी है, जिसका इस कायराना हमले से दूर-दूर तक कोई लेना-देना भी नहीं था पर भुगतान या भुगतना तो उनको भी पड़ेगा। यह तो मोदी जी व भारत की सेना की कृपा है जिन्होंने यात्री विमानों के दिखाई देने पर हमला बच के करना उचित समझा। केवल पूर्व निर्धारित लक्ष्यों पर सटीकता के साथ हमला किया गया। जिससे हमले के कारण आतंक के गढ़ को ढहाने के अलावा किसी अन्य संपत्ति या व्यक्ति को नुकसान नहीं हुआ। अब आतंक फैलाने वालों को, आतंक को पालने वालों को मालूम हो गया है कि आम जनता की आड़ लेने से भी कोई फायदा होने वाला नहीं है। भारत चुन-चुन कर हिसाब बराबर करना जानता है।

भारत ने, भारत की संस्कृति पर हमला, भारत की आत्मा के ऊपर हमले का उत्तर सटीकता के साथ दिया, पर्याप्त रूप से दिया, आतंकी जड़ों पर प्रहार किया, आतंक के गढ़ों को ढहा दिया,आतंक को पालने-पोसने वालों को तोड़ कर रख दिया, सिंदूर पोंछने की कीमत वसूली, विश्व के सामने आतंक का चेहरा उजागर किया, आतंक फिर सिर उठाने की हिमाकत नहीं कर पाएगा, आतंक फैलाने व आतंक पालने-पोसने वाले विश्व बिरादरी में अलग-थलग पड़ गए, आदि चर्चाएं लाजमी हैं, पर इस परिणाम को पाना आसान नहीं था। परमाणु शक्ति संपन्न देश से टकराना एक जिम्मेदार राष्ट्रनायक और जिम्मेदार राष्ट्र के लिए आसान नहीं होता, इस सफलता का विश्लेषण करने के लिए मोदी जी के पूरे 11 वर्षों के कार्यकाल का गहन अध्ययन करना पड़ेगा। प्राप्त परिणाम मिनटों की तपस्या या बैठकों का परिणाम नहीं है। यह परिणाम 11 वर्षों के तप का परिणाम है। इस परिणाम का विश्लेषण तो यह सिद्ध कर रहा है जैसे मोदी जी की तपस्या इस आपदा से निपटने के लिए 11 वर्षों से भीषण तैयारी कर रही थी, कि ऐसे संकट के आ जाने पर देश को इस दौर से कैसे निकाला जाएगा, व संकट से देश की रक्षा कैसे की जावेगी, भारत के नागरिकों, सीमाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पूर्णताः कैसे पूरा किया जावेगा, यह सब चर्चा आज इसलिए संभव हो पा रही है क्योंकि देश को पिछले 11 वर्षों से अनुभवी, दूरदर्शी, देशभक्त, साहसी, जिम्मेदार व भरोसेमंद नेतृत्व मिला हुआ है।

इस सफलता का आधार मोदी जी के विचार, तप व त्याग हैं, जिन्होंने वादा किया था देश को कभी झुकने नहीं दूंगा, भारत मां तेरे गौरव को कभी कम न होने दूंगा। अपने वचनों की लाज को रखने के लिए रात-दिन एक करके देश के सम्मान की रक्षा के लिए जी-तोड़ मेहनत से परिणाम को भारत के पक्ष में लाने की पूरी तैयारी, तैयार करके रखी थी। निश्चित रूप से भारत की जनता का सौभाग्य है कि भारत का नेतृत्व सक्षम हाथों में है, अन्यथा 11 वर्षों पूर्व का अनुभव भी जनता के सामने है। जनता के पास दोनों काल खण्डों का तुलनात्मक अध्ययन है। आज देश कितने सक्षम हाथों में है, इस बात का अनुभव इस बात से किया जा सकता है कि हमले के बाद भी देश का कोई भी नुकसान करने में दुश्मन सफल नहीं हो पाया। हमले के दौरान भी देश चलता रहा, काम-धंधा चालू रहा, शेयर मार्केट दौड़ता रहा, बैंक खुले रहे, सरकारी काम-काज निर्बाध गति से जारी रहे।

इस आपदा ने यह भी सिद्ध कर दिया कि देश का शक्तिशाली, आत्मनिर्भर व संगठित होना बहुत जरूरी है। 140 करोड़ लोगों की ताकत ही देश की वास्तविक ताकत है।

गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने मार्च 2026 तक देश को नक्सलवाद से मुक्त होने की घोषणा की है। सोचिए जो देश नक्सलवाद को वर्षों से झेल रहा था वह देश आज नक्सलवाद से मुक्ति की बात कर रहा है। कितना फर्क है, देश की उन्नति के मार्ग की बाधाएं धीरे-धीरे खत्म हो रही हैं।

देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयंती के अवसर पर भोपाल में महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन का आयोजन किया गया। भाजपा सरकारों की योजनाएं महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित रहीं हैं। देवी अहिल्याबाई के 300 वर्ष पूर्व के शासन के सिद्धांत भाजपा सरकारों की नीतियों के केंद्र में है। देवी अहिल्याबाई ने महिला सशक्तिकरण के भरसक प्रयास किये।

भाजपा सरकार ने मुद्रा योजना के माध्यम से 35 लाख करोड़ रुपए के 52 करोड़ गारंटी मुक्त ऋण में 75 प्रतिशत हिस्सेदारी महिलाओं के पास है। 30 करोड़ महिलाएं जिनका किसी बैंक में खाता भी नहीं था उनका बैंक में खाता खोला गया। भाजपा सरकारों के प्रयासों से नीति निर्माण में बेटियों की भागीदारी बढ़ रही है। आज महिलाऐं सेवा में महत्वपूर्ण पदों पर हैं। महिलाऐं डॉक्टर, इंजीनियर, पायलट बन रही हैं। चंद्रयान-3 मिशन में तो 100 से अधिक महिला वैज्ञानिक और इंजीनियर शामिल थीं।

देवी अहिल्याबाई ने अपने शासन के दौरान विकास और विरासत को साथ-साथ महत्व दिया। भारत भी आज विकास और विरासत को साथ-साथ महत्व दे रहा है। देवी अहिल्याबाई ने सत्ता को सेवा का माध्यम बनाया, जनकल्याण और विरासत को सहजने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मध्य प्रदेश सरकार ने राजवाड़ा में कैबिनेट बैठक में जनकल्याण के मुद्दों को आगे रखकर सरकार ने निर्णय लिए।

देवी अहिल्याबाई के दिखाए मार्ग पर चलते हुए मध्य प्रदेश सरकार ने ओंकारेश्वर में अद्वैत लोक की स्थापना हेतु 2200 करोड़ रुपए की स्वीकृति प्रदान की। मध्य प्रदेश सरकार ने राहवीर योजना की स्वीकृति प्रदान कर संवेदनशीलता का उदाहरण प्रस्तुत किया है। निश्चित रूप से मध्य प्रदेश सरकार का यह निर्णय स्वागत योग्य है। ■

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

"ऑपरेशन सिंदूर"
भारत के गौरव गाथा की अमिट छाप

विष्णुदत्त शर्मा

22 अप्रैल 2025, 26 निहत्थे पर्यटकों की, पहलगाम में धर्म के आधार पर, परिवारों के सामने, नजदीक से गोली मारकर, बेकसूर नागरिकों की निर्दयतापूर्ण, क्रूर हत्या..26 माताओं, बहनों, बेटियों के माथे से सिंदूर निर्दयता से पोंछ दिया गया।

क्या, केवल 26 परिवारों की खुशी मातम में बदल गई?

नहीं, बिल्कुल नहीं,

क्या, केवल 140 करोड़ भारतीयों की खुशी मातम में बदल गई?

यह विश्लेषण भी कमजोर है,

वास्तव में पूरे विश्व के सभ्य समाज और सनातन संस्कृति को मानने वाले हर एक परिवार की खुशी मातम में बदल गई। दुनिया स्तब्ध रह गई। माँ सरस्वती के भक्तों के पास भी पीड़ा व्यक्त करने के लिए शब्दों का अकाल पड़ गया।

26 निहत्थे पर्यटकों की हत्या कर आतंकवाद ने सनातन संस्कृति को मानने वाले, शांत, कानून के शासन को मानने वाले, 'वसुधैव कुटुंबकम' का पालन करने वाले समाज में दहशत फैला कर, माताओं, बहनों, बेटियों के सुहाग को उजाड़ कर, भारत के 140 करोड़ नागरिकों को और पूरे विश्व के सभ्य समाज को खुली चुनौती पेश की, और आतंकवाद को उम्मीद थी कि सनातन संस्कृति को मानने वाले भारत का सभ्य, अहिंसक, भगवान पर भरोसा रखने वाला समाज, विविधताओं से भरे 140 करोड़ देशवासी, बर्बरता पूर्ण हत्याओं की घटना से डर कर आतंकवाद के सामने घुटने टेक देंगे? और रही बची कसर 250-250 ग्राम के एटम बम की धौंस पूरी कर देगी? घटना के फलस्वरुप सभ्य समाज का मनोबल टूट जाएगा? धर्म के आधार पर नृशंस हत्याओं के फलस्वरूप मोदी सरकार से जनता का भरोसा टूट जावेगा? निवेशक पीछे हटेगा? निवेश प्रभावित होगा? विशेष रूप से जम्मू कश्मीर में निवेश लड़खड़ा जावेगा ? मोदी जी की ग्यारह साल की मेहनत पर एक झटके में पानी फिर जावेगा? निवेश रुकने के साथ-साथ बेरोजगारी फैलने पर युवाओं को चन्द पैसों का लालच देकर देश विरोधी गतिविधियों के लिए भड़काना आसान होगा? सेना व सरकार के खिलाफ युवाओं से विद्रोह करवाना आसान होगा? जम्मू कश्मीर के विकास को आतंक व अलगाव के जहर से रोकना संभव हो पावेगा? शायद यही कल्पना लेकर दहशत फैलाने का प्रयास किया गया। षड्यंत्र बहुत गहरा था।

साजिश देश के विरुद्ध थी, साजिश देश की अस्मिता के खिलाफ थी। माताओं, बहनों, बेटियों को जो देश, जो समाज, देवी माँ के रूप में पूजता है। जिस देश की संस्कृति में मातृशक्ति के रूप मे माताओं, बहनों, बेटियों का स्थान हो, निश्चित रूप से उस देश में ऐसा हत्याकांड, देश की संस्कृति और देश की अस्मिता पर धोखे से किया गया कायराना हमला था। जिसे देश, सभ्य समाज, कतई बर्दाश्त या सहन कर ही नहीं सकता।

पूर्व के भी आतंकवादी हमलों पर नजर डालें तो पाकिस्तान सरकार द्वारा पोषित

माताओं, बहनों, बेटियों को जो देश, जो समाज, देवी माँ के रूप में पूजता है।

जिस देश की संस्कृति में मातृशक्ति के रूप मे माताओं, बहनों, बेटियों का स्थान हो, निश्चित रूप से उस देश में ऐसा हत्याकांड, देश की संस्कृति और देश की अस्मिता पर धोखे से किया गया कायराना हमला था। जिसे देश, सभ्य समाज, कतई बर्दाश्त या सहन कर ही नहीं सकता।

एवं संरक्षित आतंकवादी हमलों के लिए सरकार+सेना+आतंकवादी संगठन का गठजोड़ पाकिस्तान के लिए कार्य करता रहा है। इस गठजोड़ का उद्देश्य आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देकर भारतीय सेनाओं को, आम जनता को निशाना बनाकर भारत को परेशान करना रहा है। भारत व विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर के विकास में बाधा पहुंचाना रहा है। भारत के सांप्रदायिक सद्भाव को नष्ट करना रहा है।

भारत में अशांति फैलाने की बार-बार कोशिश जारी रही है, पर आतंकवादी गठजोड़ की रणनीति अब पस्त हो रही है।

2014 में श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की पूर्ण बहुमत की सरकार के गठन के बाद से देश में राजनीतिक स्थिरता बनी रही, श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार का उद्देश्य किसी तरह सरकार को चलाए रखना या 5 वर्षीय कार्यकाल को किसी तरह पूरा करने से बिल्कुल ही विपरीत दिशा में रहा।

देश के 140 करोड़ नागरिकों का भरोसा, आशीर्वाद व स्नेह के फलस्वरूप पिछले ग्यारह वर्षों से चली आ रही राजनैतिक स्थिरता व मजबूत सरकार का बहुत बड़ा फायदा देश को यह भी हुआ कि श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व की सरकार का उद्देश्य देश के बारे में सोचना, देश के लिए कुछ नया करना, परिणामों की श्रेष्ठता के लिए सघन प्रयास करना, 60 वर्षों के अभावों को कम करना, सीमाओं को सुरक्षित करना, सेना के मनोबल को ऊंचा करना, सैन्य साजो सामान के लिए विदेशी निर्भरता कम करना, पूर्व सैनिकों की वर्षों से चली आ रही मांगों का न्यायोचित निराकरण करना, सेना का आधुनिकीकरण करना, नभ-जल-थल में भारत की सुरक्षा का अभेद किला बनाना, सैन्य आवश्यकताओं को धन उपलब्ध कराना, तीनों सेनाओं का सामंजस्य मजबूत करना, सेना को ऊर्जावान, जोशीले, प्रशिक्षित युवा शक्ति उपलब्ध कराना, महिला शक्ति को सेना में शामिल करना, सेना के प्रशिक्षित अग्निवीरों का देश भर के संगठनों में स्थान सुरक्षित कर देश को मजबूत, प्रशिक्षित सैन्य आधार प्रदान करना, इसी कड़ी में सैनिक स्कूलों में बेटियों को प्रवेश की अनुमति प्रदान करना सरकार का काफी दूरदर्शिता पूर्ण, विवेकपूर्ण निर्णय रहा है।

जनसंघ व भारतीय जनता पार्टी की नीतियों-रीतियों व सिद्धांतों के आधार पर सरकार चला कर जनता को पूर्व व वर्तमान सरकारों की सोच, विचारों, लक्ष्यों व परिणामों में फर्क स्थापित कर बेहतर एवं मजबूत विकल्प का मार्ग प्रशस्त करना आसान हुआ।

प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व का देश को बहुत लाभ हुआ है। इस लाभ को शब्दों में व्यक्त करना, महसूस करना, या अनुभव करना सम्भव ही नहीं है। क्योंकि पिछले ग्यारह वर्षों के कार्यकाल में देश ने प्रगति व विकास के नए स्पीड व स्केल पर काम किया है, नए आयाम स्थापित किए हैं। आपदा भी आईं पर भारत न रुका, न थका, न हारा, अपितु नित्य नए जोश के साथ उत्तरोत्तर प्रगति करता चला गया। आपदा से भारत डरा या हारा नहीं, आपदा का डटकर, मजबूती के साथ सामना किया।

प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी बहुत अनुभवी व दूरदर्शी नेता हैं। मोदी जी बहुत अच्छे से जानते हैं कि भारत के आर्थिक प्रगति के प्रयास तभी सफल होंगे जब भारत शक्तिशाली होगा, '**भारत शक्तिशाली होगा**' यह बहुत गंभीर तथा विस्तृत वाक्य है, इसे केवल तीन शब्दों में सीमित नहीं किया जा सकता, नभ-जल-थल में भारत को सुरक्षा चक्र का अभेद किला चाहिए, घरों में बैठी देश की आधी आबादी की देश के नवनिर्माण में भागीदारी चाहिए, इंफ्रास्ट्रक्चर का आधुनिकीकरण चाहिए, देश को ऊर्जा, अनाज, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, यातायात के संसाधनों में आत्मनिर्भर बनाना है, 140 करोड़ लोगों को जाति-धर्म-भाषा-राज्य जैसे छोटे-छोटे दायरों से बाहर निकालकर सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास-सबका प्रयास के मंत्र से मजबूती से एकीकरण करना है, दिल्ली से चलने वाला 1 रुपया हितग्राही के खाते में 1 रुपया पहुंचा कर सरकार, संसाधनों में ठोस विश्वास पैदा करना है, पारदर्शी शासन व पूर्णतः भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था, जिस पर अनन्य विरोधी भी प्रश्न न उठा पाये, सरकार 140 करोड़ भारतीयों की है, किसी व्यक्ति, वर्ग, समाज विशेष की नहीं। भारतीयों को भारत माता के सपूतों की सरकार होने का एहसास करवाना है, देश के निर्माण में हर युवा की हिस्सेदारी सुनिश्चित करना है, चाहे रोजगार मेले लगाकर स्थाई नौकरी के नियुक्ति पत्र देना हो, देसी-विदेशी निवेश को आकर्षित कर रोजगार-स्वरोजगार उपलब्ध कराना हो, मुद्रा योजना चला कर 33 लाख करोड़ रुपए का गारंटी मुक्त 52 करोड़ ऋण उपलब्ध कराकर स्वरोजगार-रोजगार को सुनिश्चित करना हो, गुलामी, दासता के अवशेषों को हटाकर नए स्वतंत्र भारत का जोश भरना हो, स्वतंत्र भारत का जोश हो, संस्कृति तथा विरासत के संरक्षण के साथ-साथ विकास हो सकता है सिद्ध करना हो, मातृशक्ति के सम्मान को सर्वोपरि रखकर देश को गति देना हो, नीति-निर्णय में मातृशक्ति की हिस्सेदारी हो, लोकतंत्र की जड़ें गहरी कर, लोकतंत्र में आमजन की आस्था, विश्वास को मजबूत करना हो। व्यापार को अनावश्यक कानून, करों के माकड़ जाल से बाहर निकाल कर सुगमता प्रदान करनी हो, तकनीक का उपयोग कर करों की चोरी रोकनी हो, व टैक्स पेयर के टैक्स के पैसों के एक-एक पैसे को सुरक्षा प्रदान करना हो, हर नागरिक के लिए समान अधिकार सुरक्षित करना हो, उपचार की सुविधा हर नागरिक को हो, बिजली की उपलब्धता हर नागरिक को हो, हर घर पेयजल हो, हर घर शौचालय हो, हर गरीब को प्रतिमाह फ्री अनाज हो, हर गरीब के पास पक्की छत हो, विदेश नीति में बदलाव कर पूरे विश्व के साथ भारत के संबंधों में गर्माहट व जोश लाकर भारतीयों का मस्तक तो गर्व से ऊंचा किया ही, भारत को विश्व नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ाना है, इस तरह जितनी भी दिशाएं, डाइमेंशन हो सकती हैं, हर दिशा, हर डाइमेंशन पर ध्यान देकर हर दिशा, हर डाइमेंशन को मजबूत करके, समग्र भारत को मजबूत करके, नभ-जल-थल में मजबूत भारत, शक्तिशाली भारत बनाने का ठोस प्रयास किया गया।

सभी दिशाओं में मजबूत भारत ही-शक्तिशाली भारत हो सकता है, 140 करोड़ देशवासियों की मजबूती से ही भारत-शक्तिशाली भारत हो सकता है, सामर्थ्यवान भारत ही-शक्तिशाली भारत हो सकता है, आत्मनिर्भर भारत ही-शक्तिशाली भारत हो सकता है।

शक्तिशाली भारत ही-आधुनिक भारत हो सकता है, शक्तिशाली भारत ही-आपदाओं का निराकरण कर सकता है, शक्तिशाली भारत ही-आपदाओं को अवसर में बदल सकता है, शक्तिशाली भारत ही-आतंकवादियों को समूल नष्ट कर सकता है, शक्तिशाली भारत ही-सुरक्षित भारत हो सकता है, शक्तिशाली भारत ही-प्रगति की राह पर आगे बढ़ सकता है। शक्तिशाली भारत ही- 'वसुधैव कुटुम्बकम' का पालन कर सकता है। शक्तिशाली भारत ही-विश्व को सरकारों द्वारा प्रायोजित आतंकवाद की चुनौतियों से निपटने में निर्णायक सिद्ध हो सकता है। प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी सदैव मानते हैं, भारत की प्रगति विश्व के कल्याण के लिए है।

आतंकवादियों के गठजोड़ का दुस्साहस का प्रयास कोई नया नहीं है, पाकिस्तान के गठन के साथ ही भारत को पाकिस्तान द्वारा पोषित एवं प्रायोजित आतंकवाद, दहशतगर्दी व जेहाद को झेलना पड़ा है।

पकिस्तान ने अपनी आम जनता को स्वतंत्र देश के रूप में दिया ही क्या है - न पीने का पानी, न शिक्षा, न स्वास्थ्य, न लोकतंत्र, न कपड़ा, न रोटी, न मकान, न रोजगार, न विश्व में कहीं सम्मान, न महिलाओं का सम्मान, केवल और केवल आतंकवाद, दहशतगर्द व जेहाद झेलने की

मजबूरी। पाकिस्तान सरकार+सेना+आतंकवादी संगठन ने पकिस्तान की जनता का कुछ भी हित नहीं किया, आने वाली पीढ़ियों व वर्तमान पीढ़ी को केवल नरक की जिन्दगी जीने को मजबूर कर दिया है। पाकिस्तान सरकार+सेना+आतंकवादी संगठन के गठजोड़ की वारदातें, इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं।

इस बार पाकिस्तान सरकार + सेना + आतंकवादी संगठन के गठजोड़ ने भारत में आतंकवादी हरकत करने के पहले अपना होमवर्क ठीक से नहीं किया, उन्होंने भारत की प्रतिक्रिया का आंकलन बहुत ही कम करके आंका, या 2025 के भारत को 2014 से पहले का भारत मानने की गलती कर दी। पाकिस्तान भारत की सेना के शौर्य को समझ ही नहीं पाया। 2025 के भारत की क्षमताओं को कम करके आंका। मौन शिव की तपस्या भंग करने का परिणाम भस्म होना होता है, मालूम ही न था? शांत युवा शेर को परेशान करने का परिणाम क्या होता है, मालूम ही न था? और अगर सारी परिस्थितियों का आकलन था, फिर भी हरकत की, तो मिले परिणाम का ही पाकिस्तान हकदार है। इतना सब भुगतने के बाद भी अगर पाकिस्तान को सद्बुद्धी आ जावे, तो भविष्य की पीढ़ियों की किस्मत में सुधार आ जावेगा, अन्यथा पूरे विश्व को आतंकवाद से सचेत हो कर, आतंकवाद का सामना करने के लिए, आतंकवाद पर करारा प्रहार करने के लिए सदैव तत्पर रहना पड़ेगा। और हर बार आतंकियों व आतंक के प्रायोजकों पर भारत के प्रहार की भीषणता बढ़ती ही जाना है। जिसका खामियाजा पाकिस्तान की आम जनता को भी झेलना होगा। पाकिस्तान की रही-बची अर्थव्यवस्था भी डूबती ही चली जावेगी। बेरोजगारी, भीख माँग कर खाने वाले देश में, कुपोषण और अपराध सामान्य घटना हो जावेगी।

वो दिन अब दूर नहीं है, जब पाकिस्तान की जनता अपने पूर्वजों के किये पर पछताते हुए बोलेगी, कि किस घड़ी में भारत जैसे महान देश को छोड़ कर, इस आतंकवादी देश में आ गये। और हमको झेलने के लिए मजबूर कर गये।

आज भारत कितनी प्रगति कर चुका, और हम पाकिस्तान में बम, धमाकों के बीच, बेइज्जती के साथ कुछ हाथों की कठपुतली बन कर जीने को मजबूर हैं। एक तरफ भारत में शांति है, स्थिरता है, विकसित भारत@2047 का लक्ष्य है, विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था है। भारत में बच्चों के पास सपने हैं, शिक्षा है, उन्नत भविष्य है, पूरे विश्व में आदर है, सम्मान है, निवेशक लाईन लगाकर भारत के दरवाजे पर खड़े हैं, निवेशक भारत के प्रधान मंत्री से मुलाकात के लिए समय मिलने की प्रतीक्षा में इंतजार कर रहे हैं। पाकिस्तान में केवल जेहाद है, दहशतगर्द हैं और आतंकवादी है, और आतंकवाद का पोषण करने वाले पाकिस्तान में बच्चों का भविष्य केवल भुखमरी, अकाल, बेरोजगारी व बम, गोली का सामना करने के लिए छाती सामने करने की विवशता है ।

शांति के टापू की गंभीरता का आंकलन पाकिस्तान के बस की बात ही नहीं, पाकिस्तान सरकार+सेना+आतंकवादी संगठन के गठजोड़, भारत की माताओं, बहनों, बेटियों के सिंदूर की कीमत 140 करोड़ भारतीयों के लिए क्या होती है? प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी के लिए क्या होती है? भारतीय जनता पार्टी के लिए क्या होती है? भारतीय सेना के लिए क्या होती है? का आंकलन नहीं कर पाया। पाकिस्तान- मोदी जी, भाजपा सरकार, भारतीय सेना के लिए, भारत के नागरिकों के लिए मातृशक्ति के सम्मान की गहराई का आंकलन ही नहीं कर पाया।

मोदी जी ने पाकिस्तान सरकार + सेना + आतंकवादी संगठन के गठजोड़ + पाकिस्तान की जनता को, 140 करोड़ भारतीयों के लिए सिंदूर की क्या कीमत होती है? भारत की अस्मिता पर हमला करने का क्या जवाब होता है? इसका पर्याप्त रूप से ज्ञान करवा दिया है, भली-भाँति ज्ञान हो गया है, ज्ञान मिल गया है, अहसास भी हो ही गया है, नीचतापूर्ण हरकत का परिणाम- पानी बंद, आवागमन बंद, व्यापार बंद, लॉन्चिंग पैड तबाह, एयरबेस तबाह, आतंकवादी तबाह, हथियार तबाह, आतंकवादियों को पालने वाले तबाह, भारत के साथ बातचीत के सभी दरवाजे बंद, और भारत का भी स्पष्ट रुख-बातचीत होगी तो केवल और केवल आतंकवाद और पीओके पर।

विश्व भर में भिखारी की तरह रहम की भीख मांगने के लिए दर-दर पर घुटने टेकना पड़ गया, विश्व बिरादरी में सरेआम बेज्जती झेलने के लिए मजबूरी के साथ-साथ पाकिस्तान की जनता में मोदी जी के लिए बढ़ता भरोसा व विश्वास कि भारत के प्रधानमंत्री ने इतनी बड़ी जंग के बावजूद पाकिस्तान की भी एक भी माता, बहन, बेटी को किसी बेकसूर नागरिक की युद्ध में मौत पर रोने के लिए मजबूर नहीं किया। पाकिस्तान के यात्री वायुयानों की भी चिंता मोदी जी ने की, जबकि यात्री विमानों को भी पाकिस्तान ने दाँव पर लगा दिया था, अपने नागरिकों की सुरक्षा की चिन्ता स्वँय पाकिस्तान ने नहीं की, युद्ध की भीषण घड़ी में भी मोदी जी व भारतीय सेना ने धैर्य, संयम व एकाग्रता की अद्भुत मिसाल पेश की है, जिसकी जितनी भी तारीफ की जाए वह कम है।

मोदी जी व भारतीय सेना के धैर्य, संयम व एकाग्रता ने विश्व को दिखा दिया कि भारत ने केवल अपनी रक्षा के लिए हथियार उठाये थे, भारत के प्रतिकार का उद्देश्य व लक्ष्य केवल आतंकवादी व आतंकवादी संगठनों को नष्ट कर विश्व को आतंक से मुक्त करवाना है।

पाकिस्तान सरकार, पाकिस्तान की सेना व आतंकवादियों के गठजोड़ को पूरे विश्व में जो अपमान का घाव झेलना पड़ रहा है उससे भी कई गुना ज्यादा पाकिस्तान की जनता व विश्व की नजरों में असहाय, हारे हुए, गीदड़ भभकी देने वाले देश का घाव झेलना पड़ा है, पिट के वापस आने का घाव झेलना पड़ा है, इस घाव की पीड़ा कितनी गहरी है कि इस बात का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि भीषण हार के बाद विजय जुलूस निकाल कर दिखाना पड़ रहा है, मोदी जी ने कितनी-कितनी जगह कितना-कितना मारा यह भी बता पाने का साहस भी बाकी नहीं बचा है। पाकिस्तान सरकार, पाकिस्तान की सेना व आतंकवादियों के गठजोड़ को मालूम है कि पाकिस्तान व विश्व की जनता भी सब समझ चुकी है। जनता भी सब जानती है। युद्ध में कितनी पिटाई हुई है। पर मजबूरी है, दर्द भी बयान नहीं कर सकते।

दूसरी तरफ भारत है, जिसने पूरी दुनिया को दिखा दिया कि भारत की माताओं, बहनों, बेटियों के सिंदूर की भारत में क्या कीमत होती है। भारत की अस्मिता पर हमला करने का क्या जवाब होता है। संस्कृति और विरासत के संरक्षण के साथ-साथ विकास के मार्ग को चुनने वाले भारत को आतंकवाद का मुकाबला मजबूती से करना आता है। और भविष्य में भी भारत किसी भी आतंकवादी दुस्साहस का जबाव पूरी मजबूती के साथ देगा।

माताओं, बहनों, बेटियों के सिंदूर का बदला भारत ने मजबूती के साथ लिया। भारत ने दिखा दिया कि माताओं, बहनों, बेटियों के सिंदूर की रक्षा के लिए 140 करोड़ नागरिकों का देश एक है, और शायद भारत की सबसे मजबूत ताकत भी यही है, मोदी जी के निर्णय के पीछे 140 करोड़ भारतीयों की एकजुटता की ताकत निर्णय को निर्णायक बनाने में आधार बनी, 140 करोड़ भारतीयों का मोदी जी व भारतीय जनता पार्टी पर अटूट विश्वास और गहरा हो गया और 140 करोड़ भारतीयों का भरोसा भारत का नया इतिहास लिखेगा। यह भरोसा, यह जोश भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता तो सिद्ध करता ही है साथ ही साथ आने वाले कल को भारत का बनाने से कोई भी ताकत नहीं रोक सकती। ऑपरेशन सिंदूर ने भारत के गौरव गाथा की अमिट छाप छोड़ी है। ▪

(लेखक- भाजपा मध्य प्रदेश के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से सांसद हैं।)

आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस भारत का शक्तिशाली होना बहुत जरूरी

- हर आतंकी, आतंक का हर संगठन जान चुका है कि हमारी बहनों-बेटियों के माथे से सिंदूर हटाने का अंजाम क्या होता है।
- ऑपरेशन सिंदूर न्याय की अखंड प्रतिज्ञा है।
- आतंकियों ने हमारी बहनों का सिंदूर उजाड़ा था, इसलिए भारत ने आतंक के मुख्यालय को ही उजाड़ दिया।
- पाकिस्तान की तैयारी सीमा पर वार की थी, लेकिन भारत ने पाकिस्तान के सीने पर वार कर दिया।
- ऑपरेशन सिंदूर ने आतंक के खिलाफ लड़ाई में एक नई लकीर खींच दी है, एक नया पैमाना, न्यू नॉर्मल तय कर दिया है।
- निश्चित तौर पर यह युग युद्ध का नहीं है, लेकिन यह युग आतंकवाद का भी नहीं है।
- आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस एक बेहतर दुनिया की गारंटी है।
- टेरर और टॉक, एक साथ नहीं हो सकते, टेरर और ट्रेड, एक साथ नहीं चल सकते, पानी और खून भी एक साथ नहीं बह सकता।
- पाकिस्तान के साथ बात होगी, तो टेररिज्म पर होगी, पाकिस्तान से बात होगी, तो पीओके पर होगी।

हमारे वीर सैनिकों ने ऑपरेशन सिंदूर के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए असीम शौर्य का प्रदर्शन किया।

मैं उनकी वीरता को, उनके साहस को, उनके पराक्रम को, आज समर्पित करता हूं- हमारे देश की हर माता को, देश की हर बहन को, और देश की हर बेटी को, ये पराक्रम समर्पित करता हूं।

हम सभी ने बीते दिनों में देश का सामर्थ्य और उसका संयम दोनों देखा है। मैं सबसे पहले भारत की पराक्रमी सेनाओं को, सशस्त्र बलों को, हमारी खुफिया एजेंसियों को, हमारे वैज्ञानिकों को, हर भारतवासी की तरफ से सैल्यूट करता हूं। हमारे वीर सैनिकों ने ऑपरेशन सिंदूर के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए असीम शौर्य का प्रदर्शन किया। मैं उनकी वीरता को, उनके साहस को, उनके पराक्रम को, आज समर्पित करता हूं- हमारे देश की हर माता को, देश की हर बहन को, और देश की हर बेटी को, ये पराक्रम समर्पित करता हूं।

22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकवादियों ने जो बर्बरता दिखाई थी, उसने देश और दुनिया को झकझोर दिया था। छुट्टियां मना रहे निर्दोष-मासूम नागरिकों को धर्म पूछकर, उनके परिवार के सामने, उनके बच्चों के सामने, बेरहमी से मार डालना, ये आतंक का बहुत वीभत्स चेहरा था, क्रूरता थी। ये देश के सदभाव को तोड़ने की घिनौनी कोशिश भी थी। मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से ये पीड़ा बहुत बड़ी थी। इस आतंकी हमले के बाद सारा राष्ट्र, हर नागरिक, हर समाज, हर वर्ग, हर राजनीतिक दल, एक स्वर में, आतंक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के लिए उठ खड़ा हुआ। हमने आतंकवादियों को मिट्टी में मिलाने के लिए भारत की सेनाओं को पूरी छूट दे दी। और आज हर आतंकी, आतंक का हर संगठन जान चुका है कि हमारी बहनों-बेटियों के माथे से सिंदूर हटाने का अंजाम क्या होता है।

'ऑपरेशन सिंदूर' ये सिर्फ नाम नहीं है, ये देश के कोटि-कोटि लोगों की भावनाओं का प्रतिबिंब है। 'ऑपरेशन सिंदूर' न्याय की अखंड प्रतिज्ञा है। 6 मई की देर रात, 7 मई की सुबह, पूरी दुनिया ने इस प्रतिज्ञा को परिणाम में बदलते देखा है। भारत की सेनाओं ने पाकिस्तान में

आतंक के ठिकानों पर, उनके ट्रेनिंग सेंटर्स पर सटीक प्रहार किया। आतंकियों ने सपने में भी नहीं सोचा था कि भारत इतना बड़ा फैसला ले सकता है। लेकिन जब देश एकजुट होता है, Nation First की भावना से भरा होता है, राष्ट्र सर्वोपरि होता है, तो फौलादी फैसले लिए जाते हैं, परिणाम लाकर दिखाए जाते हैं।

जब पाकिस्तान में आतंक के अड्डों पर भारत की मिसाइलों ने हमला बोला, भारत के ड्रोन्स ने हमला बोला, तो आतंकी संगठनों की इमारतें ही नहीं, बल्कि उनका हौसला भी थर्रा गया। बहावलपुर और मुरीदके जैसे आतंकी ठिकाने, एक प्रकार से ग्लोबल टैररिज्म की यूनिवर्सटीज रही हैं। दुनिया में कहीं पर भी जो बड़े आतंकी हमले हुए हैं, चाहे नाइन इलेवन हो, चाहे लंदन ट्यूब बॉम्बिंग्स हो, या फिर भारत में दशकों में जो बड़े-बड़े आतंकी हमले हुए हैं, उनके तार कहीं ना कहीं आतंक के इन्हीं ठिकानों से जुड़ते रहे हैं। आतंकियों ने हमारी बहनों का सिंदूर उजाड़ा था, इसलिए भारत ने आतंक के ये हेडक्वाटर्स उजाड़ दिए। भारत के इन हमलों में 100 से अधिक खूंखार आतंकवादियों को मौत के घाट उतारा गया है। आतंक के बहुत सारे आका, बीते ढाई-तीन दशकों से खुलेआम पाकिस्तान में घूम रहे थे, जो भारत के खिलाफ साजिशें करते थे, उन्हें भारत ने एक झटके में खत्म कर दिया।

भारत की इस कार्यवाही से पाकिस्तान घोर निराशा में घिर गया था, हताशा में घिर गया था, बौखला गया था, और इसी बौखलाहट में उसने एक और दुस्साहस किया। आतंक पर भारत की कार्रवाई का साथ देने के बजाय पाकिस्तान ने भारत पर ही हमला करना शुरू कर दिया। पाकिस्तान ने हमारे स्कूलों-कॉलेजों को, गुरुद्वारों को, मंदिरों को, सामान्य नागरिकों के घरों को निशाना बनाया, पाकिस्तान ने हमारे सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया, लेकिन इसमें भी पाकिस्तान खुद बेनकाब हो गया।

दुनिया ने देखा कि कैसे पाकिस्तान के ड्रोन्स और पाकिस्तान की मिसाइलें, भारत के सामने तिनके की तरह बिखर गईं। भारत के सशक्त एयर डिफेंस सिस्टम ने, उन्हें आसमान में ही नष्ट कर दिया। पाकिस्तान की तैयारी सीमा पर वार की थी, लेकिन भारत ने पाकिस्तान के सीने पर वार कर दिया। भारत के ड्रोन्स, भारत की मिसाइलों ने सटीकता के साथ हमला किया। पाकिस्तानी वायुसेना के उन एयरबेस को नुकसान पहुंचाया, जिस पर पाकिस्तान को बहुत घमंड था। भारत ने पहले तीन दिनों में ही पाकिस्तान को इतना तबाह कर दिया, जिसका उसे अंदाजा भी नहीं था।

इसलिए, भारत की आक्रामक कार्यवाही के बाद, पाकिस्तान बचने के रास्ते खोजने लगा। पाकिस्तान, दुनिया भर में तनाव कम करने की गुहार लगा रहा था। और बुरी तरह पिटने के बाद इसी मजबूरी में 10 मई की दोपहर को पाकिस्तानी सेना ने हमारे DGMO को संपर्क किया। तब तक हम आतंकवाद के इंफ्रास्ट्रक्चर को बड़े पैमाने पर तबाह कर चुके थे, आतंकियों को मौत के घाट उतार दिया गया था, पाकिस्तान के सीने में बसाए गए आतंक के अड्डों को हमने खंडहर बना दिया था, इसलिए, जब पाकिस्तान की तरफ से गुहार लगाई गई, पाकिस्तान की तरफ से जब ये कहा गया, कि उसकी ओर से आगे कोई आतंकी गतिविधि और सैन्य दुस्साहस नहीं दिखाया जाएगा। तो भारत ने भी उस पर विचार किया। और मैं फिर दोहरा रहा हूं, हमने पाकिस्तान के आतंकी और सैन्य ठिकानों पर अपनी जवाबी कार्यवाही को अभी सिर्फ स्थगित किया है। आने वाले दिनों में, हम पाकिस्तान के हर कदम को इस कसौटी पर मापेंगे, कि वो क्या रवैया अपनाता है।

भारत की तीनों सेनाएं, हमारी एयरफोर्स, हमारी आर्मी, और हमारी नेवी, हमारी बॉर्डर सेक्योरिटी फोर्स- BSF, भारत के अर्धसैनिक बल, लगातार अलर्ट पर हैं। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के बाद, अब ऑपरेशन सिंदूर आतंक के खिलाफ भारत की नीति है। ऑपरेशन सिंदूर ने आतंक के खिलाफ लड़ाई में एक नई लकीर खींच दी है, एक नया पैमाना, न्यू नॉर्मल तय कर दिया है।

पहला– भारत पर आतंकी हमला हुआ तो मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। हम अपने तरीके से, अपनी शर्तों पर जवाब देकर रहेंगे। हर उस जगह जाकर कठोर कार्यवाही करेंगे, जहां से आतंक की जड़ें निकलती हैं।

दूसरा– कोई भी न्यूक्लियर ब्लैकमेल भारत नहीं सहेगा। न्यूक्लियर ब्लैकमेल की आड़ में पनप रहे आतंकी ठिकानों पर भारत सटीक और निर्णायक प्रहार करेगा।

तीसरा– हम आतंक की सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग-अलग नहीं

103 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास

भाजपा विकासवादी - विष्णुदत्त शर्मा

कटनी सहित 6 रेल्वे स्टेशनों का पुनर्विकास प्रदेश के लिए बड़ी सौगात।

देश के 103 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास प्रधानमंत्री जी की विकासवादी सोच का प्रतीक।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश के 103 रेलवे स्टेशनों के विकास की परियोजना हाथ में ली है, जो भाजपा सरकार की विकासवादी सोच का प्रतीक है। यह हमारे लिये सौभाग्य की बात है कि प्रधानमंत्री जी ने जिन पुनर्विकसित रेलवे स्टेशनों का वर्चुअली लोकार्पण किया है, उनमें कटनी साउथ सहित प्रदेश के 6 रेलवे स्टेशन शामिल हैं। निश्चित रूप से इन स्टेशनों के विकास से रेल यात्रियों को स्तरीय सुविधाएं मिलेंगी।

कटनी रेलवे स्टेशन को 13 करोड़ रुपये की लागत से भव्य स्वरूप दिया गया है, रेलवे स्टेशन का कायाकल्प हुआ है, यह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सौगात है। रेलवे ओवरब्रिज (ग्रेड सेपरेटर) बनाया गया है, वह कटनी और मध्यप्रदेश ही नहीं, बल्कि एशिया में अपनी तरह का अनूठा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार मध्यप्रदेश में जिस तरह से रेल सुविधाओं का विकास कर रही है, उससे मध्यप्रदेश के रेल यात्रियों को सुविधाएं मिलेंगी, उनकी संख्या बढ़ेगी। ▪

देखेंगे। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, दुनिया ने, पाकिस्तान का वो घिनौना सच फिर देखा है, जब मारे गए आतंकियों को विदाई देने, पाकिस्तानी सेना के बड़े-बड़े अफसर उमड़ पड़े। स्टेट स्पॉन्सर्ड टेररिज्म का ये बहुत बड़ा सबूत है। हम भारत और अपने नागरिकों को किसी भी खतरे से बचाने के लिए लगातार निर्णायक कदम उठाते रहेंगे।

युद्ध के मैदान पर हमने हर बार पाकिस्तान को धूल चटाई है। और इस बार ऑपरेशन सिंदूर ने नया आयाम जोड़ा है। हमने रेगिस्तानों और पहाड़ों में अपनी क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया, और साथ ही, न्यू एज वॉरफेयर में भी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। इस ऑपरेशन के दौरान, हमारे मेड इन इंडिया हथियारों की प्रमाणिकता सिद्ध हुई। आज दुनिया देख रही है, 21वीं सदी के वॉरफेयर में मेड इन इंडिया डिफेंस इक्विपमेंट्स, इसका समय आ चुका है। हर प्रकार के आतंकवाद के खिलाफ हम सभी का एकजुट रहना, हमारी एकता, हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। निश्चित तौर पर ये युग युद्ध का नहीं है, लेकिन ये युग आतंकवाद का भी नहीं है। टैररिज्म के खिलाफ जीरो टॉलरेंस, ये एक बेहतर दुनिया की गारंटी है।

पाकिस्तानी फौज, पाकिस्तान की सरकार, जिस तरह आतंकवाद को खाद-पानी दे रहे है, वो एक दिन पाकिस्तान को ही समाप्त कर देगा। पाकिस्तान को अगर बचना है तो उसे अपने टैरर इंफ्रास्ट्रक्चर का सफाया करना ही होगा। इसके अलावा शांति का कोई रास्ता नहीं है। भारत का मत एकदम स्पष्ट है, टैरर और टॉक, एक साथ नहीं हो सकते, टैरर और ट्रेड, एक साथ नहीं चल सकते। और, पानी और खून भी एक साथ नहीं बह सकता।

मैं आज विश्व समुदाय को भी कहूंगा, हमारी घोषित नीति रही है, अगर पाकिस्तान से बात होगी, तो टेररिज्म पर ही होगी, अगर पाकिस्तान से बात होगी, तो पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर, PoK उस पर ही होगी।

आज बुद्ध पूर्णिमा है। भगवान बुद्ध ने हमें शांति का रास्ता दिखाया है। शांति का मार्ग भी शक्ति से होकर जाता है। मानवता, शांति और समृद्धि की तरफ बढ़े, हर भारतीय शांति से जी सके, विकसित भारत के सपने को पूरा कर सके, इसके लिए भारत का शक्तिशाली होना बहुत जरूरी है, और आवश्यकता पड़ने पर इस शक्ति का इस्तेमाल भी जरूरी है। और पिछले कुछ दिनों में, भारत ने यही किया है।

मैं एक बार फिर भारत की सेना और सशस्त्र बलों को सैल्यूट करता हूं। हम भारतवासी के हौसले, हर भारतवासी की एकजुटता का शपथ, संकल्प, मैं उसे नमन करता हूं। ▪

जंग न होने देंगे

अटल बिहारी वाजपेयी

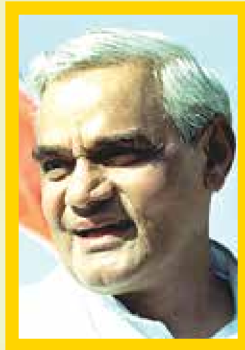

हम जंग न होने देंगे!
विश्व शांति के हम साधक हैं, जंग न होने देंगे!
कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी,
खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी,
आसमान फिर कभी न अंगारे उगलेगा,
एटम से नागासाकी फिर नहीं जलेगी,
युद्धविहीन विश्व का सपना भंग न होने देंगे।
जंग न होने देंगे।

हथियारों के ढेरों पर जिनका है डेरा,
मुँह में शान्ति, बगल में बम, धोखे का फेरा,
कफन बेचने वालों से कह दो चिल्लाकर,
दुनिया जान गई है उनका असली चेहरा,
कामयाब हो उनकी चालें, ढंग न होने देंगे। जंग न होने देंगे।

हमें चाहिए शांति, जिंदगी हमको प्यारी,
हमें चाहिए शांति, सृजन की है तैयारी,
हमने छेड़ी जंग भूख से, बीमारी से,
आगे आकर हाथ बटाए दुनिया सारी।
हरी-भरी धरती को खूनी रंग न लेने देंगे। जंग न होने देंगे।

भारत-पाकिस्तान पड़ोसी, साथ-साथ रहना है,
प्यार करें या वार करें, दोनों को ही सहना है,
तीन बार लड़ चुके लड़ाई, कितना महँगा सौदा,
रूसी बम हो या अमेरिकी, खून एक बहना है।
जो हम पर गुजरी बच्चों के संग न होने देंगे।
जंग न होने देंगे।

भारत की ओर नजर उठाने का एक ही अंजाम होगा- तबाही : प्रधानमंत्री मोदी

- वायु योद्धाओं और सैनिकों के साथ बातचीत की, हमारे राष्ट्र की रक्षा में उनका साहस और पेशेवर रूख सराहनीय है।
- भारत माता की जय सिर्फ एक नारा नहीं है, यह हर उस सैनिक की शपथ है जो अपने देश के सम्मान और मर्यादा के लिए अपना जीवन दांव पर लगाता है।
- ऑपरेशन सिंदूर भारत की नीति, नीयत और निर्णायक क्षमता की एक त्रिमूर्ति है।
- जब हमारी बहनों और बेटियों का सिंदूर मिटाया गया, तो हमने आतंकवादियों को उनके ठिकानों में ही कुचल दिया।
- आतंक के आकाओं को अब पता है कि भारत के विरूद्ध आंख उठाने से उन्हें विनाश के अलावा कुछ नहीं प्राप्त होगा।
- पाकिस्तान में न केवल आतंकवादी ठिकानों और एयरबेसों को नष्ट कर दिया गया, बल्कि उनके दुर्भावनापूर्ण इरादों और दुस्साहस को भी पराजित किया गया।
- आतंकवाद के खिलाफ भारत की लक्ष्मण रेखा अब स्पष्ट है, अगर कोई और आतंकी हमला होता है, तो भारत जवाब देगा और यह एक निर्णायक जवाब होगा।
- ऑपरेशन सिंदूर का हर क्षण भारत के सशस्त्र बलों की शक्ति का प्रमाण है।
- यदि पाकिस्तान आगे कोई आतंकवादी गतिविधि या सैन्य आक्रमण करता है, तो हम निर्णायक जवाब देंगे, यह जवाब हमारी शर्तों पर, हमारे तरीके से होगा।
- ये नया भारत है! यह भारत शांति चाहता है, लेकिन अगर मानवता पर हमला होता है, तो भारत युद्ध के मैदान में दुश्मन को कुचलना भी जानता है।

भारत माता की जय! भारत माता की जय! भारत माता की जय!

अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना के लिए शस्त्र उठाना, ये हमारी परंपरा है। इसलिए जब हमारी बहनों, बेटियों का सिंदूर छीना गया, तो हमने आंतकियों के फन को उनके घर में घुस के कुचल दिया।

वो कायरों की तरह छिपकर आए थे, लेकिन वो ये भूल गए, उन्होंने जिसे ललकारा है, वो हिन्द की सेना है।

इस जयघोष की ताकत अभी-अभी दुनिया ने देखी है। भारत माता की जय, ये सिर्फ उद्घोष नहीं है, ये देश के हर उस सैनिक की शपथ है, जो मां भारती की मान-मर्यादा के लिए जान की बाजी लगा देता है। ये देश के हर उस नागरिक की आवाज है, जो देश के लिए जीना चाहता है, कुछ कर गुजरना चाहता है। भारत माता की जय, मैदान में भी गूंजती है और मिशन में भी। जब भारत के सैनिक मां भारती की जय बोलते हैं, तो दुश्मन के कलेजे काँप जाते हैं। जब हमारे ड्रोन्स, दुश्मन के किले की दीवारों को ढहा देते हैं, जब हमारी मिसाइलें सनसनाती हुई निशाने पर पहुँचती हैं, तो दुश्मन को सुनाई देता है- भारत माता की जय! जब रात के अंधेरे में भी, जब हम सूरज उगा देते हैं, तो दुश्मन को दिखाई देता है- भारत माता की जय! जब हमारी फौजें, न्यूक्लियर ब्लैकमेल की धमकी की हवा निकाल देती हैं, तो आकाश से पाताल तक एक ही बात गूंजती है- भारत माता की जय!

वाकई, आप सभी ने कोटि-कोटि भारतीयों का सीना चौड़ा कर दिया है, हर भारतीय का माथा गर्व से ऊंचा कर दिया है। आपने इतिहास रच दिया है। और मैं सुबह-सुबह आपके बीच आया हूं, आपके दर्शन करने के लिए। जब वीरों के पैर धरती पर पड़ते हैं, तो धरती धन्य हो जाती है, जब वीरों के दर्शन का अवसर मिलता है, तो जीवन धन्य हो जाता है। और इसलिए मैं आज सुबह-सुबह ही आपके दर्शन करने के लिए यहां

पहुंचा हूं। आज से अनेक दशक बाद भी जब भारत के इस पराक्रम की चर्चा होगी, तो उसके सबसे प्रमुख अध्याय आप और आपके साथी होंगे। आप सभी वर्तमान के साथ ही देश की आने वाली पीढ़ियों की, और उनके लिए भी नई प्रेरणा बन गए हैं। मैं वीरों की इस धरती से आज एयरफोर्स, नेवी और आर्मी के सभी जांबाजों, BSF के अपने शूरवीरों को सैल्यूट करता हूं। आपके पराक्रम की वजह से आज ऑपरेशन सिंदूर की गूंज हर कोने में सुनाई दे रही है। इस पूरे ऑपरेशन के दौरान हर भारतीय आपके साथ खड़ा रहा, हर भारतीय की प्रार्थना आप सभी के साथ रही। आज हर देशवासी, अपने सैनिकों, उनके परिवारों के प्रति कृतज्ञ है, उनका ऋणी है।

ऑपरेशन सिंदूर कोई सामान्य सैन्य अभियान नहीं है। ये भारत की नीति, नीयत और निर्णायक क्षमता की त्रिवेणी है। भारत बुद्ध की भी धरती है और गुरु गोबिंद सिंह जी की भी धरती है। गुरू गोबिंद सिंह जी ने कहा था- ''सवा लाख से एक लड़ाऊं, चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊं, तबै गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाऊं।''

अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना के लिए शस्त्र उठाना, ये हमारी परंपरा है। इसलिए जब हमारी बहनों, बेटियों का सिंदूर छीना गया, तो हमने आंतकियों के फन को उनके घर में घुस के कुचल दिया। वो कायरों की तरह छिपकर आए थे, लेकिन वो ये भूल गए, उन्होंने जिसे ललकारा है, वो हिन्द की सेना है। आपने उन्हें सामने से हमला करके मारा, आपने आतंक के तमाम बड़े अड्डों को मिट्टी में मिला दिया, 9 आतंकी ठिकाने बर्बाद हुए, 100 से ज्यादा आतंकियों की मौत हुई, आतंक के आकाओं को अब समझ आ गया है, भारत की ओर नजर उठाने का एक ही अंजाम होगा- तबाही! भारत में निर्दोष लोगों का खून बहाने का एक ही अंजाम होगा- विनाश और महाविनाश! जिस पाकिस्तानी सेना के भरोसे ये आतंकी बैठे थे, भारत की सेना, भारत की एयरफोर्स और भारत की नेवी ने, उस पाकिस्तानी सेना को भी धूल चटा दी है। आपने पाकिस्तानी फौज को भी बता दिया है, पाकिस्तान में ऐसा कोई ठिकाना नहीं है, जहां बैठकर आतंकवादी चैन की सांस ले सके। हम घर में घुसकर मारेंगे और बचने का एक मौका तक नहीं देंगे। और हमारे ड्रोन्स, हमारी मिसाइलें, उनके बारे में तो सोचकर पाकिस्तान को कई दिन तक नींद नहीं आएगी।

कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में।

ये पंक्तियां महाराणा प्रताप के प्रसिद्ध घोड़े चेतक पर लिखी गई हैं, लेकिन ये पंक्तियां आज के आधुनिक भारतीय हथियारों पर भी फिट बैठती हैं।

ऑपरेशन सिंदूर से आपने देश का आत्मबल बढ़ाया है, देश को एकता के सूत्र में बाँधा है, और आपने भारत की सीमाओं की रक्षा की है, भारत के स्वाभिमान को नई ऊंचाई दी है।

आपने वो किया, जो अभूतपूर्व है, अकल्पनीय है, अद्भुत है। हमारी एयरफोर्स ने पाकिस्तान में इतना डीप, आतंक के अड्डों को टारगेट किया। सिर्फ 20-25 मिनट के भीतर, सीमापार लक्ष्यों को भेदना, बिल्कुल पिन पॉइंट टारगेट्स को हिट करना, ये सिर्फ एक मॉडर्न टेक्नोलॉजी से लैस, प्रोफेशनल फोर्स ही कर सकती है। आपकी स्पीड और प्रिसीजन, इस लेवल की थी, कि दुश्मन हक्का-बक्का रह गया। उसको पता ही नहीं चला कि कब उसका सीना छलनी हो गया।

हमारा लक्ष्य, पाकिस्तान के अंदर terror हेडक्वार्टर्स को हिट करने का था, आतंकियों को हिट करने का था। लेकिन पाकिस्तान ने अपने यात्री विमानों को सामने करके जो साजिश रची, मैं कल्पना कर सकता हूं, वो पल कितना कठिन होगा, जब सिविलियन एयरक्राफ्ट दिख रहा है, और मुझे गर्व है आपने बहुत सावधानी से, बहुत सतर्कता से सिविलियन एयरक्राफ्ट को नुकसान किए बिना, तबाह करके दिखाया, उसका जवाब दे दिया आपने। मैं गर्व के साथ कह सकता हूं, कि आप सभी अपने लक्ष्यों पर बिल्कुल खरे उतरे हैं। पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों और उनके एयरबेस ही तबाह नहीं हुए, बल्कि उनके नापाक इरादे और उनके दुस्साहस, दोनों की हार हुई है।

ऑपरेशन सिंदूर से बौखलाए दुश्मन ने इस एयरबेस के साथ-साथ, हमारे अनेक एयरबेस पर हमला करने की कई बार कोशिश की। बार-बार उसने हमें टारगेट किया, लेकिन पाक के नाकाम, नापाक इरादे हर बार नाकाम हो गए। पाकिस्तान के ड्रोन, उसके UAV, पाकिस्तान के एयरक्राफ्ट और उसकी मिसाइलें, हमारे सशक्त एयर डिफेंस के सामने सब के सब ढेर हो गए। मैं देश के सभी एयरबेस से जुड़ी लीडरशिप की, भारतीय वायुसेना के हर एयर-वॉरियर की हृदय से सराहना करता हूं, आपने वाकई बहुत शानदार काम किया है।

आतंक के विरुद्ध भारत की लक्ष्मण रेखा अब एकदम स्पष्ट है। अब फिर कोई टैरर अटैक हुआ, तो भारत जवाब देगा, पक्का जवाब देगा। ये हमने सर्जिकल स्ट्राइक के समय देखा है, एयर स्ट्राइक के समय देखा है, और अब तो ऑपरेशन सिंदूर, भारत का न्यू नॉर्मल है। और जैसा मैंने कल भी कहा, भारत ने अब तीन सूत्र तय कर दिए हैं,

पहला- भारत पर आतंकी हमला हुआ तो हम अपने तरीके से, अपनी शर्तों पर, अपने समय पर जवाब देंगे।

दूसरा- कोई भी न्यूक्लियर ब्लैकमेल भारत नहीं सहेगा।

तीसरा- हम आतंक की सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग-अलग नहीं देखेंगे। दुनिया भी भारत के इस नए रूप को, इस नई व्यवस्था को समझते हुए ही आगे बढ़ रही है।

ऑपरेशन सिंदूर का एक-एक क्षण भारत की सेनाओं के सामर्थ्य की गवाही देता है। इस दौरान हमारी सेनाओं का को-ऑर्डिनेशन, वाकई मैं कहूंगा, शानदार था। आर्मी हो, नेवी हो या एयरफोर्स, सबका तालमेल बहुत जबरदस्त था। नेवी ने समुद्र पर अपना दबदबा बनाया। सेना ने बॉर्डर पर मजबूती दी। और, भारतीय वायुसेना ने अटैक भी किया और डिफेंड भी किया। BSF और दूसरे बलों ने भी अद्भुत क्षमताओं

का प्रदर्शन किया है। Integrated air and land combat systems ने शानदार काम किया है। और यही तो है, jointness, ये अब भारतीय सेनाओं के सामर्थ्य की एक मजबूत पहचान बन चुकी है।

ऑपरेशन सिंदूर में मैनपावर के साथ ही मशीन का को-ऑर्डिनेशन भी अदभुत रहा है। भारत के पारंपरिक एयर डिफेंस सिस्टम हों, जिन्होंने अनेक लड़ाईयां देखी हैं, या फिर आकाश जैसे हमारे मेड इन इंडिया प्लेटफॉर्म हों, इनको S-400 जैसे आधुनिक और सशक्त डिफेंस सिस्टम ने अभूतपूर्व मजबूती दी है। एक मजबूत सुरक्षा कवच भारत की पहचान बन चुकी है। पाकिस्तान की लाख कोशिश के बाद भी, हमारे एयरबेस हों, या फिर हमारे दूसरे डिफेंस इंफ्रास्ट्रक्चर, इन पर आंच तक नहीं आई। और इसका श्रेय आप सभी को जाता है, और मुझे गर्व है आप सब पर, बॉर्डर पर तैनात हर सैनिक को जाता है, इस ऑपरेशन से जुड़े हर व्यक्ति को इसका श्रेय जाता है।

आज हमारे पास नई और cutting edge technology का ऐसा सामर्थ्य है, जिसका पाकिस्तान मुकाबला नहीं कर सकता। बीते दशक में एयरफोर्स सहित, हमारी सभी सेनाओं के पास, दुनिया की श्रेष्ठ टेक्नोलॉजी पहुंची है। लेकिन हम सब जानते हैं, नई टेक्नोलॉजी के साथ चुनौतियां भी उतनी ही बड़ी होती हैं। Complicated और sophisticated systems को मैंटेन करना, उन्हें efficiency के साथ ऑपरेट करना, एक बहुत बड़ी स्किल है। आपने tech को tactics से जोड़कर दिखा दिया है। आपने सिद्ध कर दिया है कि आप इस गेम में, दुनिया में बेहतरीन हैं। भारत की वायुसेना अब सिर्फ हथियारों से ही नहीं, डेटा और ड्रोन से भी दुश्मन को छकाने में माहिर हो गई है।

पाकिस्तान की गुहार के बाद भारत ने सिर्फ अपनी सैन्य कार्यवाही को स्थगित किया है। अगर, पाकिस्तान ने फिर से आतंकी गतिविधि या सैन्य दुस्साहस दिखाया, तो हम उसका मुंहतोड़ जवाब देंगे। ये जवाब, अपनी शर्तों पर, अपने तरीके से देंगे। और इस निर्णय की आधारशिला, इसके पीछे छिपा विश्वास, आप सबका धैर्य, शौर्य, साहस और सजगता है। आपको ये हौसला, ये जुनून, ये जज्बा, ऐसे ही बरकरार रखना है। हमें लगातार मुस्तैद रहना है, हमें तैयार रहना है। हमें दुश्मन को याद दिलाते रहना है, ये नया भारत है। ये भारत शांति चाहता है, लेकिन, अगर मानवता पर हमला होता है, तो ये भारत युद्ध के मोर्चे पर दुश्मन को मिट्टी में मिलाना भी अच्छी तरह जानता है। ▪

नक्सलवाद का सफाया

विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भाजपा सरकारें नक्सलियों को समाप्त करने के लिए संकल्पित।

मध्यप्रदेश में भी नक्सलवाद के सफाए के लिए चल रहा अभियान।

मध्यप्रदेश में नक्सलियों के खिलाफ लगातार चल रही कार्रवाई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के मार्गदर्शन में सुरक्षा बल देशभर में नक्सलवाद को पूरी तरह से समाप्त करने में जुटे हुए हैं। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी कह चुके हैं कि देश के सिर्फ छह जिलों में ही नक्सली वर्तमान में सक्रिय हैं। उन्होंने मार्च 2026 तक पूरे देश से नक्सलवाद को समाप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार नक्सलियों के खिलाफ लगातार कार्रवाई कर रही है। मध्यप्रदेश के बालाघाट में कुछ नक्सलियों की सक्रियता का पता चलता है। हाल ही में हमारे जाबांज सुरक्षा बलों ने बालाघाट के बिलालकसा गांव के पास नक्सलियों के मूवमेंट पर घेराबंदी की है। सुरक्षाबल नक्सलियों के खिलाफ लगातार सर्चिंग अभियान चला रहे हैं। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने मार्च 2026 तक नक्सलवाद को देश से समाप्त करने की जो समय-सीमा निर्धारित की है, उसके पहले ही मध्यप्रदेश से नक्सलवाद को पूरी तरह से समाप्त कर दिया जाएगा।

छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों द्वारा अबूझमाड़ के जंगलों में दो दर्जन से अधिक नक्सलियों के मारे जाने की सूचना मिल रही है। मुठभेड़ में एक करोड़ से अधिक के इनामी नक्सली के भी मारे जाने की पुष्टि हुई है। यह कार्यवाही बताती है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार जो कहती है उसे पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश की सीमाएं पूरी तरह से सुरक्षित हैं। जो देश के लिए खतरा हो या देश की एकता या अखंडता को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे, ऐसे अवांछित गतिविधियों में संलिप्त किसी भी तत्व को बख्शा नहीं जाएगा। ▪

दुश्मनों ने देख लिया कि जब सिंदूर बारूद बन जाता है तो क्या होता है : प्रधानमंत्री मोदी

- पिछले 11 वर्षों में आधुनिक बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए अभूतपूर्व गति से काम किया गया है।
- देश ने आधुनिक किए जा रहे रेलवे स्टेशनों को अमृत भारत स्टेशन नाम दिया है, आज इनमें से 100 से अधिक अमृत भारत स्टेशन बनकर तैयार है।
- हम एक ही समय में सिंचाई परियोजनाओं को पूर्ण कर रहे हैं और नदियों को जोड़ रहे है।
- हमारी सरकार ने तीनों सशस्त्र सेनाओं को खुली छूट दी, तीनों सेनाओं ने मिलकर ऐसा चक्रव्यूह रचा कि पाकिस्तान को घुटने टेकने पर मजबूर होना पड़ा।
- दुनिया और देश के दुश्मनों ने देखा है कि जब ''सिंदूर'' बारूद में बदल जाता है तो परिणाम क्या होता है।
- ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद से निपटने के लिए तीन सिद्धांत निर्धारित किए है।
- अब भारत ने स्पष्ट कर दिया है, पाकिस्तान को हर आतंकवादी हमले की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी और यह कीमत पाकिस्तान की सेना, पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था को भी चुकानी पड़ेगी।
- पाकिस्तान को अब भारतीयों के जीवन से खेलने की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

विकसित भारत बनाने के लिए देश में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने का बहुत बड़ा महायज्ञ चल रहा है।

हमारे देश की सड़कें आधुनिक हों, हमारे देश के एयरपोर्ट आधुनिक हों, हमारे यहां रेल और रेलवे स्टेशन आधुनिक हों, इसके लिए पिछले 11 साल में अभूतपूर्व गति से काम किया गया है।

विकसित भारत बनाने के लिए देश में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने का बहुत बड़ा महायज्ञ चल रहा है। हमारे देश की सड़कें आधुनिक हों, हमारे देश के एयरपोर्ट आधुनिक हों, हमारे यहां रेल और रेलवे स्टेशन आधुनिक हों, इसके लिए पिछले 11 साल में अभूतपूर्व गति से काम किया गया है। आप कल्पना कर सकते हैं, इंफ्रास्ट्रक्चर के इन कामों पर देश पहले जितना पैसा खर्च करता था, आज उससे 6 गुना ज्यादा पैसा खर्च कर रहा है, 6 गुना ज्यादा। आज भारत में हो रहे इन विकास कार्यों को देखकर दुनिया भी हैरान है। आप उत्तर में जाएंगे, तो चिनाब ब्रिज जैसा निर्माण देखकर लोग हैरान हैं। पूर्व की तरफ जाएंगे, तो अरुणाचल की सेला टनल, असम का बोगीबिल ब्रिज आपका स्वागत करते हैं। पश्चिम भारत में आएंगे, तो मुंबई में समंदर पर बना अटल सेतु नजर आएगा। सुदूर दक्षिण में देखेंगे, तो पंबन ब्रिज मिलेगा, जो अपनी तरह का, देश का पहला ब्रिज है।

आज भारत अपनी ट्रेनों के नेटवर्क को भी आधुनिक कर रहा है। ये वंदे भारत ट्रेनें, अमृत भारत ट्रेनें, नमो भारत ट्रेनें, ये देश की नई गति और नई प्रगति को दर्शाती है। अभी देश में करीब 70 रूट्स पर वंदेभारत ट्रेनें चल रही हैं। इससे दूर-सुदूर के इलाकों में भी आधुनिक रेल पहुंची है। बीते 11 साल में, सैकड़ों रोड ओवर ब्रिज और रोड अंडर ब्रिज का निर्माण किया गया है। चौंतीस हजार किलोमीटर से ज्यादा के नए रेल ट्रैक बिछाए गए हैं। अब ब्रॉड गेज लाइनों पर मानव रहित क्रॉसिंग्स, वो बात इतिहास बन चुकी है, खत्म हो चुकी है। हम मालगाड़ियों के लिए अलग से स्पेशल पटरियां, Dedicated freight corridor का काम भी तेजी से पूरा कर रहे हैं। देश के पहले बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट पर

काम चल रहा है। और इन सबके साथ ही, हम एक साथ देश के करीब 1300 से अधिक रेलवे स्टेशनों को भी आधुनिक बना रहे हैं।

आधुनिक हो रहे इन रेलवे स्टेशनों को देश ने अमृत भारत स्टेशन का नाम दिया है। आज इनमें से 100 से अधिक अमृत भारत स्टेशन बनकर के तैयार हो गए हैं। सोशल मीडिया पर भी लोग देख रहे हैं कि इन रेलवे स्टेशनों का पहले क्या हाल था, और अब कैसे इनकी तस्वीर बदल गई है।

विकास भी, विरासत भी, इस मंत्र का इन अमृत भारत रेलवे स्टेशनों पर, उसका नजारा साफ-साफ दिखाई देता है। ये स्थानीय कला और संस्कृति के भी नए प्रतीक हैं। जैसे राजस्थान के मांडलगढ़ रेलवे स्टेशन पर महान राजस्थानी कला-संस्कृति के दर्शन होंगे, बिहार के थावे स्टेशन पर मां थावेवाली के पावन मंदिर और मधुबनी चित्रकला को दर्शाया गया है। मध्य प्रदेश के ओरछा रेलवे स्टेशन पर आपको भगवान राम की आभा का एहसास होगा। श्रीरंगम स्टेशन का डिजाइन, भगवान श्रीरंगनाथ स्वामी जी के मंदिर से प्रेरित है। गुजरात का डाकोर स्टेशन, रणछोड़राय जी से प्रेरित है।

तिरुवण्णामलै स्टेशन, द्राविड़ वास्तुकला के अनुसार डिजाइन किया गया है। बेगमपेट स्टेशन पर आपको काकतीय साम्राज्य के समय का आर्किटेक्चर देखने को मिलेगा। यानि हर अमृत स्टेशन पर आपको भारत की हजारों साल पुरानी विरासत के दर्शन भी होंगे। ये स्टेशन, हर राज्य में टूरिज्म को भी बढ़ावा देने के माध्यम बनेंगे, नौजवानों को रोजगार के नए मौके देंगे।

इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने के लिए जो पैसा सरकार खर्च करती है, वो रोजगार भी बनाता है, व्यापार-कारोबार भी बढ़ाता है। जो हजारों करोड़ रुपए सरकार लगा रही है, ये पैसा मजदूर की जेब में जा रहा है। ये दुकानदार को मिल रहा है, दुकान और फैक्ट्री में काम करने वाले लोगों को मिल रहा है। रेत-बजरी-सीमेंट, ये सारी चीजें ढोने वाले ट्रक-टैंपो चलाने वालों को भी इससे फायदा होता है। और जब ये इंफ्रास्ट्रक्चर बनकर तैयार हो जाता है, तो फिर अनेक गुना और फायदे होते हैं। किसान की उपज कम कीमत में बाजार तक पहुंचती है, वेस्टेज कम होती है। जहां सड़कें अच्छी होती हैं, नई ट्रेनें पहुंचती हैं, वहां नए उद्योग लगते हैं, पर्यटन को बहुत बढ़ावा मिलता है,यानि इंफ्रास्ट्रक्चर पर लगने वाले पैसे से हर परिवार का, खासतौर पर हमारे नौजवानों का सबसे अधिक फायदा होता है।

इंफ्रास्ट्रक्चर पर जो काम हो रहा है, उसका बड़ा लाभ मिल रहा है। आज गांव-गांव में अच्छी सड़कें बन रही हैं। बॉर्डर के इलाकों में भी शानदार सड़कें बन रही हैं।

कई इलाकों में स्वास्थ्य, जल और बिजली से जुड़ी योजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण हुआ है। इन सारे प्रयासों का लक्ष्य है, हमारे शहर हो या गांव, तेजी से उन्नति की ओर बढ़ सकें । युवाओं को उनके शहर में ही अच्छे अवसर मिल सकें ।

औद्योगिक विकास के लिए भी सरकार तेजी से काम कर रही है। अलग-अलग सेक्टर्स के लिए सरकार ने नई औद्योगिक नीतियां जारी की हैं। अमृतसर से जामनगर तक जो 6-लेन का इकोनॉमिक कॉरिडोर बन रहा है, वो श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर और जालौर से गुजर रहा है। कनेक्टिविटी का ये अभियान, औद्योगिक विकास को नई ऊंचाई पर ले जाएगा।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना भी तेजी से आगे बढ़ रही है। इससे लोगों का बिजली बिल जीरो हुआ है, और लोगों को सोलर बिजली पैदा करके कमाई का नया रास्ता भी मिला है। बिजली का बढ़ता उत्पादन भी औद्योगिक विकास को नई गति दे रहा है।

एक तरफ हम सिंचाई परियोजनाओं को पूरा कर रहे हैं और साथ ही, नदियों को जोड़ रहे हैं। पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना से अनेक जिलों को लाभ होगा, किसानों को फायदा होगा।

देश और देशवासियों से बड़ा और कुछ नहीं। 22 अप्रैल को आतंकवादियों ने, धर्म पूछकर हमारी बहनों की मांग का सिंदूर उजाड़ दिया था। वो गोलियां पहलगाम में चली थीं, लेकिन उन गोलियों से 140 करोड़ देशवासियों का सीना छलनी हुआ था। इसके बाद हर देशवासी ने एकजुट होकर संकल्प लिया था, कि आतंकवादियों को मिट्टी में मिला देंगे, उन्हें कल्पना से भी बड़ी सजा देंगे। आपके आशीर्वाद से, देश की सेना के शौर्य से, हम सब उस प्रण पर खरे उतरे हैं, हमारी सरकार ने तीनों सेनाओं को खुली छूट दे दी थी, और तीनों सेनाओं ने मिलकर ऐसा चक्रव्यूह रचा कि पाकिस्तान को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया।

22 तारीख के हमले के जवाब में हमने 22 मिनट में आतंकियों के 9 सबसे बड़े ठिकाने तबाह कर दिए। दुनिया ने, और देश के दुश्मनों ने भी देख लिया कि जब सिंदूर, जब सिंदूर बारूद बन जाता है, तो नतीजा क्या होता है।

एयर स्ट्राइक के बाद मैंने कहा था - ''सौगंध मुझे इस मिट्टी की, मैं देश नहीं मिटने दूंगा, मैं देश नहीं झुकने दूंगा।'' आज मैं देशवासियों से बड़ी नम्रता के साथ कहना चाहता हूं,

**जो सिंदूर मिटाने निकले थे,
जो सिंदूर मिटाने निकले थे,
उन्हें मिट्टी में मिलाया है।
जो हिंदुस्तान का लहू बहाते थे,
जो हिंदुस्तान का लहू बहाते थे,
आज कतरे-कतरे का हिसाब चुकाया है।
जो सोचते थे,
जो सोचते थे,
भारत चुप रहेगा,
आज वो घरों में दुबके पड़े हैं,
जो अपने हथियारों पर घमंड करते थे,
जो अपने हथियारों पर घमंड करते थे,
आज वो मलबे के ढेर में दबे हुए हैं।
ये शोध-प्रतिशोध का खेल नहीं,
ये शोध-प्रतिशोध का खेल नहीं,
ये न्याय का नया स्वरूप है,
ये न्याय का नया स्वरूप है,
ये ऑपरेशन सिंदूर है।
ये सिर्फ आक्रोश नहीं है,
ये सिर्फ आक्रोश नहीं है,
ये समर्थ भारत का रौद्र रूप है।
ये भारत का नया स्वरूप है।
पहले,
पहले घर में घुसकर किया था वार,
पहले घर में घुसकर किया था वार,
अब सीधा सीने पर किया प्रहार है।**

आतंक का फन कुचलने की,
आतंक का फन कुचलने की,
यही नीति है,
यही रीति है,
यही भारत है,
नया भारत है।
भारत माता की जय।
भारत माता की जय।
भारत माता की जय।

ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद से निपटने के तीन सूत्र तय कर दिए हैं।

पहला- भारत पर आतंकी हमला हुआ, तो करारा जवाब मिलेगा। समय हमारी सेनाएं तय करेंगी, तरीका भी हमारी सेनाएं तय करेंगी, और शर्तें भी हमारी होंगी।

दूसरा- एटम बम की गीदड़ भभकियों से भारत डरने वाला नहीं है।

तीसरा- हम आतंक के आकाओं और आतंक की सरपरस्त सरकार को अलग-अलग नहीं देखेंगे, उन्हें अलग-अलग नहीं देखेंगे, उन्हें एक ही मानेंगे। पाकिस्तान का ये स्टेट और नॉन-स्टेट एक्टर वाला खेल अब नहीं चलेगा।

पूरी दुनिया में पाकिस्तान की पोल खोलने के लिए हमारे देश के सात अलग-अलग प्रतिनिधि मंडल पूरे विश्वभर में पहुंच रहे हैं। और इसमें देश के सभी राजनीतिक दलों के लोग हैं, विदेश नीति के जानकार हैं, गणमान्य नागरिक हैं, अब पाकिस्तान का असली चेहरा पूरी दुनिया को दिखाया जाएगा।

पाकिस्तान, भारत से कभी सीधी लड़ाई जीत ही नहीं सकता। जब भी सीधी लड़ाई होती है, तो बार-बार पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ती है। इसलिए, पाकिस्तान ने आतंकवाद को भारत के खिलाफ लड़ाई का हथियार बनाया है। आजादी के बाद, पिछले कई दशकों से यही चला आ रहा था। पाकिस्तान आतंक फैलाता था, निर्दोष लोगों की हत्याएं करता था, भारत में डर का माहौल बनाता था, लेकिन पाकिस्तान एक बात भूल गया, अब मां भारती का सेवक मोदी यहां सीना तानकर खड़ा है। मोदी का दिमाग ठंडा है, ठंडा रहता है, लेकिन मोदी का लहू गर्म होता है, और अब तो मोदी की नसों में लहू नहीं, गर्म सिंदूर बह रहा है। अब भारत ने दो टूक साफ कर दिया है, हर आतंकी हमले की पाकिस्तान को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। और ये कीमत, पाकिस्तान की सेना चुकाएगी, पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था चुकाएगी।

पाकिस्तान ने बीकानेर के नाल एयरबेस को भी निशाना बनाने की कोशिश की थी। लेकिन वो इस एयरबेस को रत्तीभर भी नुकसान नहीं पहुंचा पाया। और वहीं यहां से कुछ ही दूर सीमापार पाकिस्तान का रहीमयार खान एयरबेस है, पता नहीं आगे कब खुलेगा, ICU में पड़ा है। भारत की सेना के अचूक प्रहार ने, इस एयरबेस को तहस-नहस कर दिया है।

पाकिस्तान के साथ ना ट्रेड होगा, ना टॉक, अगर बात होगी तो सिर्फ पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर की, POK की, और अगर पाकिस्तान ने आतंकियों को एक्सपोर्ट करना जारी रखा, तो उसको पाई-पाई के लिए मोहताज होना होगा। पाकिस्तान को भारत के हक का पानी नहीं मिलेगा, भारतीयों के खून से खेलना, पाकिस्तान को अब महंगा पड़ेगा। ये भारत का संकल्प है, और दुनिया की कोई ताकत हमें इस संकल्प से डिगा नहीं सकती है।

विकसित भारत के निर्माण के लिए सुरक्षा और समृद्धि, दोनों जरूरी है। ये तभी संभव है, जब भारत का कोना-कोना मजबूत होगा। ▪

"ऑपरेशन सिंदूर" अद्वितीय

- डॉ. मोहन यादव

भारतीय सेना का शौर्य गर्व का आधार।

प्रधानमंत्री के साथ मध्यप्रदेश चट्टान की तरह खड़ा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जो कहते हैं, वह होता है। हमारी सेना भी जगत जननी मां जगदंबा नवदुर्गा के समान शक्ति संपन्न है, जो दुश्मनों का समूल नाश करने में सक्षम है। पाकिस्तान के 9 आतंकवादी ठिकानों पर भारतीय सेना ने मुंह तोड़ जवाब दिया है, इससे पूरा देश गौरवान्वित है। ऑपरेशन सिंदूर नाम से ही स्पष्ट है, सिंदूर पर हाथ लगाने और गलत निगाह डालने वाले को भारतीय सेना ने जवाब दिया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा था कि हर वह स्थान और हर वह व्यक्ति जो भारत की तरफ गलत निगाह से देखेगा, उसे मिट्टी में मिला देंगे। आपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानों का परिणाम सबने देखा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी को आतंकी खातमे के इस जबर्दस्त प्रहार की कोटिश: बधाई।

केन्द्रीय रक्षा मंत्री, गृहमंत्री, सरकार और पहलगाम आतंकी हमले के विरोध में एकजुटता दिखाने वाले सभी भारतवासियों के लिए यह गौरव का विषय है। हम सब प्रधानमंत्री श्री मोदी के साथ चट्टान की तरह खड़े हैं। राज्य सरकार प्रधानमंत्री श्री मोदी के हर कदम के साथ है। हमारे देश के दुश्मनों को सबक सिखाते हुए भारतीय वीरता का जो परचम फहराया गया है, यह सब भारतवासियों के लिए गर्व का आधार है। इस ऑपरेशन में किसी को भी व्यक्तिगत हानि ना पहुँचाते हुए आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया गया है। ▪

भारत अब निर्णायक नेतृत्व वाला देश है- अमित शाह

- **मोदी जी की अगुआई में भारत अब निर्णायक नेतृत्व वाला देश है जो आतंकी हमलों का जवाब सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और 'ऑपरेशन सिंदूर' से देता है।**
- **31 मार्च 2026 तक भारत नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा।**
- **ऑपरेशन सिंदूर ने दुनिया को यह संदेश दिया कि भारत की सेना, जनता और सीमाओं से टकराने वालों को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे।**
- **अब अगर पाकिस्तान ने आतंक फैलाने की हिमाकत की तो जवाब ऐसा मिलेगा कि उसकी पुश्तें याद करेंगी।**
- **भारत की बहनों-बेटियों के माथे के सिंदूर को कोई मिटाने का प्रयास करेगा, तो उसे खून से जवाब देना पड़ेगा।**

ऑपरेशन सिंदूर ने पूरी दुनिया को यह संदेश दिया है कि भारत की सेना, जनता और सीमाओं से टकराने वालों को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि हमारे निर्दोष नागरिकों पर हमला होगा, तो उसका जवाब गोली से नहीं बल्कि गोले से दिया जाएगा। 7 मई को रात्रि 1 बजकर 4 मिनट पर हमारी सेना ने 22 मिनट में नौ आतंकवादी ठिकानों को तबाह कर दिया।

22 तारीख को, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों की चुन-चुनकर निर्मम हत्या की। इस कायराना हमले के बाद आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बिहार की जनसभा से स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी थी कि आतंकी चाहे जहां भी छिपे हों, उन्हें ढूंढ-ढूंढकर मिट्टी में मिलाया जाएगा। पाकिस्तान यह भूल गया था कि अब वह भारत नहीं रहा, जहां कांग्रेस की कमजोर सरकारें हुआ करती थीं। पिछले 11 वर्षों से देश में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सशक्त भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, जिसने हर हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया है। जब उरी में आतंकी हमला हुआ तो पाकिस्तान में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक से उसका उत्तर दिया गया, पुलवामा में हुए आतंकी हमले का उत्तर एयर स्ट्राइक से दिया गया। अब जब पहलगाम में कायराना हमला हुआ तो भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत सैकड़ों आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट कर दिया।

ऑपरेशन सिंदूर ने पूरी दुनिया को यह संदेश दिया है कि भारत की सेना, जनता और सीमाओं से टकराने वालों को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि हमारे निर्दोष नागरिकों पर हमला होगा, तो उसका जवाब गोली से नहीं बल्कि गोले से दिया जाएगा। 7 मई को रात्रि 1 बजकर 4 मिनट पर हमारी सेना ने 22 मिनट में नौ आतंकवादी ठिकानों को तबाह कर दिया। 8 मई को पाकिस्तान ने ड्रोन और मिसाइल से हमला करने की कोशिश की, लेकिन हमारी वायु सुरक्षा प्रणाली इतनी मजबूत थी कि एक भी मिसाइल या ड्रोन भारतीय जमीन को छू तक नहीं सका। 9 मई को भारतीय सेना ने उन हवाई अड्डों और एयर डिफेंस सिस्टम को भी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया जहां से पाकिस्तान ने हमला किया था। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस अभियान

को ऑपरेशन सिंदूर नाम देकर यह संदेश दिया है कि भारत की बहनों-बेटियों के माथे का सिंदूर सस्ता नहीं है। यदि कोई उसे मिटाने का प्रयास करेगा, तो उसे खून से जवाब मिलेगा। ऑपरेशन सिंदूर ने न केवल हमारी सीमाओं की सुरक्षा को दुनिया के सामने सिद्ध किया है बल्कि यह भी साबित कर दिया है कि अब यह नया भारत है जो 2047 तक ऐसा राष्ट्र बनेगा जिसकी ओर कोई आंख उठाकर देखने की हिम्मत न कर सके।

जब ऑपरेशन सिंदूर चल रहा था, उसी समय एक और अभियान ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट भी सक्रिय था, जो भारत की रणनीतिक क्षमता और संकल्प का प्रतीक है। छत्तीसगढ़ में 5000 फुट ऊंची पहाड़ी पर स्थित नक्सलवादियों के अड्डों को सीआरपीएफ, छत्तीसगढ़ पुलिस और बीएसएफ ने मिलकर ध्वस्त कर दिया है। इस अभियान में पहले 27 और फिर 31 नक्सली मारे गए, जिसके बाद अब तक कुल 36 और नक्सली ढेर किए जा चुके हैं।

कई नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है और कई गिरफ्तार भी हुए हैं। 31 मार्च 2026 तक इस देश की धरती से नक्सलवाद को पूरी तरह समाप्त कर दिया जाएगा। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वह सिंधु जल समझौता भी रद्द कर दिया है जो कभी जवाहरलाल नेहरू ने किया था। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्पष्ट कर दिया है कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते।

पाकिस्तान के साथ सभी व्यापारिक रास्ते बंद कर दिए गए हैं, क्योंकि ट्रेड और टेरर एक साथ नहीं चल सकते। अगर पकिस्तान ने आतंक फैलाने की हिमाकत की तो जवाब ऐसा मिलेगा जो उसकी पुश्तें याद करेंगी।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने यह निर्णय लिया कि यह केवल केंद्र का मसला नहीं है, बल्कि पूरे देश का विषय है। इसीलिए सभी दलों के सांसदों का एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल बनाकर उन्हें दुनिया के देशों में भेजा जाएगा, ताकि पाकिस्तान का आतंकवादी चेहरा वैश्विक मंच पर उजागर किया जा सके। जब यह निर्णय हुआ, तो उद्धव सेना के एक प्रमुख नेता ने कहा, ये कौन सी बारात जा रही है, मुझे समझ में नहीं आता। यह वही पार्टी है, जो कभी बाला साहब ठाकरे की पार्टी हुआ करती थी, यदि आज बाला साहब होते तो ऑपरेशन सिंदूर के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को गले लगा लेते। यह दुर्भाग्य है कि उद्धव सेना के नेता अब ऐसे राष्ट्रहित के प्रयासों को बारात कहने का काम कर रहे हैं। ▪

'ऑपरेशन सिंदूर' आतंकियों को जवाब -श्री विष्णुदत्त शर्मा

- **प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी आतंकवाद को जड़-मूल से नष्ट करने को संकल्पित।**
- **भारत ने आतंकवाद को नेस्तनाबूद किया, देश एक-एक आतंकी को तलाशकर खत्म करेगा।**

प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में एक भी आतंकी दुनिया के किसी कोने में होगा हम ढूंढ-ढूंढ करके मारेंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमें गर्व है कि भारत की तीनों सेनाओं ने पाकिस्तान के लाहौर और रावलपिंडी में घुसकर सारे आतंकवादियों के शिविरों को नेस्तनाबूद करने का पराक्रम किया है। यह कार्रवाई पाकिस्तान प्रेरित आतंक को समूल नष्ट करने के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्प की पूर्ति की दिशा में बड़ा कदम है। हमारे सैनिकों ने भारत माता की जय और जयहिंद के जयकारों के साथ इस ऑपरेशन को सफल बनाया है। भारतीय सेना की कार्रवाई में अनेक आतंकवादी और उनके आका मारे गए हैं। हमारी सेना के पाकिस्तान और पीओके में की गई इस कार्रवाई में आतंकियों को चुन-चुनकर ठिकाने लगाया है।

ऑपरेशन सिंदूर पाकिस्तान के आतंकियों को भारतीय सेना का जवाब है, जिन्होंने पहलगाम हमले में हमारी बहनों के माथे से सिंदूर मिटा दिया था। आंतकवादियों ने उस समय उन बहनों से कहा था कि ये संदेश मोदी को दे देना। अब इस कार्रवाई के माध्यम से हमारे जांबाज सेना के जवानों ने उन आतंकियों और उनके आकाओं को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का संदेश दे दिया है। अब पाकिस्तान ने अगर कोई हरकत की तो मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। ▪

आतंकवाद के विरूद्ध नीति का उद्घोष - डॉ. यादव

- **यह युग आतंकवाद का नहीं है, यह एक वाक्य काफी है भारत का संदेश समझने को।**
- **देश की जनता प्रधानमंत्री श्री मोदी का आभार मानती है।**
- **पहलगाम हमले में बहनों का सिंदूर उजाड़ने वालों का भारत ने किया हिसाब चुकता।**
- **मध्यप्रदेश, प्रधानमंत्री की विकास यात्रा में कदम से कदम मिलाकर चलने को है तैयार।**

दुनिया बदलते दौर का भारत देख रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देशवासियों को भरोसा दिलाया है और उन्हें आत्मविश्वास से भर दिया है। ऊर्जा से लबरेज कर दिया है। उन्होंने उत्साह और उमंग से सेनाओं का हौसला भी बढ़ाया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के नागरिकों को संबोधित करते हुए भारत की आतंकवाद के विरूद्ध नीति का उद्घोष किया है। भारत ने आपरेशन सिंदूर सिर्फ स्थगित किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा है कि यह युग युद्ध का नहीं है, लेकिन यह युग आतंकवाद का भी नहीं है। यह एक वाक्य भारत का संदेश समझने के लिए काफी है। भारत ने पहलगाम की घटना में जिन बहनों का सिंदूर उजड़ा उसका हिसाब पाकिस्तान से चुकता करने का कार्य किया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत एक मजबूत अर्थ व्यवस्था बना है, साथ ही राष्ट्रवासियों ने धारा 370 को समाप्त होते देखा है। राष्ट्रहित से जुड़े ऐसे कठिन निर्णय प्रधानमंत्री श्री मोदी ने लिए, जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती।

जो मार भारत ने पाकिस्तान पर मिसाइलों से की उससे कहीं अधिक मार प्रधानमंत्री श्री मोदी के शब्दों से हुई है और इस संबोधन ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और सेना अध्यक्ष सहित अन्य दुश्मनों की जमीन खिसका दी है।

दुनिया बदलते दौर का भारत देख रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देशवासियों को भरोसा दिलाया है और उन्हें आत्मविश्वास से भर दिया है। ऊर्जा से लबरेज कर दिया है। उन्होंने उत्साह और उमंग से सेनाओं का हौसला भी बढ़ाया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के सक्षम नेतृत्व में सेना ने सिर्फ 5 दिन में जबरदस्त प्रतिकार करते हुए पाकिस्तान की कमर तोड़ने का कार्य किया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के शब्दों से यह स्पष्ट हो गया है कि आतंकवाद को भारत कतई बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने पाकिस्तान को खरी-खरी सुनाते हुए यह भी कहा कि पाकिस्तान आतंकवाद को खाद-पानी देता रहा है। आतंकवादियों के जनाजे पर पाकिस्तान का झंडा चढ़ते हुए देखा गया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मेड इन इंडिया की दृष्टि से भारत की सर्वोच्च सुरक्षा का आव्हान किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि जब बात होगी तो पीओके (पाक ऑक्युपाईड कश्मीर) पर होगी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में न्यूक्लियर बम के नाम पर पाकिस्तान द्वारा ब्लैक मेल किया जाना असंभव है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के एक-एक शब्द से प्रत्येक भारतीय का सीना छप्पन इंच करने का कार्य किया है। ▪

दुर्लभ संकल्प-शक्ति के अतुल्य नायक मोदीजी

विष्णुदत्त शर्मा

अखंड पराक्रम के महायात्री मोदीजी।

सन् 2014 के पहले भारतीय जनमानस ने धीरे-धीरे यह मान लिया था कि आतंकवादी हमले हमारी नियति हैं और इसके बदले में कुछ किया नहीं जा सकता। यह धारणा तब और प्रबल हो गई जब मुंबई में 26/11 का हमला हुआ। पाकिस्तान से आये आतंकियों ने हमारे देश की आर्थिक राजधानी का सरेआम सीना छलनी कर दिया था।

सारा देश आक्रोश से भर गया था, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री की लाचार चुप्पी ने देश की जनता और सेना दोनों का मनोबल धराशायी कर दिया था। उसके बाद भी आतंकी घटनाएँ होती रहीं, लेकिन केंद्र सरकार ने प्रतिकार नहीं किया और न ही उन निर्मम कुकृत्यों के प्रति भारतीय नेतृत्व में कभी बेचैनी देखी गई। उलटे पाकिस्तान से शांति की गुहार लगाते हुए कश्मीर के अलगाववादी संगठनों और आतंकियों के आकाओं की खुशामद होती रही। फलतः भारतीय जनमानस में यह हीनता पैठ कर गई थी कि आतंक के खिलाफ अब ठोस कार्यवाई एक दिवास्वप्न है। यह धारणा और बलवती होती गई कि आतंकवाद से हमारे निर्दोष नागरिक मारे जाते रहेंगे और दोषियों का कुछ नहीं किया जा सकता।

26 मई 2014 को नरेंद्र मोदी जी के भारत के प्रधानमंत्री बनते ही यह धारणा टूट गई। साल 2016 में उरी में हमारे सैन्य टुकड़ी पर हुए आतंकी हमले का भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक करके मुंहतोड़ जवाब देकर अपने जवानों की मौत का बदला लिया। वहीं, 2019 में पुलवामा अटैक के बाद एयर स्ट्राइक करके भारतीय सैन्य बलों ने डंके की चोट पर पाकिस्तान में घुसकर आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूत किया। इन दोनों कार्यवाहियों ने पाकिस्तान सहित दुनिया की सभी आतंकी ताकतों को यह संदेश दे दिया था कि यह नया भारत है, जो सिर्फ बयानबाजी नहीं करता, बल्कि छेड़ने पर बमबारी करने में भी नहीं हिचकता है।

साल 2016 में उरी में हमारे सैन्य टुकड़ी पर हुए आतंकी हमले का भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक करके मुंहतोड़ जवाब देकर अपने जवानों की मौत का बदला लिया।

वहीं, 2019 में पुलवामा अटैक के बाद एयर स्ट्राइक करके भारतीय सैन्य बलों ने डंके की चोट पर पाकिस्तान में घुसकर आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूत किया।

पिछले एक दशक से पूरे विश्व को ज्ञात है कि भारत अब पीड़ितों की तरह मुंह मोड़कर नहीं बैठता, अपितु वह घर में घुसकर जवाब भी देता है। यह अपने हिसाब से आतंकी अड्डों को मिट्टी में मिलाता है। इसकी सेनाएँ कोई सजावटी सामान नहीं हैं, यह साहस, शौर्य, सामर्थ्य की वैश्विक मिसाल हैं।

दुर्भाग्य से 22 अप्रैल को पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकियों ने एक बार फिर हमारी छाती को छलनी किया, लेकिन वे भूल गए थे कि नया भारत अभी भी नरेंद्र मोदी के हाथों में ही है और दस साल में हमारी सेना का सामर्थ्य भी कई गुना बेहतर हो चुका है। इस कल्पना से ही रूह काँप जाती है कि 22 अप्रैल की नृशंस व बर्बर आतंकी घटना (जिसमें धर्म पूछकर लोगों को मारा गया) के समय यदि केंद्र में कांग्रेस की सरकार होती तो क्या होता? निंदा, विलाप और बयानबाजी के वही पुराने राग गाये जाते जो पिछले कई दशकों तक सुनाए जाते रहे, लेकिन देश की माटी का यह सौभाग्य है कि प्रधानमंत्री की कुर्सी पर नरेंद्र मोदी जी जैसा निर्णायक, निर्भीक एवं निडर नेतृत्व है, जिसने देश को न झुकने देने की सौगन्ध खायी हुई है, जिसने भारत की बेटियों की लाज बचाने का संकल्प लिया है, जिसने देश की एकता और अखंडता के लिए अपना सारा जीवन मां भारती को सौंप दिया है। जिसकी आतंकी देशों से निरर्थक बातचीत में कोई रुचि नहीं है। जिसने पाक अधिकृत कश्मीर को भारत में लाने का सपना पाला हुआ है। जिसका मत एकदम स्पष्ट है, आतंकवाद और बातचीत एक साथ नहीं हो

सकती, आतंकवाद और व्यापार एक साथ नहीं चल सकते और पानी व खून भी एक साथ नहीं बह सकता। जिसने देश की सीमाओं को अभेद्य बनाने का बीड़ा उठाया है। सौभाग्य से आज देश के पास ऐसा प्रधानमंत्री है, जिसने समूचे विश्व के समक्ष भारत का 'न्यू नार्मल' रख दिया है, जिसमें आतंकवाद पर घड़ियाली आँसू नहीं बहेगा, बल्कि आतंकियों और उनके आकाओं का खून बहेगा एवं उनके फन उनकी माँद में घुसकर कुचले जाएँगे। पहलगाम की बर्बरता से सारा देश आहत हुआ, उसका बदला लेने के लिए संकल्पित प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने ऑपरेशन सिंदूर चलाया और आतंकवादियों को मिट्टी में मिलाने के लिए भारतीय सेनाओं को पूरी छूट दी। अपने संकल्प को सिद्ध करते हुए मोदी सरकार ने भारत की ओर आँख उठाने का अंजाम आज हर आतंकी और उनके संगठनों को बता दिया। ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सेना ने अदम्य साहस दिखाते हुए पाकिस्तान के उन अड्डों का नामो-निशान मिटा दिया, जहां से भारत की बेटियों का सिंदूर उजाड़ने की ट्रेनिंग दी जाती थी।

भारत की सेनाओं ने पाकिस्तान में आतंक के ठिकानों पर, उनके ट्रेनिंग सेंटर्स पर सटीक प्रहार किया। वैश्विक ताकतों को भी यह भरोसा नहीं था कि भारत पड़ोसी पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को चंद मिनटों में धूल में मिला सकता है, जो पाकिस्तान पहले किसी आतंकी घटना के बाद सीना तानकर चलता था, उसी पाकिस्तान ने इस बार भारत का रुख देखकर, भारतीय सेना और सरकार की संकल्प शक्ति के आगे तुरंत घुटने टेक दिए और ऑपरेशन सिंदूर रोकने की गुहार लगाने लगा। अमेरिकी रक्षा विभाग पेंटागन के एक विशेषज्ञ अधिकारी माइकल रुबिन ने इसका वर्णन करते हुए कहा कि पाकिस्तान एक डरे हुए कुत्ते की तरह दुम दबाकर भाग रहा था।

निःसंदेह कुछ दशकों से आतंकवाद का घाव हमारे माथे पर कलंक की तरह चिपक गया था और हम सारी दुनिया में घूम-घूमकर केवल पीड़ित की तरह उस घाव पर मरहम लगाने की गुहार लगाते फिरते थे। कांग्रेस की सरकारों ने सात दशक यही किया, उसके नेता अपने देश की सेना के हाथ बाँधकर विश्वभर में आतंकवाद से पीड़ित होने का राग अलापते थे और दुनिया हमारी निर्दोष मौतों का तमाशा देखती थी। हीनता और निरीहता से ग्रसित पिछली सरकारों ने आतंकवाद की कमर तोड़ने की बजाय उन्हें ही मजबूत किया।

अब से 11 वर्ष पहले तक पाकिस्तानी आतंक की त्रासदी झेल रहा भारत, तुष्टिकरण की राजनीति के कारण सारे विश्व के समक्ष बौना दिखने लगा था। यह देश आत्मरक्षा का सदियों पुराना पाठ भी भुला चुका था। जबकि भारत की परंपरा में आत्म-रक्षा, धर्म-रक्षा, देश-रक्षा और स्त्री-रक्षा के लिए हथियार उठाने को भी धर्म बताया गया है। अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है, लेकिन धर्म की रक्षा के लिए हिंसा भी धर्म के समान ही महत्वपूर्ण है। श्रीमद्भगवत गीता के इस मूल संदेश को हमारी सेनाएं तो अच्छी तरह से जानती रही हैं लेकिन पूर्ववर्ती सरकारों ने उनके हाथ बांध रखे थे। जब ऑपरेशन सिंदूर के जरिए उन्हें खुली छूट मिली तो सेना ने न केवल पाकिस्तानी आतंकियों को सबक सिखाया बल्कि, भारत की स्वदेशी रक्षा तकनीक, साहस, शौर्य, सामर्थ्य, संकल्प, एकजुटता का नया मानक गढ़ दिया।

सेना ने 'यथा धर्मे तथा बले', इस मंत्र को साकार कर भारत के अभेद्य रक्षा कवच का शानदार प्रदर्शन करके भारतीय शक्ति को सिद्ध किया है। उसने विश्व को बता दिया है कि यही भारत है और यही भारत की सेना है। आज एक तरफ सारा देश तो भारतीय सेना की शौर्यगाथा गा रहा है तो दूसरी तरफ भारतीय सैन्य क्षमता की सराहना सारी दुनिया भी कर रही है।

यह ऐसा समय है जब पहली बार पीएम मोदी के नेतृत्व में चले ऑपरेशन सिंदूर ने कई दशकों से भारतीयों के माथे चिपके घावों को भर दिया है। मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनमानस पीड़ित भाव से बाहर आकर देश के अतुल्य पराक्रम और गौरव का प्रोत्साहन कर रहा है। न्याय की अखंड प्रतिज्ञा व इच्छा शक्ति देखकर देश अपनी सरकार व सेना की दृढ़ता, साहस एवं शौर्य का साक्षी बनकर आगे बढ़ रहा है। मोदी शासन के 11 साल के दुर्लभ संकल्प से सिद्धि की महान यात्रा में यह राष्ट्र जल-थल-नभ में सशक्त, संप्रभु, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बना है, यह भरोसा 140 करोड़ देशवासियों में गहरा हुआ है। ▪

(लेखक- भाजपा मध्य प्रदेश के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से सांसद हैं।)

मोदीजी को म. प्र. मंत्रि-परिषद की बधाई

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पाकिस्तान के विरुद्ध संचालित ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए मध्य प्रदेश मंत्रि-परिषद ने बधाई दी। तकनीक का उपयोग करते हुए, कम समय में तीव्र गति से की गई कार्रवाई से विश्व, भारत के बदलते दौर के नेतृत्व की क्षमता से परिचित हुआ है, यह सभी भारतवासियों के लिए सौभाग्य का विषय है। ▪

‘ऑपरेशन सिंदूर’ शौर्य, पराक्रम का प्रतीक - डॉ. मोहन यादव

- भारतीय सेना के शौर्य, पराक्रम और अदम्य साहस पर संपूर्ण देश को गर्व है।
- देश की सीमाओं की रक्षा के लिए हर भारतीय अपना सर्वस्व बलिदान कर सकते हैं।
- प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व व रणनीति ने दुश्मन को घुटने टेकने पर मजबूर किया।
- सम्राट विक्रमादित्य ने भी विदेशी आक्रमणकारियों को पराजित किया था।
- देश के इतिहास में सबसे कम समय में जीत ऑपरेशन सिंदूर में मिली है।

भारतवासियों ने एकजुट होकर विश्व को यह संदेश दिया कि दुश्मन कितना ही चालाक क्यों न हो हम अपनी एकता को अक्षुण्ण रखेंगे।

राष्ट्रीय एकता सर्वोपरि है, इसे यदि शत्रु हानि पहुंचाने की कोशिश करेगा तो उसे मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की सेना ने पाकिस्तान में दाखिल होकर दुश्मनों को नेस्तानाबूत किया। भारतीय सेना के शौर्य, पराक्रम और अदम्य साहस पर संपूर्ण देश को गर्व है। अपने देश की सीमाओं की रक्षा के लिए हर भारतीय अपना सर्वस्व बलिदान कर सकते हैं। ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से दुनिया के सामने हमारी सेनाओं ने साहस और शौर्य के प्रमाण दिए हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व व रणनीति ने दुश्मन को घुटने टेकने पर मजबूर किया।

भारतवासियों ने एकजुट होकर विश्व को यह संदेश दिया कि दुश्मन कितना ही चालाक क्यों न हो हम अपनी एकता को अक्षुण्ण रखेंगे। राष्ट्रीय एकता सर्वोपरि है, इसे यदि शत्रु हानि पहुंचाने की कोशिश करेगा तो उसे मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

दो हजार वर्ष पहले सम्राट विक्रमादित्य ने अपने पराक्रम से विदेशी आक्रमणकारियों को पराजित कर देश से खदेड़ दिया था। आज फिर से हमारी सेना ने वही शौर्य और पराक्रम दिखाते हुए दुश्मन देश को धूल चटाने का कार्य किया है। राष्ट्र की वेदी पर अपने प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों के परिवार जनों को प्रणाम। तिरंगा हमारे देश कि आन-बान और शान है, इसकी मर्यादा का सदैव पूरा भारत ध्यान रखता है। तिरंगा यात्राओं के माध्यम से पूरी दुनिया में संदेश जा रहा है कि हम सभी भारतीय एक जुट हो कर समय आने पर देश कि रक्षा के लिए सर्वस्व बलिदान कर सकते हैं। तिरंगा यात्रा देश की सेनाओं की सफलता, सम्मान और उनके पराक्रम को सम्मान देने के लिए देश की जनता निकाल रही है।

1857 से लेकर 1947 तक देश ने आजादी के लिए संघर्ष किया। हजारों की संख्या में वीर सपूत बलिदान हुए। 1857 के पहले भी देश ने कई युद्ध लड़े और अपने शौर्य और पराक्रम से जीते हैं। लेकिन सैकड़ों सालों के इतिहास में ऑपरेशन सिंदूर में सबसे कम समय में भारत ने दुश्मन को हराकर घुटने टेकने पर मजबूर किया है। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी सेनाओं के शौर्य, पराक्रम का प्रतीक है। पूरा देश सेना के साथ पूरी एकजुटता के साथ खड़ा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की रणनीति ही है कि चार दिन में ही आतंकवाद और उसके आकाओं को भारत ने सबक सिखा दिया। ऑपरेशन सिंदूर के जरिए दुनिया ने हमारी सेनाओं का पराक्रम देखा है। इस तरह के पराक्रम वाली सेना के रहते हुए कोई भी देश भारत की ओर आंख उठाकर नहीं देख सकता। तिरंगा यात्रा देश की एकता व संकल्प शक्ति का प्रतीक है। देश की एकजुटता हमारे गौरवशाली अतीत की याद दिलाती है। मध्यप्रदेश सहित संपूर्ण देश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश की सेनाओं के साथ खड़ा है। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर अमेरिका के राष्ट्रपति ने पहले कही हुई अपनी बात में सुधार किया है। यह हमारी सैन्य शक्ति, रणनीति और वैश्विक स्तर पर देश की बढ़ती साख को दर्शाता है। ▪

अहिल्याबाई के सुशासन को अपना रही भाजपा सरकारें - विष्णुदत्त शर्मा

- रानी अहिल्याबाई के आदर्शों और विचारों को जन-जन तक पहुंचाना है।
- लोकमाता रानी अहिल्याबाई के आदर्शों को जमीन पर उतारना है।
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी रानी अहिल्याबाई की तरह व्यवस्था को जनता के लिए सरल बनाया है।
- अहिल्याबाई होल्कर के समाज में दिए गए योगदान को जन-जन तक पहुंचाएगी भाजपा।

रानी अहिल्याबाई ने सुशासन के क्षेत्र में जो मापदंड स्थापित किए, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा की सरकारें उन्हें अपना रही हैं।

लोकमाता रानी अहिल्याबाई की 300 वीं जन्मजयंती के अवसर पर हमें उनके आदर्शों, उनके कामों, उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाना है। कठिन परिस्थितियों के बीच सुशासन कैसे चलाया जा सकता है, इसका उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया। उन्होंने पूरे समर्पण के साथ जनता की सेवा की और वे किसी से डरती नहीं थी। उनका व्यक्तित्व, मन और हृदय विशाल था। उन्होंने 300 साल पहले औद्योगीकरण और रोजगार के बारे में सोचा। सैनिकों और उनके परिवारों की भलाई के लिए कदम उठाए। उन्होंने अपने शासन में समावेशी सिद्धांत को पोषित किया, इसलिए उनके शासन में हर व्यक्ति को अहसास रहता था कि महारानी उसकी चिंता करती हैं। उन्होंने अपने निर्णयों से यह साबित किया कि कानून के सामने सब बराबर हैं। उन्होंने अपनी नीतियों में मानव अधिकारों का संरक्षण किया और हर व्यक्ति को न्याय मिल सके, इसके लिए न्यायालय स्थापित करने तथा न्यायाधीशों के प्रशिक्षण पर जोर दिया। न्यायालयों की मानीटरिंग की व्यवस्था की और वे नियमित समीक्षा भी करती थीं। उन्होंने खाद्य सुरक्षा नीति बनाई और यह स्थापित किया कि जहां धर्म है, वहीं न्याय है। शासन और धर्म अलग नहीं है। उन्होंने अपने कामों से इतिहास में एक आदर्श स्थापित किया। हम सभी कार्यकर्ताओं को, उनके आदर्शों को जनता तक पहुंचाना है।

रानी अहिल्याबाई ने सुशासन के क्षेत्र में जो मापदंड स्थापित किए, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा की सरकारें उन्हें अपना रही हैं। उन्होंने 300 साल पहले जिस वूमन लैड डेवलपमेंट की बात की थी, वही सोच प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी रखते हैं।

रानी अहिल्याबाई के शासन में जनता की पसंद और नापसंद योजनाओं में दिखाई देती थी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी 'मन की बात' कार्यक्रम में जिन बिंदुओं को शामिल करते हैं, वो वास्तव में जनता की ही बातें होती हैं। उन्होंने गांवों को सुशासन का अंग मानते हुए पंचायतों को न्याय के अधिकार दिये। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी पंचायतों को अधिकार संपन्न बना रहे हैं। रानी अहिल्याबाई ने अपने शासन में पारदर्शिता के लिए अनेक कदम उठाए। उन्होंने स्वयं की संपत्ति से खासगी ट्रस्ट बनाया। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने भी ऐसा पारदर्शी सिस्टम बनाया है कि आज जनता के लिए भेजे गए एक रुपये में से पूरे पैसे जनता के पास पहुंचते हैं।

देवी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा समाज में दिए गए योगदान को भाजपा जन-जन तक पहुंचाएगी। भाजपा मध्यप्रदेश देवी अहिल्याबाई होल्कर की शासन व्यवस्था कैसे आज देश और प्रदेश में स्थापित है, उसे लेकर भाजपा जन-जन तक पहुंचेगी। प्रदेश भर के जिलों में कार्यकर्ता देवी अहिल्याबाई होल्कर के व्यक्तित्व और शासन व्यवस्था, सुशासन, महिला सशक्तिकरण सहित 300 वर्ष पूर्व के उल्लेखनीय कार्यों को जनता के बीच रखेंगे। देवी होल्कर ने समाज, महिला, संस्कृति, देश और धर्म को लेकर जो कार्य किए हैं, उन सभी विषयों पर चर्चा की जाएगी। इस दौरान देवी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा महिला सशक्तिकरण को लेकर किए गए कार्यों को बताने निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधियों के साथ कार्यक्रम आयोजित होंगे।

उनसे जुड़ी हुई विरासत को नाट्य प्रस्तुतियां, प्रदर्शनियों व अन्य कार्यक्रमों के जरिए जनता तक पहुंचाया जाएगा। विधवा विवाह प्रथा देवी अहिल्याबाई होल्कर ने अपने शासनकाल में शुरू की थी। उस समय होल्कर की सेना में लगे सैनिकों की विधवाओं को रोजगार के लिए महेश्वर साड़ी जैसे रोजगार की व्यवस्था की थी। आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार और प्रदेश में हमारी सरकारें उसी तरह महिलाओं के स्वरोजगार के लिए कई अभियान चला रही हैं। ▪

अहिल्याबाई ने सांस्कृतिक उत्थान किया

महाराज विक्रमादित्य और सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में जिस तरह से सांस्कृतिक उत्थान का काम हुआ, वैसा ही काम रानी अहिल्याबाई ने भी किया।

आज वही काम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी कर रहे हैं। इस अभियान के दौरान हमें इनके कामों को उदाहरणपूर्वक एक-दूसरे से जोड़ते हुए जनता के सामने रखना है।

शिवप्रकाश जी

- **उदाहरणों के माध्यम से कार्यकर्ता रानी अहिल्याबाई होल्कर के कामों को जनता तक पहुंचाएं।**
- **जब पश्चिमी देशों में महिलाओं से घृणा की जाती थी, तब भारत में पुण्य श्लोका शासक थीं रानी अहिल्याबाई।**
- **महाराज विक्रमादित्य, सम्राट हर्षवर्धन की श्रृंखला की कड़ी थीं रानी अहिल्याबाई।**

रानी अहिल्याबाई ने सेना के आवागमन से होने वाले फसलों के नुकसान के लिए मुआवजे का प्रावधान किया। रानी अहिल्याबाई ने महिलाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए महेश्वर साड़ी उद्योग स्थापित किया। इस साड़ी को प्रमोट करने के लिए वे हर विदेशी अतिथि को यही साड़ी उपहार में देती थीं और स्वयं भी यही पहनती थीं। उनका जीवन त्यागपूर्ण था और अपने राज्य को भगवान शिव का राज्य मानकर धर्मनिष्ठ शासन करती थीं। रानी अहिल्याबाई ने जनजातीय समाज के उत्थान के लिए अनेक कदम उठाए। हमें रानी अहिल्याबाई के कामों को स्थानीय उदाहरण खोजकर जनता के सामने रखना है। आज के युवाओं को हमारे धर्म और संस्कृति की पर्याप्त जानकारी नहीं है। रानी अहिल्याबाई के उदाहरणों के माध्यम से युवाओं, युवतियों, महिलाओं, बुद्धिजीवियों तथा समाज के अन्य वर्गों को जानकारी देना है।

महाराज विक्रमादित्य और सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में जिस तरह से सांस्कृतिक उत्थान का काम हुआ, वैसा ही काम रानी अहिल्याबाई ने भी किया। आज वही काम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी कर रहे हैं।

इस अभियान के दौरान हमें इनके कामों को उदाहरणपूर्वक एक-दूसरे से जोड़ते हुए जनता के सामने रखना है। भारत के बारे में यह भ्रम फैलाया जाता है कि यहां महिलाओं को वेद पढ़ने की अनुमति नहीं थी, शिक्षा नहीं दी जाती थी, पर्दे में रहना पड़ता था। लेकिन ये देश भूल जाते हैं कि पश्चिमी देशों में जब महिलाओं से घृणा की जाती थी, तब भारत में रानी अहिल्याबाई के रूप में एक महिला शासन संभाल रहीं थीं। लैंगिक समानता का ढिंढोरा पीटने वाले पश्चिमी देशों में तो महिलाओं को वोट देने का अधिकार भी आंदोलन के बाद मिला।

न्यूजीलैंड में 1893, इटली में 1945, कनाडा में 1917, जर्मनी में 1918, इंग्लैंड में 1918 में सिर्फ 30 महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला। इसी तरह आस्ट्रिया व नीदरलैंड में 1919 तथा अमेरिका में 1920 में मतदान का अधिकार मिला। लेकिन भारतवर्ष में इसके लिए महिलाओं को कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा, हमारे संविधान में ही इसका प्रावधान है।

पश्चिमी देशों में तो महिलाओं को बराबरी के अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ा, लेकिन भारतवर्ष में महिलाओं के लिए यह संघर्ष भी पुरुषों ने ही किया।

चाहे सती प्रथा का अंत हो या महिला शिक्षा का विषय, राजा राममोहन राय से लेकर महात्मा फुले जैसे समाज सुधारकों ने इसके लिए संघर्ष किया। ▪

Women Led Development
विकास की धुरी

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर, ये नाम सुनते ही मन में श्रद्धा का भाव उमड़ पड़ता है। उनके महान व्यक्तित्व के बारे में बोलने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। देवी अहिल्याबाई प्रतीक हैं, कि जब इच्छाशक्ति होती है, दृढ़ प्रतिज्ञा होती है, तो परिस्थितियां कितनी ही विपरीत क्यों ना हों, परिणाम लाकर दिखाया जा सकता है।

- **लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर का नाम हमें श्रद्धा से भर देता है, उनके महान व्यक्तित्व के बारे में कहने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं।**
- **देवी अहिल्याबाई भारत की विरासत की महान संरक्षक थीं।**
- **माता अहिल्याबाई राष्ट्र निर्माण में हमारी महिला शक्ति के अमूल्य योगदान का प्रतीक हैं।**
- **हमारी सरकार महिला-नेतृत्व विकास के विजन को विकास का आधार बना रही है।**
- **नमो ड्रोन दीदी अभियान ग्रामीण महिलाओं को प्रोत्साहित कर रहा है, उनकी आय बढ़ा रहा है।**
- **हमारे सभी प्रमुख अंतरिक्ष मिशनों में बड़ी संख्या में महिला वैज्ञानिक काम कर रही हैं।**
- **ऑपरेशन सिंदूर भी हमारी नारी शक्ति की ताकत का प्रतीक बन गया है।**

सबसे पहले मां भारती को, भारत की मातृशक्ति को प्रणाम। लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर जी की तीन सौ वीं जन्म जयंती है।140 करोड़ भारतीयों के लिए ये अवसर प्रेरणा का है, राष्ट्र निर्माण के लिए हो रहे भागीरथ प्रयासों में अपना योगदान देने का है। देवी अहिल्याबाई कहती थीं, कि शासन का सही अर्थ जनता की सेवा करना और उनके जीवन में सुधार लाना होता है। यह कार्यक्रम, उनकी इस सोच को आगे बढ़ाता है। इंदौर मेट्रो की शुरुआत हुई है। दतिया और सतना भी अब हवाई सेवा से जुड़ गए हैं। ये सभी प्रोजेक्ट मध्य प्रदेश में सुविधाएं बढ़ाएंगे, विकास को गति देंगे और रोजगार के अनेक नए अवसर बनाएंगे।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर, ये नाम सुनते ही मन में श्रद्धा का भाव उमड़ पड़ता है। उनके महान व्यक्तित्व के बारे में बोलने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। देवी अहिल्याबाई प्रतीक हैं, कि जब इच्छाशक्ति होती है, दृढ़ प्रतिज्ञा होती है, तो परिस्थितियां कितनी ही विपरीत क्यों ना हों, परिणाम लाकर दिखाया जा सकता है। ढाई-तीन सौ साल पहले, जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, उस समय ऐसे महान कार्य कर जाना, कि आने वाली अनेक पीढ़ियां उसकी चर्चा करें, ये कहना तो आसान है, करना आसान नहीं था।

लोकमाता अहिल्याबाई ने प्रभु सेवा और जन सेवा, इसे कभी अलग नहीं माना। कहते हैं, वे हमेशा शिवलिंग अपने साथ लेकर चलती थीं। उस चुनौतीपूर्ण कालखंड में एक राज्य का नेतृत्व कांटों से भरा ताज, कोई कल्पना कर सकता है, कांटों से भरा ताज पहनने जैसा वो काम, लेकिन लोकमाता अहिल्याबाई ने अपने राज्य की समृद्धि को नई दिशा दी। उन्होंने गरीब से गरीब को समर्थ बनाने के लिए काम किया। देवी अहिल्याबाई भारत की विरासत की बहुत बड़ी संरक्षक थीं। जब देश की संस्कृति पर, हमारे मंदिरों, हमारे तीर्थ स्थलों पर हमले हो रहे थे, तब लोकमाता ने उन्हें संरक्षित करने का बीड़ा उठाया, उन्होंने काशी विश्वनाथ सहित पूरे देश में हमारे अनेकों मंदिरों का, हमारे तीर्थों का पुनर्निर्माण किया। और ये मेरा सौभाग्य है कि जिस काशी में लोकमाता अहिल्याबाई ने विकास के इतने काम किए, उस काशी ने मुझे भी सेवा का अवसर दिया है। आज अगर आप काशी विश्वनाथ महादेव के दर्शन करने जाएंगे, तो वहां आपको देवी अहिल्याबाई की मूर्ति भी वहाँ पर मिलेगी।

माता अहिल्याबाई ने गवर्नेंस का एक ऐसा उत्तम मॉडल अपनाया, जिसमें गरीबों और वंचितों को सबसे ज्यादा प्राथमिकता दी गई।

रोजगार के लिए, उद्यम बढ़ाने के लिए उन्होंने अनेक योजनाओं को शुरू किया। उन्होंने कृषि और वन-उपज आधारित कुटीर उद्योग और हस्तकला को प्रोत्साहित किया। खेती को बढ़ावा देने के लिए, छोटी-छोटी नहरों की जाल बिछाई, उसे विकसित किया, उस जमाने में 300 साल पहले। जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने कितने ही तालाब बनवाए और आज तो हम लोग भी लगातार कह रहे हैं, catch the rain, बारिश के एक-एक बूंद पानी को बचाओ। देवी अहिल्या जी ने ढाई सौ-तीन सौ साल पहले हमें ये काम बताया था। किसानों की आय बढ़ाने के लिए उन्होंने कपास और मसालों की खेती को प्रोत्साहित किया। आज ढाई सौ-तीन सौ साल के बाद भी हमें बार-बार किसानों को कहना पड़ता है, कि crop diversification बहुत जरूरी है। हम सिर्फ धान की खेती करके या गन्ने की खेती करके अटक नहीं सकते, देश की जरूरतों को, सारी चीजों को हमें diversify करके उत्पादित करना चाहिए। उन्होंने आदिवासी समाज के लिए, घुमन्तु टोलियों के लिए, खाली पड़ी जमीन पर खेती की योजना बनाई। ये मेरा सौभाग्य है, कि मुझे एक आदिवासी बेटी, आज जो भारत के राष्ट्रपति पद पर विराजमान है, उनके मार्गदर्शन में मेरे आदिवासी भाई-बहनों की सेवा करने का मौका मिला है। देवी अहिल्या ने विश्व प्रसिद्ध महेश्वरी साड़ी के लिए नए उद्योग लगाए और बहुत कम लोगों को पता होगा, कि देवी अहिल्या जी हुनर की पारखी थी और वो जूनागढ़ से, (गुजरात) कुछ परिवारों को महेश्वर लाईं और उनको साथ जोड़कर के, आज से ढाई सौ-तीन सौ साल पहले ये महेश्वरी साड़ी का काम आगे बढ़ाया, जो आज भी अनेक परिवारों को वो गहना बन गया है, और जिससे हमारे बुनकरों को बहुत फायदा हुआ।

देवी अहिल्याबाई को कई बड़े सामाजिक सुधारों के लिए भी हमेशा याद रखा जाएगा। आज अगर बेटियों की शादी की उम्र की चर्चा करें, तो हमारे देश में कुछ लोगों को सेक्यूलरिज्म खतरे में दिखता है, उनको लगता है ये हमारे धर्म के खिलाफ है। ये देवी अहिल्या जी देखिए, मातृशक्ति के गौरव के लिए उस जमाने में बेटियों की शादी की उम्र के विषय में सोचती थीं। उनकी खुद की शादी छोटी उम्र में हुई थी, लेकिन उनको सब पता था, बेटियों के विकास के लिए कौन सा रास्ता होना चाहिए। ये देवी अहिल्या जी थीं, उन्होंने महिलाओं का भी संपत्ति में अधिकार हो, जिन स्त्रियों के पति की असमय मृत्यु हो गई हो, वो फिर विवाह कर सकें, उस कालखंड में ये बातें करना भी बहुत मुश्किल होता था। लेकिन देवी अहिल्याबाई ने इन समाज सुधारों को भरपूर समर्थन दिया। उन्होंने मालवा की सेना में महिलाओं की एक विशेष टुकड़ी भी बनाई थी। ये पश्चिम की दुनिया के लोगों को पता नहीं है। हमें कोसते रहते हैं, हमारी माताओं-बहनों के अधिकारों के नाम पर हमें नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। ढाई सौ-तीन सौ साल पहले हमारे देश में सेना में महिलाओं का होना,

महिला सुरक्षा के लिए उन्होंने गांवों में नारी सुरक्षा टोलियां, ये भी बनाने का काम किया था। यानी माता अहिल्याबाई, राष्ट्र निर्माण में हमारी नारी शक्ति के अमूल्य योगदान का प्रतीक हैं। समाज में इतना बड़ा परिवर्तन लाने वाली देवी अहिल्या जी को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं, उनके चरणों में प्रणाम करता हूं और मैं उनसे प्रार्थना करता हूं, कि आप जहां भी हों, हम सभी पर अपना आशीर्वाद बरसाए।

देवी अहिल्या का एक प्रेरक कथन है, जो हम कभी भूल नहीं सकते। और उस कथन का अगर मोटे-मोटे शब्दों में मैं कहूं, उसका भाव यही था, कि जो कुछ भी हमें मिला है, वो जनता द्वारा दिया ऋण है, जिसे हमें चुकाना है। हमारी सरकार लोकमाता अहिल्याबाई के इन्हीं मूल्यों पर चलते हुए काम कर रही है। नागरिक देवो भवः - ये आज गवर्नेंस का मंत्र है। हमारी सरकार, वीमेन लेड डवलपमेंट के विजन को विकास की धुरी बना रही है। सरकार की हर बड़ी योजना के केंद्र में माताएं-बहनें-बेटियां हैं। गरीबों के लिए 4 करोड़ घर बनाए जा चुके हैं और इनमें से अधिकतर घर हमारी माताओं-बहनों के नाम पर हैं, मालिकाना हक मेरी माताओं-बहनों को दिया है। इनमें से ज्यादातर महिलाएं ऐसी हैं, जिनके नाम पर पहली बार कोई संपत्ति दर्ज हुई है। यानी देश की करोड़ों बहनें पहली बार घर की मालकिन बनी हैं।

सरकार, हर घर तक नल से जल पहुंचा रही है, ताकि हमारी माताओं-बहनों को असुविधा न हो, बेटियां अपनी पढ़ाई में ध्यान दे सकें । करोड़ों बहनों के पास पहले, बिजली, एलपीजी गैस और टॉयलेट जैसी सुविधाएं भी नहीं थीं। ये सुविधाएं भी हमारी सरकार ने पहुंचाईं। और ये सिर्फ सुविधाएं नहीं हैं, ये माताओं-बहनों के सम्मान का हमारी तरफ से एक नम्र प्रयास है। इससे गांव की, गरीब परिवारों की माताओं-बहनों के जीवन से अनेक मुश्किलें कम हुई हैं।

पहले माताऐं-बहनें अपनी बीमारियां छुपाने पर मजबूर थीं। गर्भावस्था के दौरान अस्पताल जाने से बचती थीं। उनको लगता था, कि इससे परिवार पर बोझ पड़ेगा और इसलिए दर्द सहती थीं, लेकिन परिवार में किसी को बताती नहीं थीं। आयुष्मान भारत योजना ने उनकी इस चिंता को भी खत्म किया है। अब वो भी अस्पताल में 5 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज करा सकती हैं।

महिलाओं के लिए पढ़ाई और दवाई के साथ ही जो बहुत जरूरी चीज है, वो कमाई भी है। जब महिला की अपनी आय होती है, तो घर में उसका स्वाभिमान और बढ़ जाता है, घर के निर्णयों में उसकी सहभागिता और बढ़ जाती है। बीते 11 वर्षों में हमारी सरकार ने देश की महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए निरंतर काम किया है।

2014 से पहले, आपने मुझे सेवा करने का मौका दिया उसके पहले, 30 करोड़ से ज्यादा बहनें ऐसी थीं, जिनका कोई बैंक खाता तक नहीं था। हमारी सरकार ने इन सभी के बैंक में जनधन खाते खुलवाए, इन्हीं खातों में अब सरकार अलग-अलग योजनाओं का पैसा सीधा उनके खाते में भेज रही है। अब वे गांव हो या शहर अपना कुछ ना कुछ काम कर रही हैं, आर्थिक उपार्जन कर रही हैं, स्वरोजगार कर रही हैं। उन्हें मुद्रा योजना से बिना गारंटी का लोन मिल रहा है। मुद्रा योजना की 75 प्रतिशत से ज्यादा लाभार्थी, माताऐं-बहनें-बेटियां हैं।

देश में 10 करोड़ बहनें सेल्फ हेल्प ग्रुप्स से जुड़ी हैं, जो कोई न कोई आर्थिक गतिविधि करती हैं। ये बहनें अपनी कमाई के नए साधन बनाएं, इसके लिए सरकार लाखों रुपयों की मदद कर रही है। हमने ऐसी 3 करोड़ बहनों को लखपति दीदी बनाने का संकल्प लिया है। मुझे संतोष है कि अब तक डेढ़ करोड़ से ज्यादा बहनें, लखपति दीदी बन भी चुकी हैं। अब

गांव-गांव में बैंक सखियां लोगों को बैंकिंग से जोड़ रही हैं। सरकार ने बीमा सखियां बनाने का अभियान भी शुरु किया है। हमारी बहनें-बेटियां अब देश को बीमा की सुरक्षा देने में भी बहुत बड़ी भूमिका निभा रही हैं।

एक समय था, जब नई टेक्नोलॉजी आती थी, तो उससे महिलाओं को दूर रखा जाता था। हमारा देश आज उस दौर को भी पीछे छोड़ रहा है। आज सरकार का प्रयास है कि आधुनिक टेक्नॉलॉजी में भी हमारी बहनें, हमारी बेटियां आगे बढ़कर के नेतृत्व दें। अब जैसे आज खेती में ड्रोन क्रांति आ रही है। इसको हमारी गांव की बहनें ही नेतृत्व दे रही हैं। नमो ड्रोन दीदी अभियान से गांव की बहनों का हौसला बढ़ रहा है, उनकी कमाई बढ़ रही है और गांव में उनकी एक नई पहचान बन रही है।

बहुत बड़ी संख्या में हमारी बेटियां वैज्ञानिक बन रही हैं, डॉक्टर-इंजीनियर और पायलट बन रही हैं। हमारे यहां साइंस और मैथ्स पढ़ने वाली बेटियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। आज जितने भी हमारे बड़े स्पेस मिशन हैं, उनमें बड़ी संख्या में वैज्ञानिक के नाते हमारी माताऐं-बहनें-बेटियां काम कर रही हैं। चंद्रयान थ्री मिशन, पूरा देश गौरव कर रहा है। चंद्रयान थ्री मिशन में तो 100 से अधिक महिला वैज्ञानिक और इंजीनियर शामिल थीं। ऐसे ही जमाना स्टार्ट अप्स का है, स्टार्ट अप्स के क्षेत्र में भी हमारी बेटियां अदभुत काम कर रही हैं। देश में लगभग पैंतालीस परसेंट स्टार्ट अप्स की, उसमें कम से कम एक डायरेक्टर कोई न कोई हमारी बहन है, कोई न कोई हमारी बेटी है, महिला है। और ये संख्या लगातार बढ़ रही है।

हमारा प्रयास है, कि नीति निर्माण में बेटियों की भागीदारी लगातार बढ़े। बीते एक दशक में इसके लिए एक के बाद एक अनेक कदम उठाए गए हैं। हमारी सरकार में पहली बार पूर्ण कालिक महिला रक्षामंत्री बनीं। पहली बार देश की वित्तमंत्री, एक महिला बनीं। पंचायत से लेकर पार्लियामेंट तक, महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। इस बार 75 सांसद महिलाएं हैं। लेकिन हमारा प्रयास है कि ये भागीदारी और बढ़े। नारीशक्ति वंदन अधिनियम के पीछे भी यही भावना है। सालों तक इस कानून को रोका गया, लेकिन हमारी सरकार ने इसे पारित करके दिखाया। अब संसद और विधानसभाओं में महिला आरक्षण पक्का हो गया है। कहने का अर्थ ये है कि भाजपा सरकार, बहनों-बेटियों को हर स्तर पर, हर क्षेत्र में सशक्त कर रही है।

भारत संस्कृति और संस्कारों का देश है। और सिंदूर, ये हमारी परंपरा में नारी शक्ति का प्रतीक है। राम भक्ति में रंगे हनुमान जी भी सिंदूर

को ही धारण किए हुए हैं। शक्ति पूजा में हम सिंदूर का अर्पण करते हैं। और यही सिंदूर अब भारत के शौर्य का प्रतीक बना है।

पहलगाम में आतंकियों ने सिर्फ भारतीयों का खून ही नहीं बहाया, उन्होंने हमारी संस्कृति पर भी प्रहार किया है। उन्होंने हमारे समाज को बांटने की कोशिश की है। और सबसे बड़ी बात, आतंकवादियों ने भारत की नारीशक्ति को चुनौती दी है। ये चुनौती, आतंकवादियों और उनके आकाओं के लिए काल बन गई है काल। ऑपरेशन सिंदूर, आतंकवादियों के खिलाफ भारत के इतिहास का सबसे बड़ा और सफल ऑपरेशन है। जहां पाकिस्तान की सेना ने सोचा तक नहीं था, वहां आतंकी ठिकानों को हमारी सेनाओं ने मिट्टी में मिला दिया। सैंकड़ों किलोमीटर अंदर घुसकर के मिट्टी में मिला दिया। ऑपरेशन सिंदूर ने डंके की चोट पर कह दिया है, कि आतंकवादियों के जरिए छद्म युद्ध, proxy war नहीं चलेगा। अब घर में घुसकर भी मारेंगे और जो आतंकियों की मदद करेगा, उसको भी इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। अब भारत का एक-एक नागरिक कह रहा है, 140 करोड़ देशवासियों की बुलंद आवाज कह रही है- अगर, अगर तुम गोली चलाओगे, तो मानकर चलो गोली का जवाब गोले से दिया जाएगा।

ऑपरेशन सिंदूर हमारी नारी शक्ति के सामर्थ्य का भी प्रतीक बना है। हम सभी जानते हैं, कि BSF का इस ऑपरेशन में कितना बड़ा रोल रहा है। जम्मू से लेकर पंजाब, राजस्थान और गुजरात की सीमा तक बड़ी संख्या में BSF की हमारी बेटियां मोर्चे पर रही थीं, मोर्चा संभाल रही थीं। उन्होंने सीमा पार से होने वाली फायरिंग का मुंहतोड़ जवाब दिया। कमांड एंड कंट्रोल सेंटर्स से लेकर दुश्मन की पोस्टों को ध्वस्त करने तक, BSF की वीर बेटियों ने अदभुत शौर्य दिखाया है।

आज दुनिया, राष्ट्ररक्षा में भारत की बेटियों का सामर्थ्य देख रही है। इसके लिए भी बीते दशक में सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं। स्कूल से लेकर युद्ध के मैदान तक, आज देश अपनी बेटियों के शौर्य पर अभूतपूर्व भरोसा कर रहा है। हमारी सेना ने पहली बार सैनिक स्कूलों के दरवाजे बेटियों के लिए खोले हैं। 2014 से पहले एनसीसी में सिर्फ 25 प्रतिशत कैडेट्स ही बेटियां होती थीं, आज उनकी संख्या 50 प्रतिशत की तरफ आगे बढ़ रही है। देश में एक और नया इतिहास बना है।

नेशनल डिफेंस एकेडमी यानी NDA से महिला कैडेट्स का पहला बैच पास आउट हुआ है। आज सेना, नौसेना और वायुसेना में बेटियां अग्रिम मोर्चे पर तैनात हो रही हैं। आज फाइटर प्लेन से लेकर INS विक्रांत युद्धपोत तक, वीमेन ऑफीसर्स अपनी जांबाजी दिखा रही हैं।

हमारी नौसेना की वीर बेटियों के साहस का ताजा उदाहरण भी देश के सामने है। आपको मैं नाविका सागर परिक्रमा के बारे में बताना चाहता हूं। नेवी की दो वीर बेटियों ने करीब ढाई सौ दिनों की समुद्री यात्रा पूरी की है, धरती का चक्कर लगाया है। हजारों किलोमीटर की ये यात्रा, उन्होंने ऐसी नाव से की जो मोटर से नहीं

बल्कि हवा से चलती है। सोचिए, ढाई सौ दिन समंदर में, इतने दिनों तक समंदर में रहना, कई-कई हफ्ते तक जमीन के दर्शन तक नहीं होना और ऊपर से समंदर का तूफान कितना तेज होता है, हमें पता है, खराब मौसम, भयानक तूफान, उन्होंने हर मुसीबत को हराया है। ये दिखाता है, कि चुनौती कितनी भी बड़ी हो, भारत की बेटियां उस पर विजय पा सकती हैं।

नक्सलियों के खिलाफ ऑपरेशन हों या फिर सीमापार का आतंक हो, आज हमारी बेटियां भारत की सुरक्षा की ढाल बन रही हैं। देवी अहिल्या की इस पवित्र भूमि से, देश की नारीशक्ति को फिर से सैल्यूट करता हूं

देवी अहिल्या ने अपने शासनकाल में विकास के कार्यों के साथ-साथ विरासत को भी सहेजा। आज का भारत भी विकास और विरासत, दोनों को साथ लेकर चल रहा है। आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण को देश कैसे गति दे रहे है, आज का कार्यक्रम इसका उदाहरण है। मध्य प्रदेश को पहली मेट्रो सुविधा मिली है। इंदौर पहले ही स्वच्छता के लिए दुनिया में अपनी पहचान बना चुका है। अब इंदौर की पहचान उसकी मेट्रो से भी होने जा रही है। भोपाल में भी मेट्रो का काम तेजी से चल रहा है। मध्य प्रदेश में, रेलवे के क्षेत्र में व्यापक काम हो रहा है। कुछ दिन पहले ही केंद्र सरकार ने रतलाम-नागदा रूट को चार लाइनों में बदलने के लिए स्वीकृति दे दी है। इससे इस क्षेत्र में और ज्यादा ट्रेनें चल पाएंगी, भीड़-भाड़ कम होगी। केंद्र सरकार ने इंदौर-मनमाड रेल परियोजना को भी मंजूरी दे दी है।

मध्य प्रदेश के दतिया और सतना भी हवाई यात्रा के नेटवर्क से जुड़ गए हैं। इन दोनों हवाई अड्डों से बुंदेलखंड और विंध्य क्षेत्र में एयर कनेक्टिविटी बेहतर होगी। अब माँ पीतांबरा, मां शारदा देवी और पवित्र चित्रकूट धाम के दर्शन करना और सुलभ हो जाएगा।

आज भारत, इतिहास के उस मोड़ पर है, जहां हमें अपनी सुरक्षा, अपने सामर्थ्य और अपनी संस्कृति, हर स्तर पर काम करना है। हमें अपना परिश्रम बढ़ाना है। इसमें हमारी मातृशक्ति, हमारी माताओं-बहनों-बेटियों की भूमिका बहुत बड़ी है। हमारे सामने लोकमाता देवी अहिल्याबाई जी की प्रेरणा है। रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, रानी कमलापति, अवंतीबाई लोधी, कित्तूर की रानी चेनम्मा, रानी गाइडिन्ल्यू, वेलु नाचियार, सावित्री बाई फुले, ऐसे हर नाम हमें गौरव से भर देते हैं। लोकमाता अहिल्याबाई की ये तीन सौ वीं जन्म जयंती, हमें निरंतर प्रेरित करती रहे, आने वाली सदियों के लिए हम एक सशक्त भारत की नींव मजबूत करें। ▪

भारत शिखर पर पहुंचेगा
मुख्यमंत्री डॉ. यादव

दुनिया के सबसे बड़े गणतंत्र के नायक प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी देवी अहिल्याबाई होल्कर की पावन धरा पर पधारे हैं। हमारे लिए आज का दिन अद्वितीय है। लोकमाता अहिल्या महारानी का जन्म 300 वर्ष पूर्व हुआ। उन्होंने एक आदर्श बहू और आदर्श पत्नी रहते हुए शासन चलाया। देवी अहिल्या ने घर के धन और शासन के धन का अंतर बताया। उनके कार्यकाल को देखा जाए तो आज अहिल्या माता के सुशासन के आधार पर ही पूरा शासन तंत्र चल रहा है। मध्यप्रदेश में विगत 500 साल के काल पर नजर डालें तो गोंडवाना की रानी दुर्गावती ने तीन बार अकबर को धूल चटाई थी। इसी प्रकार रानी अवंतीबाई ने भी मुगलों के सामने कभी भी आत्मसम्मान से समझौता नहीं किया। ग्वालियर की राजमाता सिंधिया ने भी भारतीय लोकतंत्र को मजबूत किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इंदौर की सुमित्रा ताई को लोकसभा अध्यक्ष की जिम्मेदारी देकर प्रदेश का मान बढ़ाया। आज राष्ट्रपति भी एक महिला हैं। अहिल्या देवी की 300वीं जयंती के अवसर पर पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने आतंकी सरकार और आतंकवादियों को धूल चटाई। पूरा देश आपका अभिनंदन कर रहा है। जिन आतंकियों ने बहनों का सिंदूर उजाड़ने का काम किया, उन्हें सबक सिखाया है। भारत ने जापान को पीछे छोड़कर दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की उपलब्धि हासिल की है। मध्यप्रदेश सरकार गरीब, किसान, युवा और नारी सहित हर वर्ग के कल्याण के लिए केंद्र सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया में शिखर पर पहुंचेगा। ▪

राजबाड़ा में कैबिनेट, विरासत का सम्मान -विष्णुदत्त शर्मा

- राजबाड़ा में कैबिनेट की बैठक हमारी सांस्कृतिक चेतना का उत्सव।
- बैठक से राज्य सरकार ने देवी अहिल्याबाई के प्रति जताई सामूहिक श्रद्धा और कृतज्ञता।
- देवी अहिल्याबाई के पदचिन्हों पर चलकर सत्ता को सेवा का जरिया मानती है भाजपा।
- राहवीर योजना सरकार की संवेदनशीलता का उदाहरण।
- पांच शहरों में मेट्रोपोलिटन काउंसिल विकास की नई परिकल्पना।
- देवी अहिल्याबाई होल्कर की तरह महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रहे मोदी जी।

हम सभी गौरवान्वित हैं कि देवी अहिल्याबाई होल्कर जी की 300 वें जन्म जयंती वर्ष में इंदौर के ऐतिहासिक राजबाड़ा में कैबिनेट बैठक आयोजित हुई। यह केवल एक बैठक नहीं, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक चेतना का उत्सव है, हमारी विरासत का सम्मान है।

हम सभी गौरवान्वित हैं कि देवी अहिल्याबाई होल्कर जी की 300 वें जन्म जयंती वर्ष में इंदौर के ऐतिहासिक राजबाड़ा में कैबिनेट बैठक आयोजित हुई। यह केवल एक बैठक नहीं, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक चेतना का उत्सव है, हमारी विरासत का सम्मान है। भारतीय जनता पार्टी की ओर से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, उनकी पूरी मंत्रिपरिषद और सरकार का हृदय से आभार जताता हूँ, जिन्होंने यह ऐतिहासिक निर्णय लेकर देवी अहिल्या के प्रति हमारी सामूहिक श्रद्धा और कृतज्ञता को मूर्त रूप दिया है। देवी अहिल्या नारी शक्ति, जनकल्याण और न्यायप्रिय शासन की प्रतीक थीं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सत्ता सेवा का माध्यम होनी चाहिए। जब सरकार उनके पदचिन्हों पर चलकर गरीब, वंचित, और अंतिम पंक्ति के व्यक्ति के लिए काम कर रही है, तब यह आयोजन एक आध्यात्मिक और वैचारिक प्रेरणा का कार्य करता है। इंदौर, मालवा और समूचा मध्यप्रदेश इस आयोजन को एक स्मरणीय और प्रेरक क्षण के रूप में देखेगा।

देवी अहिल्याबाई की तरह सत्ता को सेवा का माध्यम मानने वाली मध्यप्रदेश सरकार ने कैबिनेट की बैठक में अनेक जनकल्याणकारी निर्णय लिए हैं। राज्य सरकार ने प्रदेश के इंदौर, उज्जैन, भोपाल, जबलपुर और ग्वालियर शहरों में मेट्रोपॉलिटन काउंसिल के गठन का निर्णय लेकर शहरी विकास की नई परिकल्पना पर मोहर लगा दी है। महानगर के रूप में ये पांच शहर समूचे प्रदेश के विकास को गति देंगे। देवी अहिल्याबाई ने मंदिरों के जीर्णोद्धार के माध्यम से देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक चेतना का संरक्षण-संवर्धन किया था। उन्हीं के पदचिन्हों पर चलते हुए मध्यप्रदेश सरकार ने ओंकारेश्वर में अद्वैत लोक की स्थापना के लिए 2200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। सरकार के इस निर्णय से ओंकारेश्वर धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना के वैश्विक केंद्र के रूप में विकसित होगा। सारी दुनिया से लोग यहां आएंगे और आदि शंकराचार्य के संबंध में अध्ययन व अनुसंधान कर सकेंगे।

जिस तरह से 300 वर्ष पहले देवी अहिल्याबाई ने महेश्वरी साड़ियों के माध्यम से बहनों के सशक्तिकरण और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास किए थे, वैसे ही कार्य हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं और उन्होंने लाखों बहनों को लखपति दीदी बनाकर आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाया।

पहले सड़क से गुजरने वाले किसी घायल को सड़क पर पड़ा हुआ देखकर भी रास्ते पर गुजरने वाले अपने रास्ते निकल जाते थे, क्योंकि उन्हें कानूनी झमेले में पड़ने का डर होता था। लेकिन कैबिनेट ने राहवीर योजना के संबंध में निर्णय लिया है, वह सरकार की संवेदनशीलता का उदाहरण है।

सरकार ने यह निर्णय लिया है कि यदि कोई व्यक्ति सड़क दुर्घटना में घायल हो जाता है, तो उस व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने वाले व्यक्ति को पुरस्कार दिया जाएगा। सरकार का यह निर्णय निश्चित रूप से स्वागत योग्य है, जिससे अनेक लोगों का जीवन बचाया जा सकेगा। ▪

भाजपा अहिल्याबाई के विचारों को जमीन पर उतार रही है - हितानंद जी

देवी अहिल्याबाई ने राजमाता से लोकमाता बनकर सांस्कृतिक गौरव यात्रा को आगे बढ़ाया।

देवी अहिल्याबाई का जन्म महाराष्ट्र में हुआ, लेकिन हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि उनका संपूर्ण जीवन मध्यप्रदेश में बीता। उन्होंने इंदौर व महेश्वर में शासन करते हुए राजमाता से लोकमाता बनकर पूरे देश के विभिन्न घाटों एवं ज्योतिर्लिंगों पर सांस्कृतिक गौरव यात्रा आगे बढ़ाया। देवी अहिल्याबाई का जो विचार था, उस विचार को भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकारें जमीन पर उतारने का काम कर रहीं हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार सामाजिक सुधार के लिए प्रतिबद्ध है।

हमें देवी अहिल्याबाई होल्कर के सुशासन की विरासत, प्रेरणादायी जीवन एवं सांस्कृतिक उत्थान के कार्यों का जन-जन तक प्रचार करना है। भाजपा सरकारों के समावेशी सुशासन, महिला सशक्तिकरण, लोककल्याण के कार्यों एवं पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति व जनजाति के कल्याण की उपलब्धियों की जानकारी देना है।▪

प्रधानमंत्री जी 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का निर्माण कर रहे - डॉ. महेंद्र सिंह

देवी अहिल्याबाई होल्कर के लिए धर्म ही राजधर्म और प्रजा की सेवा ही पूजा थी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी देश की 140 करोड़ जनता की सेवा को पूजा मानते हैं।

- **प्रधानमंत्री जी कर रहे देवी अहिल्याबाई होल्कर के सपनों को पूरा करने का काम।**
- **देवी अहिल्याबाई ने इंदौर से पूरे देश में उत्थान का कार्य किया।**

देवी अहिल्याबाई होल्कर के सपनों को पूरा करने का काम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी कर रहे हैं। देवी अहिल्याबाई ने इंदौर से पूरे देश का उत्थान कर चारों धामों, सप्तपुरी, अयोध्या का राम मंदिर, रामेश्वरम, काशी विश्वनाथ सहित देशभर में तीन हजार से ज्यादा मंदिरों का जीर्णोद्धार का काम कर भारत को सजाने का काम किया था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में चारों धामों को जोड़ने, बौद्ध और जैन सर्किट सहित सात हजार से ज्यादा मंदिरों का निर्माण और जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। देवी अहिल्याबाई होल्कर ने कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जल-जीवन मिशन के तहत हर घर में नल-जल योजना के तहत पानी पहुंचाने का काम किया है। देवी अहिल्याबाई होल्कर ने काशी में मणिकर्णिका घाट सहित बड़ी संख्या में घाटों का निर्माण किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी देशभर में मार्गों और घाटों का निर्माण करा रहे हैं। देवी अहिल्याबाई होल्कर ने गरीबों के भोजन के लिए अन्न क्षेत्रों की व्यवस्था की। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 80 करोड़ लोगों के लिए राशन की व्यवस्था की है। देवी अहिल्याबाई होल्कर के लिए धर्म ही राजधर्म और प्रजा की सेवा ही पूजा थी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी देश की 140 करोड़ जनता की सेवा को पूजा मानते हैं। देवी अहिल्याबाई होल्कर ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का जो सपना 18वीं सदी में देखा था, उसे आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी पूरा कर रहे हैं। देवी अहिल्याबाई होल्कर को आज हम 21वीं सदी में याद कर उनके बताए गए मार्गों पर चलने का प्रयास कर रहे हैं यह इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जो कुछ किया वो अदभुत और अकल्पनीय था। हमें उनके कार्यों को जनता तक पहुंचाकर उनके कार्यों से अवगत कराना है।▪

संकल्प- आतंकवाद खत्म करना है

हर भारतीय का यही संकल्प है, हमें आतंकवाद को खत्म करना ही है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमारी सेनाओं ने जो पराक्रम दिखाया है, उसने हर हिंदुस्तानी का सिर ऊँचा कर दिया है।

जिस Precision के साथ, जिस सटीकता के साथ, हमारी सेनाओं ने सीमा पार के आतंकवादी ठिकानों को ध्वस्त किया, वो अद्भुत है। ऑपरेशन सिंदूर ने दुनिया-भर में आतंक के खिलाफ लड़ाई को नया विश्वास और उत्साह दिया है।

- **ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ सैन्य अभियान नहीं है, यह हमारे संकल्प, साहस और बदलते भारत की तस्वीर है और यह तस्वीर पूरे देश में छा गई है।**
- **एशियाई शेरों की आबादी में वृद्धि दर्शाती है कि जब समाज में स्वामित्व की भावना मजबूत होती है, तो अद्भुत परिणाम सामने आते हैं।**
- **आज ऐसी कई महिलाएं हैं जो खेतों में काम करने के साथ-साथ आसमान की ऊंचाइयों को भी छू रही हैं। वे ड्रोन दीदी के रूप में ड्रोन उड़ा रही हैं और कृषि में नई क्रांति ला रही है।**
- **कुछ स्कूलों में शुगर बोर्ड लगाए जा रहे हैं। CBSE की इस अनूठी पहल का उद्देश्य बच्चों को उनके चीनी सेवन के प्रति जागरूक करना है।**
- **'विश्व मधुमक्खी दिवस' एक ऐसा दिन है जो हमें याद दिलाता है कि शहद सिर्फ मिठास नहीं है, यह स्वास्थ्य, स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता का भी उदाहरण है।**
- **मधुमक्खियों की सुरक्षा सिर्फ पर्यावरण की सुरक्षा नहीं है, बल्कि हमारी कृषि और आने वाली पीढ़ियों की भी सुरक्षा है।**

पूरा देश आतंकवाद के खिलाफ एकजुट है, आक्रोश से भरा हुआ है, संकल्पबद्ध है। हर भारतीय का यही संकल्प है, हमें आतंकवाद को खत्म करना ही है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमारी सेनाओं ने जो पराक्रम दिखाया है, उसने हर हिंदुस्तानी का सिर ऊँचा कर दिया है। जिस Precision के साथ, जिस सटीकता के साथ, हमारी सेनाओं ने सीमा पार के आतंकवादी ठिकानों को ध्वस्त किया, वो अद्भुत है। ऑपरेशन सिंदूर ने दुनिया-भर में आतंक के खिलाफ लड़ाई को नया विश्वास और उत्साह दिया है।

'ऑपरेशन सिंदूर' सिर्फ एक सैन्य मिशन नहीं है, ये हमारे संकल्प, साहस और बदलते भारत की तस्वीर है और इस तस्वीर ने पूरे देश को देश-भक्ति के भावों से भर दिया है, तिरंगे में रंग दिया है। देश के कई शहरों में, गावों में, छोटे-छोटे कस्बों में, तिरंगा यात्राएं निकाली गई। हजारों लोग हाथों में तिरंगा लेकर देश की सेना, उसके प्रति वंदन-अभिनंदन करने निकल पड़े। कितने ही शहरों में Civil Defense Volunteer बनने के लिए बड़ी संख्या में युवा एकजुट हो गए, और हमने देखा, चंडीगढ़ के Videos तो काफी viral हुए थे। Social media पर कविताएँ लिखी जा रही थीं, संकल्प गीत गाये जा रहे थे। छोटे-छोटे

बच्चे Paintings बना रहे थे जिनमें बड़े सन्देश छुपे थे। बीकानेर में बच्चों ने मुझे ऐसी ही एक Painting भेंट की थी। ऑपरेशन सिंदूर ने देश के लोगों को इतना प्रभावित किया है कि कई परिवारों ने इसे अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है। बिहार के कटिहार में, यूपी के कुशीनगर में, और भी कई शहरों में, उस दौरान जन्म लेने वाले बच्चों का नाम 'सिंदूर' रखा गया है।

हमारे जवानों ने आतंक के अड्डों को तबाह किया, यह उनका अदम्य साहस था और उसमें शामिल थी, भारत में बने हथियारों, उपकरणों और Technology की ताकत। उसमें आत्मनिर्भर भारत का संकल्प भी था। हमारे Engineers, हमारे Technician हर किसी का पसीना इस विजय में शामिल है। इस अभियान के बाद पूरे देश में 'Vocal for Local' को लेकर एक नई ऊर्जा दिख रही है। कई बातें मन को छू जाती हैं। एक माँ-बाप ने कहा - अब हम अपने बच्चों के लिए सिर्फ भारत में बने खिलौने ही लेंगे। देश-भक्ति की शुरुआत बचपन से होगी। कुछ परिवारों ने शपथ ली है - हम अपनी अगली छुट्टियाँ देश के किसी खूबसूरत जगह में ही बिताएंगे। कई युवाओं ने 'Wed in India' का संकल्प लिया है, वो देश में ही शादी करेंगे। किसी ने ये भी कहा है -''अब जो भी Gift देंगे, वह किसी भारतीय शिल्पकार के हाथों से बना होगा।''

यही तो है, भारत की असली ताकत जन-मन का जुड़ाव, जन-भागीदारी। मैं आप सबसे भी आग्रह करता हूँ, आइए, इस अवसर पर एक संकल्प लें - हम अपने जीवन में जहाँ भी संभव हो, देश में बनी चीजों को प्राथमिकता देंगे। यह सिर्फ आर्थिक आत्मनिर्भरता की बात नहीं है, यह राष्ट्र के निर्माण में भागीदारी का भाव है। हमारा एक कदम, भारत की प्रगति में बहुत बड़ा योगदान बन सकता है।

बस से कहीं आना-जाना कितनी सामान्य बात है। लेकिन मैं आपको एक ऐसे गांव के बारे में बताना चाहता हूं, जहां पहली बार एक बस पहुंची। इस दिन का वहां के लोग वर्षों से इंतजार कर रहे थे। और जब गांव में पहली बार बस पहुंची तो लोगों ने ढोल-नगाड़े बजाकर उसका स्वागत किया। बस को देखकर लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं था। गांव में पक्की सड़क थी, लोगों को जरूरत थी, लेकिन पहले कभी यहां बस नहीं चल पाई थी। क्यों, क्योंकि ये गांव माओवादी हिंसा से प्रभावित था। यह जगह है महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में, और इस गांव का नाम है, काटेझरी। काटेझरी में आए इस परिवर्तन को आसपास के पूरे क्षेत्र में महसूस किया जा रहा है। अब यहां हालात तेजी से सामान्य हो रहे हैं। माओवाद के खिलाफ सामूहिक लड़ाई से अब ऐसे क्षेत्रों तक भी बुनियादी सुविधाएं पहुंचने लगी है। गांव के लोगों का कहना है कि बस के आने से उन लोगों का जीवन बहुत आसान हो जाएगा।

'मन की बात' में हम छत्तीसगढ़ में हुए बस्तर Olympics और माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में Science Lab पर चर्चा कर चुके हैं। यहां के बच्चों में Science का Passion है। वो Sports में भी कमाल कर रहे हैं। ऐसे प्रयासों से पता चलता है कि इन इलाकों में रहने वाले लोग कितने साहसी होते हैं। इन लोगों ने तमाम चुनौतियों के बीच अपने जीवन को बेहतर बनाने की राह चुनी है। मुझे यह जानकार भी बहुत खुशी हुई कि 10वीं और 12वीं की परीक्षाओं में दंतेवाड़ा जिले के नतीजे बहुत शानदार रहे हैं। करीब Ninety Five Percent Result के साथ ये जिला 10वीं के नतीजों में Top पर रहा। वहीं 12वीं की परीक्षा में इस जिले ने छत्तीसगढ़ में छठा स्थान हासिल किया। सोचिए! जिस दंतेवाड़ा में कभी माओवाद चरम पर था, वहां आज शिक्षा का परचम लहरा रहा है। ऐसे बदलाव हम सभी को गर्व से भर देते हैं।

अब मैं Lions, शेरों से जुड़ी एक बड़ी अच्छी खबर आपको बताना चाहता हूं। पिछले केवल पाँच वर्षों में गुजरात के गिर में शेरों की आबादी 674 से बढ़कर 891 हो गई है। Six Hundred Seventy Four से Eight Hundred Ninety One! Lion Census के बाद सामने आई शेरों की ये संख्या बहुत उत्साहित करने वाली है। आप में से बहुत से लोग यह जानना चाह रहे होंगे कि आखिर ये Animal Census होती कैसे है? ये exercise बहुत ही चुनौतीपूर्ण है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि Lion Census 11 जिलों में, 35 हजार वर्ग किलोमीटर के दायरे में की गई थी। Census के लिए टीमों ने Round the Clock यानी चौबीसों घंटे इन क्षेत्रों की निगरानी की। इस पूरे अभियान में verification और cross verification दोनों किए गए। इससे पूरी बारीकी से शेरों की गिनती का काम पूरा हो सका।

Asiatic Lion की आबादी में बढ़ोत्तरी ये दिखाती है कि जब समाज में ownership का भाव मजबूत होता है, तो कैसे शानदार नतीजे आते हैं। कुछ दशक पहले गिर में हालात बहुत challenging थे। लेकिन वहां के लोगों ने मिलकर बदलाव लाने का बीड़ा उठाया। वहां latest technology के साथ ही global best practices को भी अपनाया गया। इसी दौरान गुजरात ऐसा पहला राज्य बना, जहां बड़े पैमाने पर Forest Officers के पद पर महिलाओं की तैनाती की गई। आज हम जो नतीजे देख रहे हैं, उसमें इन सभी का योगदान है। Wild Life Protection के लिए हमें ऐसे ही हमेशा जागरुक और सतर्क रहना होगा।

मैं, पहली Rising North East Summit में गया था। उससे पहले हमने North East के सामर्थ्य को समर्पित 'अष्टलक्ष्मी महोत्सव' भी मनाया था। North East की बात ही कुछ और है, वहां का सामर्थ्य, वहां का talent, वाकई अद्भुत है। मुझे एक दिलचस्प कहानी

पता चली है crafted fibers की। Crafted fibers ये सिर्फ एक brand नहीं, सिक्किम की परंपरा, बुनाई की कला, और आज के fashion की सोच-तीनों का सुन्दर संगम है। इसकी शुरुआत की डॉ. चेवांग नोरबू भूटिया ने। पेशे से वो Veterinary Doctor हैं और दिल से सिक्किम की संस्कृति के सच्चे Brand Ambassador. उन्होंने सोचा क्यूं न बुनाई को एक नया आयाम दिया जाए! और इसी सोच से जन्म हुआ Crafted fibers का। उन्होंने पारंपरिक बुनाई को modern fashion से जोड़ा और इसे बनाया एक Social Enterprise. अब उनके यहां केवल कपड़े नहीं बनते, उनके यहां जिंदगियाँ बुनी जाती हैं। वे local लोगों को skill training देते हैं, उन्हें आत्मनिर्भर बनाते हैं। गांवों के बुनकर, पशुपालक और self-help groups इन सबको जोड़कर डॉ. भूटिया ने रोजगार के नए रास्ते बनाए हैं। आज, स्थानीय महिलाएं और कारीगर अपने हुनर से अच्छी कमाई कर रहे हैं। crafted fibers के शॉल, स्टोल, दस्ताने, मोजे, सब, local handloom से बने होते हैं। इसमें जो ऊन का इस्तेमाल होता है, वो सिक्किम के खरगोशों और भेड़ों से आता है। रंग भी पूरी तरह प्राकृतिक होते हैं - कोई chemical नहीं, सिर्फ प्रकृति की रंगत। डॉ. भूटिया ने सिक्किम की पारंपरिक बुनाई और संस्कृति को एक नई पहचान दी है। डॉ. भूटिया का काम हमें सिखाता है कि जब परंपरा को passion से जोड़ा जाए, तो वो दुनिया को कितना लुभा सकती है।

आज मैं आपको एक ऐसे शानदार व्यक्ति के बारे में बताना चाहता हूँ जो एक कलाकार भी हैं और जीती-जागती प्रेरणा भी हैं। नाम है-जीवन जोशी, उम्र 65 साल। अब सोचिए, जिनके नाम में ही जीवन हो, वो कितनी जीवंतता से भरे होंगे। जीवन जी उत्तराखंड के हल्द्वानी में रहते हैं। बचपन में पोलियो ने उनके पैरों की ताकत छीन ली थी, लेकिन पोलियो, उनके हौसलों को नहीं छीन पाया। उनके चलने की रफ्तार भले कुछ धीमी हो गई, लेकिन उनका मन कल्पना की हर उड़ान उड़ता रहा। इसी उड़ान में, जीवन जी ने एक अनोखी कला को जन्म दिया-नाम रखा 'बगेट'। इसमें वो चीड़ के पेड़ों से गिरने वाली सूखी छाल से सुंदर कलाकृतियाँ बनाते हैं। वो छाल, जिसे लोग आमतौर पर बेकार समझते हैं - जीवन जी के हाथों में आते ही धरोहर बन जाती है। उनकी हर रचना में उत्तराखंड की मिट्टी की खुशबू होती है। कभी पहाड़ों के लोक वाद्ययंत्र, तो कभी लगता है जैसे पहाड़ों की आत्मा उस लकड़ी में समा गई हो। जीवन जी का काम सिर्फ कला नहीं, एक साधना है। उन्होंने इस कला में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है। जीवन जोशी जैसे कलाकार हमें याद दिलाते हैं कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों,अगर इरादा मजबूत हो,तो, नामुमकिन कुछ नही। उनका नाम जीवन है और उन्होंने सच में दिखा दिया कि जीवन जीना क्या होता है।

आज कई ऐसी महिलाएं हैं, जो खेतों के साथ ही, अब, आसमान की ऊंचाइयों पर काम कर रही हैं। जी हाँ ! आपने सही सुना, अब गाँव की महिलाएं drone दीदी बनकर drone उड़ा रही हैं और उससे खेती में नई क्रांति ला रही हैं।

तेलंगाना के संगारेड्डी जिले में, कुछ समय पहले तक जिन महिलाओं को दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था, आज वे ही महिलाएं drone से 50 एकड़ जमीन पर दवा के छिड़काव का काम पूरा कर रही हैं। सुबह तीन घंटे, शाम दो घंटे और काम निपट गया। धूप की तपन नहीं, जहर जैसे chemicals का खतरा नहीं।

गाँववालों ने भी इस परिवर्तन को दिल से स्वीकार किया है। अब ये महिलाएं 'drone operator' नहीं, 'sky warriors' के नाम से जानी जाती हैं। ये महिलाएं हमें बता रही हैं - बदलाव तब आता है जब तकनीक और संकल्प एक साथ चलते हैं।

'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' में अब एक महीने से भी कम समय बचा है। ये अवसर याद दिलाता है कि अगर आप अब भी योग से दूर हैं तो अब योग से जुड़ें। योग आपका जीवन जीने का तरीका बदल देगा।

21 जून 2015 में 'योग दिवस' की शुरुआत के बाद से ही इसका आकर्षण लगातार बढ़ रहा है। इस बार भी 'योग दिवस' को लेकर दुनिया-भर में लोगों का जोश और उत्साह नजर आ रहा है। अलग-अलग संस्थान अपनी तैयारियां साझा कर रहे हैं। बीते वर्षों की तस्वीरों ने बहुत प्रेरित किया है। हमने देखा है अलग-अलग देशों में किसी साल लोगों ने Yoga Chain बनाई, Yoga Ring बनाई। ऐसी बहुत सी तस्वीरें हैं जहां एक साथ चार generation मिलकर योग कर रही हैं। बहुत से लोगों ने अपने शहर की iconic places को योग के लिए चुना। आप भी इस बार कुछ interesting तरीके से योग दिवस मनाने के बारे में सोच सकते हैं।

आंध्र प्रदेश की सरकार ने YogAndhra अभियान शुरू किया है। इसका उद्देश्य पूरे राज्य में योग संस्कृति को विकसित करना है। इस अभियान के तहत योग करने वाले 10 लाख लोगों का एक pool बनाया जा रहा है। मुझे इस वर्ष विशाखापत्तनम में 'योग दिवस' कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिलेगा। मुझे ये जानकर अच्छा लगा कि इस बार भी हमारे युवा साथी, देश की विरासत से जुड़ी iconic place पर योग करने वाले हैं। कई युवाओं ने नए रिकार्ड बनाने और Yoga Chain का हिस्सा बनने का संकल्प लिया है। हमारे Corporates भी इसमें पीछे नहीं हैं। कुछ संस्थानों ने office में ही योग अभ्यास के लिए अलग स्थान तय कर दिया है। कुछ start-ups ने अपने यहाँ 'office' योग 'hours' तय कर दिए हैं। ऐसे भी लोग हैं जो गांवों में जाकर योग सिखाने की तैयारी कर रहे हैं। Health और Fitness को लेकर लोगों की ये जागरूकता मुझे बहुत आनंद देती है।

'योग दिवस' के साथ-साथ आयुर्वेद के क्षेत्र में भी कुछ ऐसा हुआ है, जिसके बारे में जानकर आपको बहुत खुशी होगी। 24 मई को WHO के Director General और मेरे मित्र, तुलसी भाई की मौजूदगी में एक MoU sign किया गया है। इस agreement के साथ ही International Classification of Health Interventions के तहत एक Dedicated Traditional Medicine Module पर काम शुरू हो गया है। इस पहल से, आयुष को पूरी दुनिया में वैज्ञानिक तरीके से अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी।

आपने स्कूलों में blackboard तो देखा होगा, लेकिन अब कुछ स्कूलों में 'sugar board' भी लगाया जा रहा है - blackboard नहीं sugar board ! CBSE की इस अनोखी पहल का उद्देश्य है-बच्चों को उनके sugar intake के प्रति जागृत करना। कितनी चीनी लेनी चाहिए, और कितनी चीनी खाई जा रही है-ये जानकर बच्चे खुद से ही healthy विकल्प चुनने लगे हैं। यह एक अनोखा प्रयास है और इसका असर भी बड़ा positive होगा। बचपन से ही स्वस्थ जीवनशैली की आदतें डालने में यह काफी मददगार साबित हो सकता है। कई अभिभावकों ने इसे सराहा है और मेरा मानना है-ऐसी पहल दफ्तरों, कैन्टीनों और संस्थानों में भी होनी चाहिए, आखिरकार, सेहत है तो सब कुछ है। Fit India ही strong India की नींव है।

स्वच्छ भारत की बात हो और 'मन की बात' के श्रोता पीछे रहें ऐसा कैसे हो सकता है भला। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सब अपने-अपने स्तर पर इस अभियान को मजबूती दे रहे हैं। लेकिन मैं आपको एक ऐसी मिसाल के बारे में बताना चाहता हूँ जहां स्वच्छता के संकल्प ने पहाड़ जैसी चुनौतियों को भी मात दे दी। आप सोचिए, कोई व्यक्ति बर्फीली पहाड़ियों पर चढ़ाई कर रहा हो, जहाँ सांस लेना मुश्किल हो, कदम-कदम पर जान को खतरा हो और फिर भी वो व्यक्ति वहाँ सफाई में जुटा हो। ऐसा ही कुछ किया है, हमारी ITBP की टीमों के सदस्यों ने। ये टीम, माउंट मकालू जैसे, विश्व की सबसे कठिन चोटी पर चढ़ाई के लिए गई थी। पर उन्होंने सिर्फ पर्वतारोहण नहीं किया, उन्होंने अपने लक्ष्य में एक मिशन और जोड़ा 'स्वच्छता' का। चोटी के पास जो कचरा पड़ा था, उन्होंने उसे हटाने का बीड़ा उठाया। आप कल्पना कीजिए, 150 किलो से ज्यादा non-biodegradable waste इस टीम के सदस्य अपने साथ नीचे लाए। इतनी ऊंचाई पर सफाई करना कोई आसान काम नहीं है। लेकिन यह दिखाता है कि जहाँ संकल्प होता है, वहाँ रास्ते अपने आप बन जाते हैं।

इसी से जुड़ा एक और जरूरी विषय है - Paper waste और recycling हमारे घरों और दफ्तरों में हर दिन बहुत सारा paper waste निकलता है। शायद, हम इसे सामान्य मानते हैं, लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी, देश के landfill waste का लगभग एक चौथाई हिस्सा कागज से जुड़ा होता है।

सामूहिक चेतना जागृत करने का अनुपम प्रयास- मुख्यमंत्री डॉ. यादव

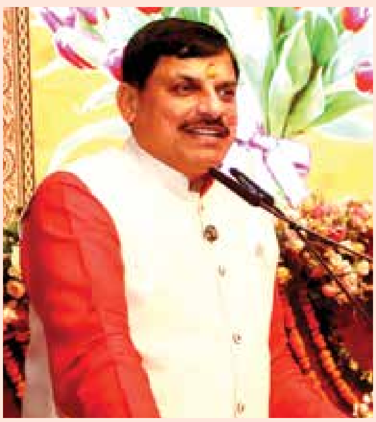

मन की बात कार्यक्रम जन संवाद का अनूठा माध्यम है। 'मन की बात' कार्यक्रम राष्ट्र निर्माण की दिशा में सामूहिक चेतना जागृत करने का अनुपम प्रयास है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी का 'मन की बात' कार्यक्रम युवा शक्ति, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, गरीब कल्याण, पर्यावरण संरक्षण और नवाचार से लेकर समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़ने वाला संवाद कार्यक्रम है, जो राष्ट्रवासियों को नई ऊर्जा और दिशा देता है। प्रधानमंत्री के ओजस्वी, प्रेरणादायक और दूरदर्शी विचार राष्ट्रसेवा, सामाजिक जागरूकता और जनहित में कार्य करने की सतत् प्रेरणा देते रहते हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 'मन की बात' में बताया कि पिछले वर्षों में मधुमक्खी पालन क्षेत्र में भारत में एक क्रांति हुई है। आज से 10-11 साल पहले भारत में वार्षिक शहद उत्पादन 70-75 हजार मीट्रिक टन होता था। आज यह बढ़कर करीब सवा लाख मीट्रिक टन के आसपास हो गया है। इस तरह शहद उत्पादन में करीब 60 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है।

प्रदेशवासी प्रधानमंत्री के एकता के सूत्र में पिरोने वाले 'मन की बात' कार्यक्रम के प्रेरणादायी संवाद से जुड़कर 'सशक्त भारत' की दिशा में कदम बढ़ाएं। ▪

आज जरूरत है, हर व्यक्ति इस दिशा में जरूर सोचे। मुझे ये जानकर अच्छा लगा कि भारत के कई Start-Ups इस sector में शानदार काम कर रहे हैं। विशाखापत्तनम, गुरुग्राम ऐसे कई शहरों में कई Start-Up paper recycling के innovative तरीके अपना रहे हैं। कोई recycle paper से packaging board बना रहा है, कोई digital तरीकों से newspaper recycling को आसान बना रहा है।

जालना जैसे शहरों में कुछ Start-Up 100 percent recycled material से packaging roll और paper core बना रहे हैं। आप ये भी जानकर प्रेरित होंगे, एक टन कागज की recycling से 17 पेड़ कटने से बचते हैं और हजारों लीटर पानी की बचत होती है। अब सोचिए, जब पर्वतारोही इतने कठिन हालात में कचरा वापस ला सकते हैं तो हमें भी अपने घर या दफ्तर में पेपर को अलग करके recycling में अपना योगदान जरूर देना चाहिए। जब देश का हर नागरिक ये सोचेगा कि देश के लिए मैं क्या बेहतर कर सकता हूँ, तभी मिलकर, हम, बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

बीते दिनों खेलों इंडिया गेम्स की बड़ी धूम रही। खेलों इंडिया के दौरान बिहार के पाँच शहरों ने मेजबानी की थी। वहाँ अलग-अलग category के मैच हुए थे। पूरे भारत से वहाँ पहुंचे athletes की संख्या पाँच हजार से भी ज्यादा थी। इन athletes ने बिहार की sporting spirit की, बिहार के लोगों से मिली आत्मीयता की, बड़ी तारीफ की है।

बिहार की धरती बहुत खास है, इस आयोजन में यहाँ कई unique चीजें हुई हैं। खेलों इंडिया यूथ गेम्स का ये पहला आयोजन था, जो Olympic channel के जरिए दुनिया-भर में पहुंचा। पूरे विश्व के लोगों ने हमारे युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा को देखा और सराहा। मैं सभी पदक विजेताओं, विशेषकर top के तीन winners - महाराष्ट्र, हरियाणा और राजस्थान को बधाई देता हूँ।

इस बार खेलो इंडिया में कुल 26 रिकार्ड बने। Weight Lifting स्पर्धाओं में महाराष्ट्र की अस्मिता धोने, ओडिशा के हर्षवर्धन साहू और उत्तर प्रदेश के तुषार चौधरी के शानदार प्रदर्शन ने सबका दिल जीत लिया। वहीं महाराष्ट्र के साईराज परदेशी ने तो तीन record बना डाले। athletics में उत्तर प्रदेश के कादिर खान और शेख जीशान और राजस्थान के हंसराज ने शानदार प्रदर्शन किया। इस बार बिहार ने भी 36 medals अपने नाम किए। जो खेलता है, वही खिलता है। Young Sporting Talent

पाकिस्तान घुटने टेकने के लिए मजबूर - विष्णुदत्त शर्मा

- **ऑपरेशन सिंदूर में सेना के पराक्रम से देशवासियों का दिल गर्व से भरा।**
- **प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था बना।**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी आतंकवाद को समाप्त करने के लिए पूरे सकंल्प के साथ जुटे हैं। देश के 140 करोड़ जनता का संकल्प है कि आतंकवाद पूरी दुनिया से समाप्त होगा और इसकी शुरुआत हो गई है। ऑपरेशन सिंदूर में सेना के पराक्रम से देशवासियों का दिल गर्व से भर गया है। तिरंगा यात्रा से देशभक्ति का जज्बा हर भारतीय में देखा जा सकता है। पूरा देश सेना को एप्रिसिएट कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था बन गया है। यह देश के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह उपलब्धि ऐसे समय में आई है, जब भारत दुश्मन देश को घुटने टेकने पर मजबूर किया है। इसलिए यह उपलब्धि और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जो कहते हैं वह करते हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत बहुत जल्दी विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था वाला देश भी बनेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने "मन की बात" कार्यक्रम में कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद हमारी सेनाओं के पराक्रम से पाकिस्तान को घुटने टेकने के लिए मजबूर किया वहीं देश के हर स्थान पर तिरंगा यात्राओं के माध्यम से देशभक्ति का वातावरण बना। ऑपरेशन में पूरा भारत खुशियों में ऐसा मग्न रहा जैसे जवानों के साथ वे खुद भी ऑपरेशन सिंदूर का हिस्सा बने हों। चारों ओर से एकजुट होकर जश्न मनाने की खबरें आ रही हैं, तो जान लें ये एकता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है, जो हमें हर मुश्किल में जीत दिलाती है। कई जगह तो उस दौरान जन्मे बच्चों का नाम सिंदूर रखा। देश के 140 करोड़ जनता का संकल्प है कि आतंकवाद पूरी दुनिया से समाप्त होगा और इसकी शुरुआत हो गई है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश में वोकल फॉर लोकल अभियान शुरू की उसे आज हर भारतवासी ने अपनाया है। ऑपरेशन सिंदूर में भी मेक इन इंडिया और मेड इन इंडिया ने अपना लोहा मनवाया है। प्रधानमंत्री जी ने घूमने और शादी के लिए भारत के डेस्टिनेशन चुनने को लेकर बात की है। अब लोग अगर छुट्टियों में कहीं घूमने जाना चाहते हैं तो विदेशों में नहीं भारत के अपने डेस्टिनेशन में जाना चाहते हैं। खजुराहो में पहले से विदेशी पर्यटक आते थे भारत के लोग नहीं आते थे, लेकिन अब स्थानीय टूरिस्ट बड़े पैमाने पर आ रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने ड्रोन दीदी और लखपति दीदी का जिक्र कर कहा कि हमारी बहनों का आजीविका और रोजगार का बड़ा माध्यम बन गया है। उन्हे ड्रोन ऑपरेटर नहीं स्काई वारियर्स का नाम दिया गया है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को दुनिया ने स्वीकारा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और आगामी आने वाले समय में खेलो इंडिया के माध्यम से हमारे बच्चे कैसे आगे बढ़ रहे हैं इसका उल्लेख किया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत दुनिया में चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है। यह 140 करोड़ देशवासियों के लिए गर्व की बात है। अर्थव्यवस्था के मामले में भारत का डंका अब फिर से पूरी दुनिया में बजा है। भारत को एक बड़ी सफलता मिली है। भारत ने जापान को पीछे छोड़ दिया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जो सकंल्प लेते हैं उसे पूरा करते हैं। आगामी समय में हम दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बनेंगे यह हमारा टारगेट है। प्रधानमंत्री मोदी की इच्छा शक्ति हमारी सेनाओं के पराक्रम से ऑपरेशन सिंदूर के बाद आतंकवादियों को नेस्तानाबूद करते हैं और पाकिस्तान को घुटने टेकने के लिए मजबूर किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में देश की आर्थिक स्थिति निरंतर मजबूत बनी है। ▪

के लिए tournament बहुत मायने रखता है। इस तरह के आयोजन भारतीय खेलों के भविष्य को और सँवारने वाले हैं।

20 मई को 'World Bee Day' मनाया गया, यानि एक ऐसा दिन जो हमें याद दिलाता है कि शहद सिर्फ मिठास नहीं, बल्कि सेहत, स्वरोजगार, और आत्मनिर्भरता की मिसाल भी है। पिछले 11 वर्षों में, मधुमक्खी पालन में, भारत में एक sweet revolution हुआ है। आज से 10-11 साल पहले भारत में शहद उत्पादन एक साल में करीब 70-75 हजार मीट्रिक टन होता था। आज यह बढ़कर करीब-करीब सवा-लाख मीट्रिक टन के आसपास हो गया है। यानि शहद उत्पादन में करीब 60 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। हम Honey Production और export में दुनिया के अग्रणी देशों में आ चुके हैं।

इस positive impact में 'राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन' और 'शहद मिशन' की बड़ी भूमिका है। इसके तहत मधुमक्खी पालन से जुड़े हजारों किसानों को Training दी गई, उपकरण दिए गए, और बाजार तक, उनकी, सीधी पहुँच बनाई गई।

ये बदलाव सिर्फ आंकड़ों में नहीं दिखता, ये गाँव की जमीन पर भी साफ नजर आता है। छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले का एक उदाहरण है, यहाँ आदिवासी किसानों ने सोन हनी नाम से एक शुद्ध जैविक शहद brand बनाया है। आज वह शहद GeM समेत अनेक Online Portal पर बिक रहा है, यानि गाँव की मेहनत, अब, Global हो रही है।

इसी तरह उत्तर प्रदेश, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, पश्चिम बंगाल और अरुणाचल प्रदेश में हजारों महिलाएं और युवा अब honey उद्यमी बन चुके हैं। अब शहद की केवल मात्रा नहीं, उसकी शुद्धता पर भी काम हो रहा है। कुछ Start-up अब AI और Digital Technology से शहद की गुणवत्ता को प्रमाणित कर रहे हैं। आप अगली बार जब भी शहद खरीदें तो इन Honey उद्यमियों द्वारा बनाए गए शहद को जरूर आजमाएं, कोशिश करें कि किसी local किसान से, किसी महिला उद्यमी से भी शहद खरीदें। क्योंकि उस हर बूंद में स्वाद ही नहीं, भारत की मेहनत और उम्मीदें घुली होती हैं। शहद की ये मिठास -आत्मनिर्भर भारत का स्वाद है।

जब हम शहद से जुड़े देशों के प्रयासों की बात कर रहे हैं, तो मैं आपको एक और पहल के बारे में बताना चाहता हूँ। ये हमें याद दिलाती है कि Honeybees की सुरक्षा सिर्फ पर्यावरण की नहीं, हमारी खेती और future generation की भी जिम्मेदारी है। ये उदाहरण है पुणे शहर का, जहाँ एक Housing society में मधुमक्खियों का एक छत्ता हटाया गया-शायद सुरक्षा के कारण या डर की वजह से। लेकिन इस घटना ने किसी को कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया। अमित नाम के एक युवा ने तय किया कि bees को हटाना नहीं, उन्हें बचाना चाहिए। उन्होंने खुद सीखा, मधुमक्खियों पर search की और दूसरों को भी जोड़ना शुरू किया। धीरे-धीरे उन्होंने एक टीम बनाई, जिसे उन्होंने नाम दिया Bee Friends, यानि 'बी-मित्र'। अब ये Bee Friends, मधुमक्खियों के छत्तों को एक जगह से दूसरी जगह सुरक्षित तरीके से transfer करते हैं, ताकि लोगों को खतरा न हो और Honey bees भी जिंदा रहें। अमित जी के इस प्रयास का असर भी बड़ा शानदार हुआ है। Honey bees की colonies बच रही हैं। Honey production बढ़ रहा है, और सबसे जरूरी है, लोगों में awareness भी बढ़ रही है। ये पहल हमें सिखाती है कि जब हम प्रकृति के साथ ताल-मेल में काम करते हैं, तो उसका फायदा सबको मिलता है। ▪

'मन की बात' देश के जन-जन की बात - अजय जामवाल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की मन की बात कार्यक्रम देश के जन-जन की बात हो गई है। यह कार्यक्रम अब सामाजिक आंदोलन और जनक्रांति बन गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के रूप में देश के पास एक सशक्त नेतृत्व है। प्रधानमंत्री जी अपने कार्यक्रम में राजनीति से ऊपर उठकर सामाजिक विषयों पर चर्चा करते हैं। प्रधानमंत्री जी मन की बात के माध्यम से देश को जागृत करने का कार्य कर रहे हैं। सभी कार्यकर्ता अपने-अपने गांव और मोहल्ले में मन की बात को देखें और जनता को दिखाएं। ▪

'मन की बात' आम आदमी को प्रेरणा देता है - हितानंद जी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मन की बात कार्यक्रम में ऑपरेशन सिंदूर में सेना के पराक्रम, बड़े बर्फीले पहाड़ों पर आईटीबीपी के जवानों का सफाई अभियान, मधु मक्खियों का संरक्षण और कागज के रिसाइकल जैसे विषयों पर बात की है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की मन की बात कार्यक्रम आम आदमी के जीवन को प्रेरणा देता है। प्रधानमंत्री जी के मन की बात कार्यक्रम से लोगों को जीवन जीने का नजरिया, समाज और पर्यावरण के संरक्षण के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। ▪

भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव-गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा, पर व्यक्तिगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली।
अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम 1857 में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

रानी लक्ष्मीबाई

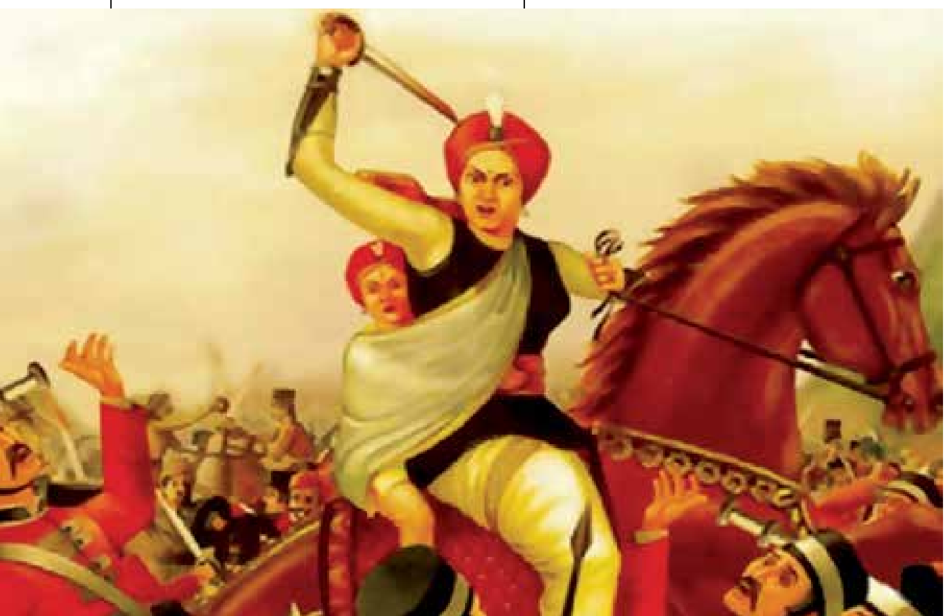

रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की वीरांगना थीं जिन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में ब्रिटिश साम्राज्य की सेना से संग्राम किया और रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त की किन्तु जीते जी अंग्रेजों को अपनी झाँसी पर कब्जा नहीं करने दिया। भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव-गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा, पर व्यक्तिगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली। अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम 1857 में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

19 नवम्बर, 1835 को वाराणसी में जन्मी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मनु था। प्यार से लोग उसे मणिकर्णिका तथा छबीली भी कहते थे। इनके पिता श्री मोरोपन्त ताँबे तथा माँ श्रीमती भागीरथी बाई थीं। गुड़ियों से खेलने की अवस्था से ही उसे घुड़सवारी, तीरन्दाजी, तलवार चलाना, युद्ध करना जैसे पुरुषोचित कामों में बहुत आनन्द आता था। नाना साहब पेशवा उसके बचपन के साथियों में थे। उन दिनों बाल विवाह का प्रचलन था। अतः सात वर्ष की अवस्था में ही मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव से हो गया। विवाह के बाद वह लक्ष्मीबाई कहलायीं। उनका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा।

जब वह 18 वर्ष की ही थीं, तब राजा का देहान्त हो गया। दुःख की बात यह भी थी कि वे तब तक निःसन्तान थे। युवावस्था के सुख देखने से पूर्व ही रानी विधवा हो गयीं। उन दिनों अंग्रेज शासक ऐसी बिना वारिस की जागीरों तथा राज्यों को अपने कब्जे में कर लेते थे। इसी भय से राजा ने मृत्यु से पूर्व ब्रिटिश शासन तथा अपने राज्य के प्रमुख लोगों के सम्मुख दामोदर राव को दत्तक पुत्र स्वीकार कर लिया था, पर उनके परलोक सिधारते ही अंग्रेजों की लार टपकने लगी। उन्होंने दामोदर राव को मान्यता देने से मनाकर झाँसी राज्य को ब्रिटिश शासन में मिलाने की घोषणा कर दी। यह सुनते ही लक्ष्मीबाई सिंहनी के समान गरज उठी। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।

अंग्रेजों ने रानी के ही एक सरदार सदाशिव को आगे कर विद्रोह करा दिया। उसने झाँसी से 50 कि.मी. दूर स्थित करोरा किले पर अधिकार कर लिया, पर रानी ने उसे परास्त कर दिया। इसी बीच ओरछा का दीवान नत्थे खाँ झाँसी पर चढ़ आया।

उसके पास साठ हजार सेना थी, पर रानी ने अपने शौर्य व पराक्रम से उसे भी दिन में तारे दिखा दिये। इधर देश में जगह-जगह सेना में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गये। झाँसी में सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों ने भी चुन-चुन कर अंग्रेज अधिकारियों को मारना शुरू कर दिया। रानी ने अब राज्य की बागडोर पूरी तरह अपने हाथ में ले ली, पर अंग्रेज उधर नयी गोटियाँ बैठा रहे थे।

जनरल ह्यू रोज ने एक बड़ी सेना लेकर झाँसी पर हमला कर दिया. रानी दामोदर राव को पीठ पर बाँधकर 22 मार्च, 1858 को युद्धक्षेत्र में उतर गयी। आठ दिन तक युद्ध चलता रहा, पर अंग्रेज आगे नहीं बढ़ सके।

नौवें दिन अपने बीस हजार सैनिकों के साथ तात्यां टोपे रानी की सहायता को आ गये, पर अंग्रेजों ने भी नयी कुमुक मँगा ली। रानी पीछे हटकर कालपी जा पहुँची। कालपी से वह ग्वालियर आयीं। वहाँ 17 जून, 1858 को ब्रिगेडियर स्मिथ के साथ हुए युद्ध में उन्होंने वीरगति पायी।

रानी के विश्वासपात्र बाबा गंगादास ने उनका शव अपनी झोंपड़ी में रखकर आग लगा दी। रानी केवल 22 वर्ष और सात महीने ही जीवित रहीं. पर ''खूब लड़ी मरदानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी.....'' गाकर उन्हें सदा याद किया जाता है। ▪

रानी दुर्गावती

रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अत:रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं।

रानी दुर्गावती भारत की एक वीरांगना थीं जिन्होंने अपने विवाह के चार वर्ष बाद अपने पति दलपत शाह की असमय मृत्यु के बाद अपने पुत्र वीरनारायण को सिंहासन पर बैठाकर उसके संरक्षक के रूप में स्वयं शासन करना प्रारंभ किया। इनके शासन में राज्य की बहुत उन्नति हुई। दुर्गावती को तीर तथा बंदूक चलाने का अच्छा अभ्यास था। चीते के शिकार में इनकी विशेष रुचि थी। उनके राज्य का नाम गढ़मंडला था जिसका केन्द्र जबलपुर था। वे प्रयागराज के मुगल शासक आसफ खान से लोहा लेने के लिये प्रसिद्ध हैं।

महारानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। बांदा जिले के कालिंजर किले में 1524 ईसवी की दुर्गाष्टमी पर जन्म के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। नाम के अनुरूप ही तेज, साहस, शौर्य और सुन्दरता के कारण इनकी प्रसिद्धि सब ओर फैल गयी। दुर्गावती के मायके और ससुराल पक्ष की जाति भिन्न थी लेकिन फिर भी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर गोण्डवाना साम्राज्य के राजा संग्राम शाह मडावी ने अपने पुत्र दलपत शाह मडावी से विवाह करके, उसे अपनी पुत्रवधू बनाया था।

दुर्भाग्यवश विवाह के चार वर्ष बाद ही राजा दलपतशाह का निधन हो गया। उस समय दुर्गावती की गोद में तीन वर्षीय नारायण ही था। अतः रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन संभाल लिया। उन्होंने अनेक मठ, कुएं, बावड़ी तथा धर्मशालाएं बनवाईं। वर्तमान जबलपुर उनके राज्य का केन्द्र था। उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, अपने नाम पर रानीताल तथा अपने विश्वस्त दीवान आधारसिंह के नाम पर आधारताल बनवाया।

रानी दुर्गावती के इस सुखी और संपन्न राज्य पर मालवा के मुसलमान शासक बाजबहादुर ने कई बार हमला किया, पर हर बार वह पराजित हुआ। मुगल शासक अकबर भी राज्य को जीतकर रानी को अपने हरम में डालना चाहता था। उसने विवाद प्रारम्भ करने हेतु रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधारसिंह को भेंट के रूप में अपने पास भेजने को कहा। रानी ने यह मांग ठुकरा दी।

इस पर अकबर ने अपने एक रिश्तेदार आसफ खां के नेतृत्व में गोण्डवाना साम्राज्य पर हमला कर दिया। एक बार तो आसफ खां पराजित हुआ, पर अगली बार उसने दुगनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। दुर्गावती के पास उस समय बहुत कम सैनिक थे। उन्होंने जबलपुर के पास नरई नाले के किनारे मोर्चा लगाया तथा स्वयं पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया। इस युद्ध में 3,000 मुगल सैनिक मारे गये लेकिन रानी की भी अपार क्षति हुई थी।

अगले दिन 24 जून 1564 को मुगल सेना ने फिर हमला बोला। आज रानी का पक्ष दुर्बल था, अतः रानी ने अपने पुत्र नारायण को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। तभी एक तीर उनकी भुजा में लगा, रानी ने उसे निकाल फेंका। दूसरे तीर ने उनकी आंख को भेद दिया, रानी ने इसे भी निकाला पर उसकी नोक आंख में ही रह गयी। तभी तीसरा तीर उनकी गर्दन में आकर धंस गया। रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अतः रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं। महारानी दुर्गावती ने अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था। जबलपुर के पास जहां यह ऐतिहासिक युद्ध हुआ था, उस स्थान का नाम बरेला है, जो मंडला रोड पर स्थित है, वहीं रानी की समाधि बनी है, जहां गोण्ड जनजाति के लोग जाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। जबलपुर मे स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय भी इन्ही रानी के नाम पर बनी हुई है। ▪

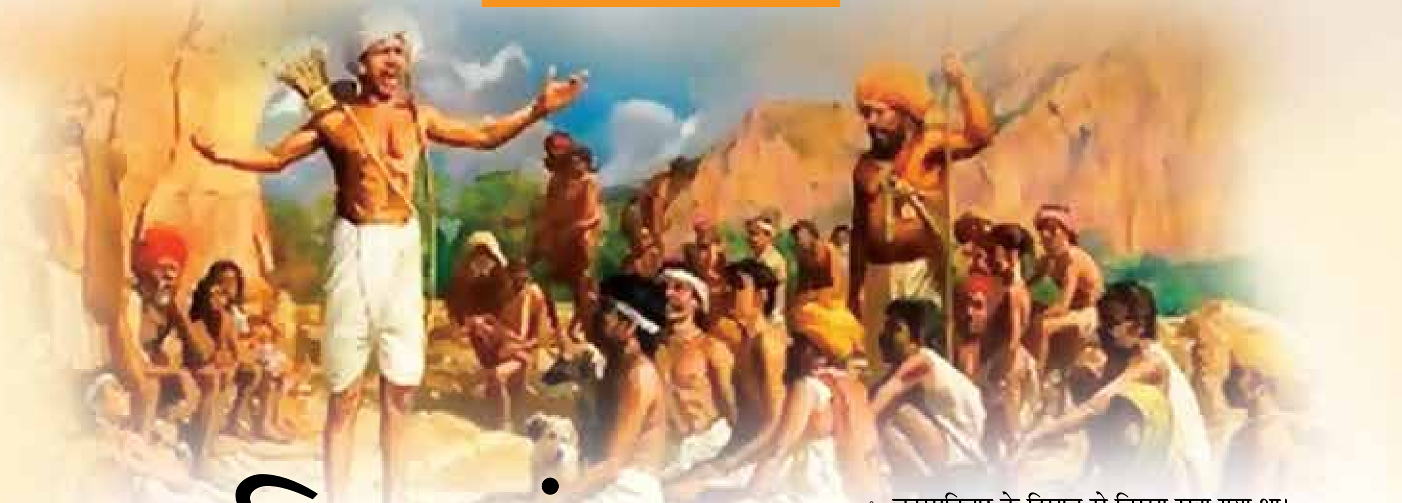

बिरसा मुंडा
वनवासियों के महानायक

बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा को मुंडा समाज के लोग भगवान के रूप में पूजते हैं।

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारिभक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया। 1894 में मानसून के छोटा नागपुर में असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की।

1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजो से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके के लोग 'धरती बाबा' के नाम से पुकारते थे। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी।

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं। जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत सारी औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये।

बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा भी है।

बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे जिनकी ख्याति अंग्रेजो के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में काफी हुयी थी।

मुंडा रीती रिवाज के अनुसार उनका नाम बृहस्पतिवार के हिसाब से बिरसा रखा गया था। बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हटू था। उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरुमदा आकर बस गया जहां वो खेतों में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बबा चला गया।

उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौहत्या का विरोध करने की लोगो को सलाह दी। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया 'रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो।' उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाकों में याद किया जाता है। अंग्रेजों ने आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किये जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया था।

बिरसा मुंडा ने सन् 1900 में अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह करने की घोषणा करते हुए कहा 'हम ब्रिटिश शासन तन्त्र के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते है और कभी अंग्रेज नियमों का पालन नही करेंगे, ओ गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजों, तुम्हारा हमारे देश में क्या काम? छोटा नागपुर सदियों से हमारा है और तुम इसे हमसे छीन नहीं सकते हैं इसलिए बेहतर है कि वापस अपने देश लौट जाओ वरना लाशों के ढेर लगा दिए जायेंगे।' इस घोषणा को एक घोषणा पत्र में अंग्रेजो के पास भेजा गया तो अंग्रेजो ने अपनी सेना बिरसा को पकड़ने के लिए रवाना कर दी। अंग्रेज सरकार ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रूपये का इनाम रखा था। बिरसा भी तीर कमान और भालों के साथ युद्ध की तैयारियों में लग गये। ▪

समाज और विचारधारा

पं. दीनदयाल उपाध्याय

देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी?

किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया।

अंग्रेजों के शासनकाल में देश में जितने भी आन्दोलन चले और देश की जितनी भी राजनीति थी, उन सबका एक ही लक्ष्य था कि अंग्रेजों को हटाकर हम स्वराज्य प्राप्त करें। स्वराज्य के बाद हमारा रूप क्या होगा? हम किस दिशा में आगे बढ़ेंगे? इसका बहुत कुछ विचार नहीं हुआ था। बहुत कुछ शब्द का मैंने प्रयोग इसलिए किया है कि बिलकुल विचार नहीं हुआ था यह कहना ठीक न होगा। ऐसे लोग थे कि जिन्होंने उस समय भी बहुत-सी बातों पर विचार किया था। स्वयं गांधी जी ने हिन्द स्वराज्य लिखकर उसमें स्वराज्य आने के बाद भारत का चित्र क्या होगा, इस पर अपने विचार रखे थे। उसके पहले लोकमान्य तिलक ने भी गीता रहस्य लिखकर संपूर्ण आंदोलन के पीछे की तात्विक भूमिका क्या होगी, इसका विवेचन किया था। साथ ही उस समय दुनिया में जो भिन्न-भिन्न विचारसरणियां चल रही थी, उनकी भी तुलनात्मक दृष्टि से आलोचना की थी।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे राजनैतिक दलों ने जो प्रस्ताव स्वीकार किये, उनमें भी ये विचार आये थे। किन्तु उन सबका जितना गंभीर अध्ययन होना चाहिए था, उतना उस समय तक नहीं हुआ था। क्योंकि सबके सामने प्रमुख प्रश्न यही था कि पहले अंग्रेजों को निकालें फिर अपने घर का निर्माण कैसे करेंगे, इसका विचार कर लेंगे। इसलिए यदि विचारों के मतभेद भी कहीं थे तो लोगों ने उनको दबा करके रखा था। यहाँ तक कि समाजवाद के आधार पर आगे का भारत बनना चाहिए, इस तरह का विचार करने वाले जो लोग थे, वे कांग्रेस के अन्दर ही एक सोशलिस्ट पार्टी बनाकर काम करते रहे। उसके बाहर निकलकर उन्होंने अलग से कार्य करने का प्रयत्न नहीं किया। क्रान्तिकारी भी अपने-अपने विचारों के अनुसार स्वराज्य के लिए काम करते थे। इसी प्रकार और भी लोग थे। किन्तु प्रमुखता इसी बात की रही कि पहले देश को आजाद कर लिया जाए।

अतः देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी? किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया और आज भी जब इतने वर्ष देश को स्वतन्त्र हुए हो गए हम यह नहीं कह सकते कि कोई दिशा निश्चित हो गयी है।

भारत किधर जाने वाला है?

समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे दल के लोगों ने कल्याणकारी राज्य, समाजवाद, उदारमतवाद, आदि का ध्येय अवश्य घोषित किया है। विविध नारे लगाये गये हैं। परन्तु ये जितने नारे लगाने वाले लोग हैं, उनके सामने उन सब विचार धाराओं का नारे से अधिक कोई महत्व नहीं रहता। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि इसका मुझे अनुभव है। एक बार एक सज्जन से बातचीत हो रही थी। वह कह रहे थे कि कांग्रेस के विरूद्ध मिल-जुलकर अपने को एक मोर्चा बनाना चाहिए ताकि अच्छी तरह से लड़ सकें। राजनीतिक दृष्टि से समय-समय पर इस प्रकार की नीतियाँ लेकर दल चलते है और इसलिए उनके इस प्रस्ताव में तो कोई अनुचित बात नहीं थी। परन्तु बात करते-करते मैंने सहज में पूछ लिया कि हम लोग मोर्चा तो शायद बना लेंगे परन्तु कुछ थोड़ा बहुत कार्यक्रम लेकर चलें? कौन सा आर्थिक कार्यक्रम लेकर

चलें? कौन सा राजनैतिक कार्यक्रम लेकर चलें? इन प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए।

इस पर उन्होंने सहज भाव से कह दिया कि इसकी कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, आपको जो पसन्द हो स्वीकार कर लीजिए। हम तो घोर साम्यवादी कार्यक्रम से लेकर बिल्कुल पूंजीवादी कार्यक्रम तक जो आप चाहें उसमें समर्थन कर देंगे। उनको किसी भी कार्यक्रम में कोई आपत्ति नहीं थी। उद्देश्य केवल इतना ही था कि किसी न किसी तरीके से कांग्रेस को हरा देना चाहिए। आज भी बहुत बार लोग कहते हैं कि कम्युनिस्टों तथा बाकी सब लोगों से मिलकर भी कांग्रेस को हरा दिया जाए।

साँप-नेवला एक साथ

केरल में अभी-अभी चुनाव हुए हैं। उसमें कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीग, स्वतंत्र पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, विद्रोही कांग्रेस जो केरल कांग्रेस के नाम से आई, क्रान्तिकारी सोशलिस्ट पार्टी आदि जितनी भी पार्टियां हैं, इनमें आपस में भिन्न-भिन्न प्रकार से गठबंधन हुए। इन गठबन्धनों के कारण यह पता नहीं लग सकता था कि इनके कोई राजनीतिक सिद्धान्त, विचार अथवा आदर्श भी हैं या नहीं। विचारों की दृष्टि से यह स्थिति है। कांग्रेस में भी यही बात दिखाई दे रही है। यद्यपि कांग्रेस ने प्रजातन्त्रीय समाजवाद का सिद्धान्त स्वीकार किया है तथापि कांग्रेस के लोग जो बोलते हैं उनमें यही दिखाई देता है कि वहाँ पर एक निश्चित सिद्धान्त निश्चित कार्यक्रम नहीं। घोर कम्युनिस्ट विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर विद्यमान हैं और उस कम्युनिज्म का डटकर विरोध करते हुए पूँजीवादी विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर मौजूद हैं। अहिनकुल योग के अनुसार नकुल और साँप के सहअस्तित्व का कोई जादू का पिटारा हो सकता है तो वह आज की कांग्रेस है।

हमें आत्माभिमुख होना पड़ेगा

इस स्थिति में हम आगे बढ़ सकेंगे या नहीं, इसका हमें विचार करना चाहिए। देश में आज की अनेक समस्याओं की कारण मीमांसा करें तो पता चलेगा कि अपने गन्तव्य और उसकी दिशा का अज्ञान बहुतांश में आज की अव्यवस्था के लिए जिम्मदार है। यह तो मैं मानता हूं कि हिन्दुस्थान के सभी 45 करोड़ लोग सब प्रश्नों पर अथवा किसी एक प्रश्न पर भी पूर्णतः एक विचार और एक मत नहीं हो सकते। किसी भी देश में यह संभव नहीं है। फिर भी राष्ट्र की एक सामान्य इच्छा नाम की कोई चीज होती है। उसको आधार बनाकर काम किया जाएं तो सर्वमान्य व्यक्ति को लगता है कि मेरे मन के मुताबिक काम हो रहा है। उसमें से विचारों की अधिकतम एकता भी पैदा होती हैं। अक्टूबर-नवम्बर 1962 में कम्युनिस्ट चीन के आक्रमण के समय जनता की अवस्था इस तथ्य का अच्छा उदाहरण है। इस समय देश में एक उत्साह की लहर पैदा हो गई थी। कर्म तथा त्याग दोनों की शक्ति जाग्रत हो गई थी। जनता और सरकार के बीच भिन्न-भिन्न दलों के बीच तथा नेता और जनता के बीच कोई खाई नहीं दिखाई देती थी। यह सब कैसे हुआ? सरकार ने वह नीति अपनाई जो जनता के मन के अनुसार तथा पुरूषार्थ का आह्वान करने वाली थी। फलतः हम एक होकर खड़े हो गए।

समस्याओं का कारण स्व के प्रति दुर्लक्ष्य

आवश्यकता है कि अपने स्व का विचार किया जाए। बिना उसके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं। स्वतंत्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती। जब तक हमें अपनी असलियत का पता नहीं तब तक हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं हो सकता और न उसका विकास ही संभव है। परतन्त्रता में समाज का स्व दब जाता है। इसीलिए राष्ट्र स्वराज्य की कामना करते हैं जिससे वे अपनी प्रकृति और गुणधर्म के अनुसार प्रयत्न करते हुए सुख की अनुभूति कर सकें। प्रकृति बलवती होती है। उसके प्रतिकूल काम करने से अथवा उसकी ओर दुर्लक्ष्य करने से कष्ट होते हैं। प्रकृति का उन्नयन कर उसे संस्कृति बनाया जा सकता है, पर उसकी अवहेलना नहीं कर सकती। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि किसी प्रकार मानव प्रकृति एवं भावों की अवहेलना से व्यक्ति के जीवन में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति प्रायः उदासीन एवं अनमना रहता है। उसकी कर्मशक्ति क्षीण हो जाती है अथवा विकृत होकर विपथ गामिनी बन जाती है। व्यक्ति के समान राष्ट्र भी प्रकृति के प्रतिकूल चलने पर अनेक व्यथाओं का शिकार बनता है। आज भारत की अनेक समस्याओं का यही कारण है।

राजनीति में अवसरवादिता

राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले तथा राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले अधिकांश व्यक्ति इस प्रश्न की ओर उदासीन है। फलतः भारत की राजनीति, अवसरवादी एवं सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का अखाड़ा बन गई है। राजनीतिज्ञों तथा राजनीतिक दलों के न कोई सिद्धान्त एवं आदर्श है और न कोई आचार संहिता। एक दल छोड़कर दूसरी दल में जाने में व्यक्ति को कोई संकोच नहीं होता। दलों के विघटन अथवा विभिन्न दलों की युक्ति भी होती है तो वह किसी तात्विक मतभेद अथवा समानता के आधार पर नहीं अपितु उसके मूल में चुनाव और पद ही प्रमुख रूप से रहते हैं। 1937 में जब हाफिज मुहम्मद इब्राहिम मुस्लिम लीग के टिकट पर चुने जाने के बाद कांग्रेस में सम्मिलित हुए तो उन्होंने स्वस्थ राजनीतिक परंपरा के अनुसार विधानसभा से त्याग पत्र देकर पुनः कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा और जीतकर आए। 1948 में जब कांग्रेस से अलग हटकर सोशलिस्ट पार्टी का निर्माण हुआ तब सभी सोशलिस्टों ने, जो विधानमण्डलों के सदस्य थे, त्यागपत्र देकर अपने-अपने क्षेत्र से पुनः चुनाव लड़े। किन्तु उसके बाद किसी ने इस परंपरा का निर्वाह नहीं किया। अब राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण स्वैच्छाचार है। इसी का परिणाम है कि आज भी सभी के विषय में जनता के मन में समान रूप से अनास्था है। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं कि जिसकी आचरणहीनता के विषय में कुछ कहा जाए तो जनता विश्वास न करे। इस स्थिति को बदलना होगा। बिना उसके समाज में व्यवस्था और एकता स्थापित नहीं की जा सकती।

हम किस ओर चलें?

हम किस ओर चले? राष्ट्र के सामने यह प्रश्न है। कुछ लोग कहते हैं कि राष्ट्र के परतन्त्र होने के पूर्व एक हजार वर्ष पहले जहाँ हमने राष्ट्र जीवन का सूत्र छोड़ दिया था वहीं से हम उसे आगे बढ़ाएँ। पर राष्ट्र कोई वस्त्र या पुस्तक के समान निर्जीव वस्तु तो है नहीं जिसे बुनते या पढ़ते समय जहाँ एक बार छोड़ दिया, वहाँ से फिर किसी विशेष अतिथि के बाद उसे आगे बढ़ाया जा सके। फिर यह कहना भी युक्ति संगत नहीं होगा कि परतन्त्रता के साथ एक हजार वर्ष पूर्व हमारे जीवन का सूत्र एकदम टूट गया है तथा तब से अब तक हम पूर्णतया निष्क्रिय अथवा गतिहीन रहे हैं। बदली हुई परिस्थितियों में अपने जीवन को बनाये रखने तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने में अपने जीवन को अभिव्यक्त किया। हमारे जीवन का प्रवाह अवरूद्ध नहीं अपितु आगे बढ़ता गया। गंगा की धारा को लौटाने का प्रयत्न बुद्धिमानी नहीं होगी। बनारस की गंगा हरिद्वार के समान शीतल एवं स्वच्छ चाहे न हो, परन्तु उतनी ही पवित्र एवं मुक्ति-दायिनी है। उसमें मिलने वाले जिन नदी-नालों को उसने आत्मसात कर लिया है उनकी कलुषा तथा गन्दगी की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। वे गंगा में मिलकर गंगा ही बन गये हैं। अब तो गंगा के प्रवाह को आगे ही बढ़ाना होगा।

यदि संपूर्ण स्थिति इतनी ही होती तब तो कोई कठिनाई नहीं थी। विश्व में हम अकेले ही तो नहीं है। दूसरे राष्ट्र भी है। उन्होंने पिछले एक हजार वर्ष में अभूतपूर्व उन्नति की है। हमारा संपूर्ण ध्यान तो अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने तथा अपनी रक्षा के प्रयत्नों में ही लगा रहा है। विश्व की इस प्रगति में

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही।

हम सहभागी नहीं हो सके। अब जब हम स्वतंत्र हो गये हैं तो क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं हो जाता कि हम अपनी इस कमी को शीघ्राति-शीघ्र पूरा करके विश्व के इन प्रगट देशों के साथ खड़े हो जाएँ? यहाँ तक तो, मैं समझता हूं, मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है।

स्वदेशी की भावना सर्वव्यापी हो

समस्या तब पैदा होती है, जब हम पश्चिम की प्रगति के कारणों तथा परिणामों अथवा वास्तविकता एवं भासवान के संबंध में ठीक-ठीक निर्णय नहीं कर पाते। यह कठिनाई तब तक बढ़ जाती है जब हम यह देखते हैं कि इन प्रगत देशों में से ही एक ने हमारे ऊपर डेढ़ सौ वर्षों तक राज्य किया तथा अपने राज्यकाल में उसने ऐसे अनेक उपाय किये जिससे हमारे अन्दर अपने संबंध में तिरस्कार तथा उनके विषय में आदर का भाव पैदा हो जाए। पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान के साथ ही पश्चिमी देशों रहन-सहन, बोल चाल, खान-पान आदि के तरीके भी इस देश में आये। भौतिक विज्ञान ही नहीं अपितु, नीतिशास्त्र, राज्यव्यवस्था, अर्थनीति तथा समाज धारणा के क्षेत्र में भी इन देशों के मानदण्ड हमारे मानक बने गये। आज भारत के शिक्षित वर्ग के जीवन मूल्यों पर पश्चिम का यह प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। हमें निर्णय करना पड़ेगा कि यह प्रभाव अच्छा है या बुरा। जब तक अंग्रेज थे तब तक तो हम स्वदेशी की भावना से अंग्रेजियत को दूर रखने में ही गौरव समझते थे, किन्तु अब जब अंग्रेज चला गया है तब अंग्रेजियत पश्चिम की प्रगति का द्योतक एवं माध्यम बनकर अनुकरण की वस्तु बन गयी है। यदि सत्य है तो संकुचित के भाव को आड़े लाकर राष्ट्र की प्रगति में बाधा डालना ठीक नहीं होगा। किन्तु इसके विपरीत पाश्चात्य जीवन मूल्यों और विज्ञान की प्रगति को यदि अलग किया जा सकता है तो अंग्रेजियत के मोह का परित्याग करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। पर कुछ लोग ऐसे भी है जो पाश्चात्य राजनीति एवं अर्थनीति की दिशा को ही प्रगति की दिशा समझते हैं और इसलिए भारत पर वहाँ की स्थिति का प्रक्षेपण करना चाहते हैं। अतः भारत की भावी दिशा का निर्णय करने से पूर्व यह उचित होगा कि हम पश्चिम की राजनीति के वैचारिक अधिष्ठान तथा उनकी वर्तमान पहेली का विचार कर लें।

यूरोप में राष्ट्रों का उदय

जिन विचारधाराओं ने यूरोपीय राजनीति एवं जीवन को विशेषतः प्रभावित किया है उनमें राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र तथा समाजवाद की प्रमुख रूप से गणना की जा सकती है। इसके साथ ही विश्व एकता तथा शांति का स्वप्न देखने वाले भी वहाँ हुए है और उस दिशा में भी कुछ प्रयत्न किये जा रहे हैं। इन विचारों में राष्ट्रवाद सबसे पुराना तथा बलशाली है। रोम के साम्राज्य के पतन के बाद तथा रोमन कैथोलिक चर्च के प्रति विद्रोह अथवा उसके प्रभाव के कमी के कारण यूरोप में राष्ट्रों का उदय हुआ। यूरोप का पिछला एक हजार वर्ष का इतिहास इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष का इतिहास है। इन राष्ट्रों ने यूरोप महाद्वीप से बाहर जाकर अपने उपनिवेश बनाये तथा दूसरे स्वतंत्र देशों को गुलाम बनाया। राष्ट्रवाद के उदय के कारण राष्ट्र और राज्य की एकता की प्रवृत्ति भी बढ़ी तथा राष्ट्रीय राज्य का यूरोप में उदय हुआ। साथ ही रोमन कैथोलिक चर्च के केन्द्रीय भाव में कमी होकर या तो राष्ट्रीय चर्च का निर्माण हुआ या मजहब का। मजहबी गुरुओं का राजनीति में कोई विशेष स्थान नहीं रहा। सेक्युलर स्टेट की कल्पना का इस प्रकार जन्म हुआ।

यूरोप में प्रजातंत्र का जन्म

दूसरी क्रांतिकारी कल्पना प्रजातंत्र की है जिसका यूरोप की राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ है। प्रारंभ में तो जितने राष्ट्र बने उनमें राजा ही शासनकर्ता रहा, किन्तु राजा की निरंकुशता के विरूद्ध जनता में भी धीरे-धीरे जागरण हुआ। औद्योगिक क्रांति के कारण तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणाम स्वरूप सभी देशों में एक वैश्य वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। स्वभावतः इनका पुराने सामन्तों तथा राजाओं से संघर्ष आया। इस संघर्ष ने प्रजातंत्र की तात्विक भूमिका ग्रहण की। यूनान के नगर गणराज्यों से इस विचार का उद्गम ढूंढा गया। प्रत्येक नागरिक की समानता, बन्धुता और स्वतंत्रता के आदर्श के सहारे जनसाधारण को इस तत्व के प्रति आकृष्ट किया गया। फ्रांस में बड़ी भारी राज्यक्रांति हुई। इंग्लैण्ड में भी समय-समय पर आन्दोलन हुए। प्रजातंत्र की जनपथ पर पकड़ हुई। राजवंश या तो समाप्त कर दिये गये अथवा उनके अधिकार मर्यादित कर वैधानिक राज्यपद्धति की नींव डाली गई। आज प्रजातंत्र यूरोप की मान्य पद्धति है। जिन्होंने प्रजातंत्र की अवहेलना की वे भी प्रजातंत्र के प्रति निष्ठा व्यक्त करने में कमी नहीं करते। हिटलर, मुसोलिनी तथा स्टालिन जैसे तानशाहों ने भी प्रजातंत्र को अमान्य नहीं किया।

व्यक्ति का शोषण होता रहा

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही। औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप उत्पादन की नई पद्धति पर विश्वास हो गया था। स्वतंत्र रहकर घर में काम करने वाला मजदूर अब कारखानेदार का नौकर बनकर काम करने लगा था। अपना गाँव छोड़कर वह नगरों में आ बसा था। वहां उसके आवास की व्यवस्था बहुत ही अधूरी थी। कारखाने में जिस ढंग से काम होता था, उसके कोई नियम नहीं थे। मजदूर असंगठित एवं दुर्बल था। वह शोषण, अन्याय और उत्पीड़न का शिकार बन गया था। राज्य की शक्ति जिनके हाथों में थी, वे भी उसी वर्ग में से थे, जो उनका शोषण कर रहे थे। अतः राज्य से कोई भी आशा नहीं थी।

इस अन्यायपूर्ण अवस्था के विरूद्ध विद्रोह तथा स्थिति में सुधार की भावना लेकर कई महापुरूष खड़े हुए। उन्होंने अपने आपको समाजवादी कहा। कार्ल मार्क्स भी इन समाजवादियों में से एक है। उसने विद्यमान अन्याय का विरोध करने के प्रयत्न में अर्थव्यवस्था तथा इतिहास का अध्ययन कर एक विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्ल मार्क्स की विवेचना के बाद समाजवाद एक वैज्ञानिक आधार पर खड़ा हो गया। बाद में समाजवादियों ने मार्क्स को माना हो या ना, किन्तु उनके विचारों पर उसकी छाप अवश्य है। ▪

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में लोकमाता देवी अहिल्याबाई की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयंती पर दीप प्रज्ज्वलित किया।

▪ श्री हितानंद जी ने महाराजा छत्रसाल की जयंती पर माल्यार्पण कर नमन किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बेंगलुरु में निवेशकों से संवाद किया।

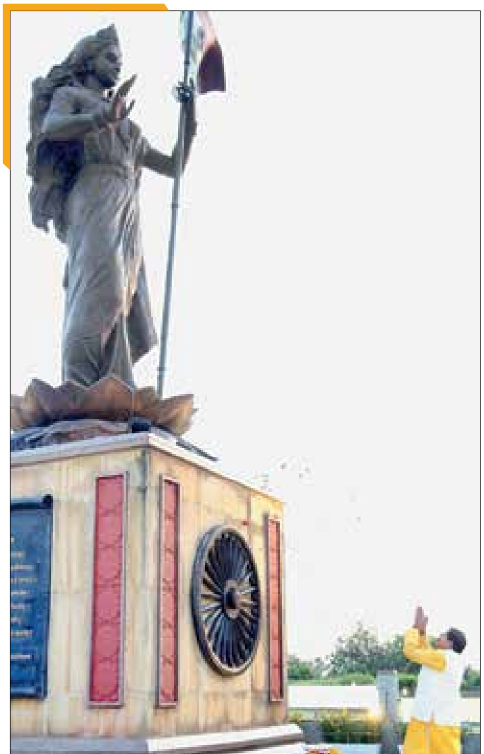

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारत माता की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

▪ श्री हितानंद जी ने देवी अहिल्याबाई की 300वीं जयंती पर महिला जनप्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव व प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने देवी अहिल्या बाई को पुष्पांजलि अर्पित की।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने पन्ना में श्री जुगल किशोर लोक निर्माण का भूमिपूजन किया।

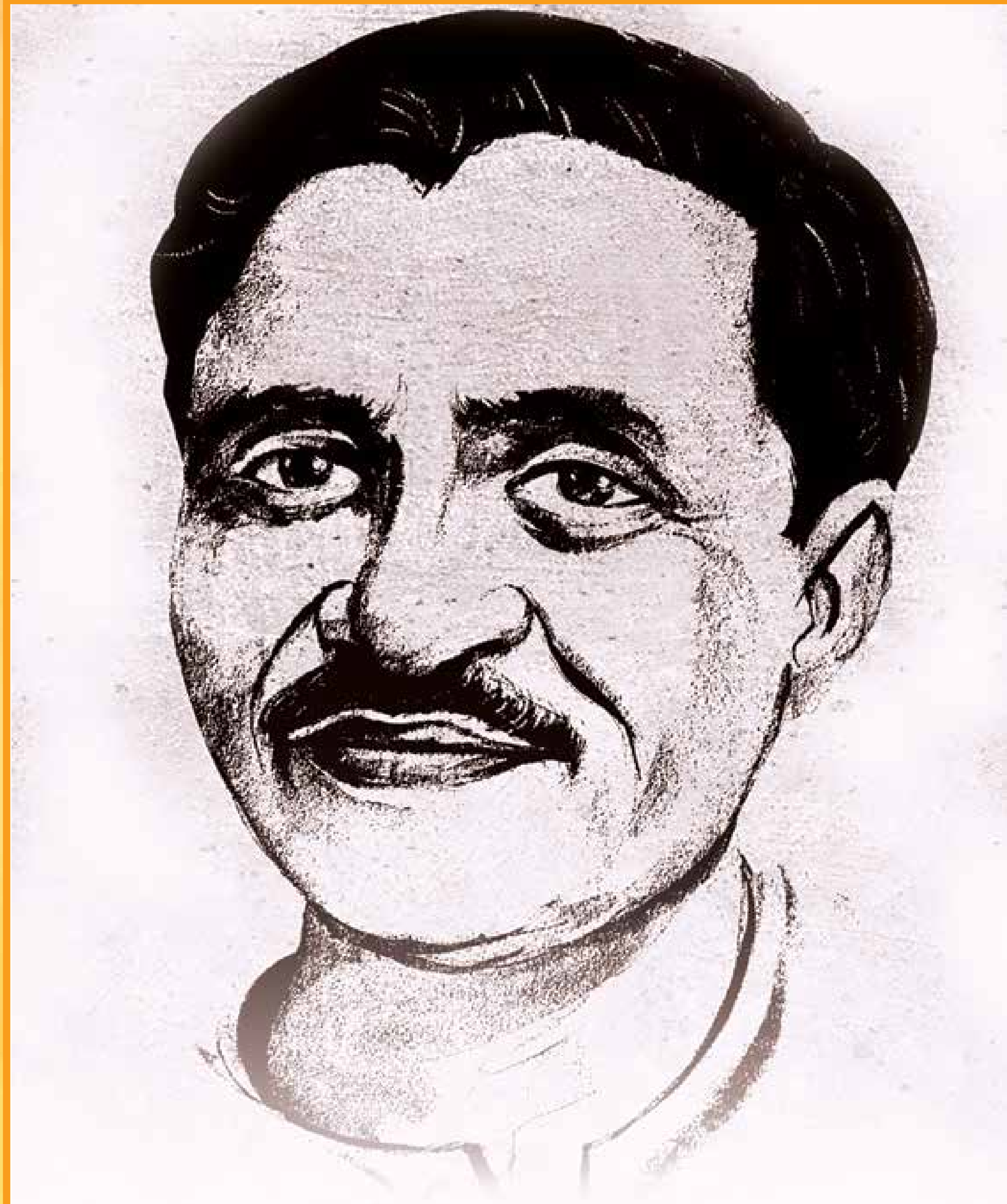

यहां जीवन में विविधता और बहुलता है लेकिन हमने हमेशा इसके पीछे की एकता को खोजने का प्रयास किया है

पं. दीनदयाल उपाध्याय